रिलाल ज़मींदार बरौठा ज़ि० अलीगढ़

अंगरेज़ी पुस्तकों और सफ़रनामों से उल्था औ संग्रह किया

स्याम
जावा
कोरिया
ट्रांसवाल

दुनिया की सैर

CUSTOMS & COSTUMES

इसमें सबदेशों का
वर्णन है कि यहां के मनुष्यों
की जाती-मत-जुबान-कैसे
कैसे हैं-मकान कैसा बनाते और
खाते पहनते कमाते हैं-फिर उनके तरह
तरह के चलन व्योहार जिनको पढ़कर हंसी
आवे देशदेश के निराले कानून इत्यादि

ोबार प्रति १००० सं० १९०१ मूल्य १॥)

भूमिका

बैठकर सैर मुल्ककी करना—यह तमाशा किताब में देखा
मैंने बहुतसी विचित्र पुस्तकें पढ़ीं और उनमें ऐसी आनन्द दायक बातें देखीं कि मेरे मनमें अन्य भाइयोंकोभी उनका सुखास्वादन कराने की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न होगई—निस्सन्देह जिन्होंने अंगरेज़ी भाषा नहीं पढ़ी अथवा अंगरेज़ी पढ़कर भी इस प्रकार की पुस्तकें नहीं पढ़ीं जिनमें संसार की भिन्न २ जातियों की सामाजिक राजनैतिक और धर्म सम्बन्धी रीतिनीति व्यवहार अवस्था और आचार विचार की बातें लिखीहों वह मानों वर्तमान जगत्का कुछभी अनुभव नहीं रखसकते—यह नियम है कि जब कोई विशेषप्रकार की अद्भुतबात का अनुभव होता है तो स्वतः अपने मित्रगणों को भी उसके ज्ञान कराने की उत्कण्ठा होजाती है तदनुसार ही मेरा यह उद्देश्य है।

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसको भ्रमण व पर्यटन करनेका व्यसन नहो—इसका सबसे पहिला साधन धनहै-पश्चात् साहस और अवकाश पुनः प्रत्येक देशकी भाषा का ज्ञान इन सब आवश्यकीय साधनोंके अतिरिक्त किसी एक देशकापूर्ण पर्यटन करने के लिये समस्त जीवनकाल अपेक्षित है-इसप्रकार मानो असम्भव है-कि एक व्यक्ति समस्त संसार की सैर करले यह केवल इसी प्रकार सम्भव है कि अनेक देशाटन करनेवालों में प्रत्येक देशका वृत्तान्त पुस्तकरूपमें लिख प्रकाश करदें—इसलिये हमने देशज्ञ पर्यटक (सय्याह) लोगों के भ्रमण वृत्तान्त और विविध देशों की पुस्तकों को पढ़कर एक छोटासा संग्रह यह निर्मित कियाहै—कि जिससे अल्प व्यय, अल्पसमय और अल्प परिश्रम से घर बैठे हमरे पाठक संसार की सैरकरलें।

इसको पढ़ना आरम्भ कीजिये फिर देखिये आप कैसे महानन्द होते हैं इसके अवलोकन करने से ज्ञात होगा कि भिन्न रुचि के लोग कहां २ बसते हैं प्रत्येक देशकी अद्भुत रीतियां देखकर [illegible] का [illegible] —और विदित होगा कि यह संसार [illegible] है—कभी एकसमान स्थिर नहीं—[illegible] कि उनके [illegible] देशों में विद्यमान हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और

राज उपयुक्त है और बौद्धमत माचरित,है यह
रहता होगा इतिहास प्रणेता गण पता लगा
की रीतिनीति पर किस देश के विजयियों का प्र
तर्पा हास्यप्रिय पुरुष इसको उपन्यास समझकर य
मैं अपना श्रम सफल समझूंगा यदि
अन्यान्य देशोंका मनोहर वृत्तान्त पढ़कर घरसे
अन्य देशों में घूमकर धनोपार्जन करें अपना म
सुखसे रहें–आज तक तो हम कुओं में के मेंढक
नहीं जानते थे कि सृष्टि कितनी बड़ी है–और वि
समझते थे कि भारतवर्षही स्वर्ग स्थान है–शेष
आदमी बसते हैं यह मन बहलावकी सामग्री और इ
मित्रो यह समय उपयुक्त है–रेल और जहा
जहां चले जाओ–किसी से पूछने की भी आवश्यक
न आता हो तो बाहर निकलकर मज़दूरी से ॥) ै
कहीं बाज़ार और सराय हैं–जहां का चाहो टिव
देश के भारत वासी भी प्रत्यक देश में रहते हैं–
पत्र व्यवहार है बस अधिक क्या लिखें। २

(नोट) आज कल लोगों का उपन्यास पढ़न
मद्यका भांति यहभी प्रथम औषधि समझकर काम
मुँह लगगय–इसे सांसारिक पारमार्थिक–लाभ आ
हानि इतनी है कि एक तो वैज्ञानिक पुस्तकों
पढ़नेका अभाव हुआ जाता है–द्वितीय युवक पुरुष
प्रकार कहानियों ने नष्ट किये थे उसी प्रकार उपन्य
उनके सिर पर चढ़ बैठता है।
अपनी वैज्ञानिक पुस्तकों की अहलाद्या देख
कि जिस प्रकार इसके यह व्यसन बन्द करना
विरोध प्रबल था और लोगों के चित्तका झुकावभी
में था परन्तु सोचा कि यदि कोई पुस्तक दिखा
जावे जिसमें कुछ वैज्ञानिक रस हो तो कदाचित इ
को पढ़ना स्वीकार करें–सो इसका रोग और स्वभा
नर औषधि निर्माण की।

(२५८३)

चीन देश का वर्णन।

सब से प्रथम हम चीन देश का वर्णन करते हैं जिसके सुनने [illegible]

फ अब्वल दर्जा के सभ्य नेक और परिश्रमी होते हैं प्रबन्ध सर
अति उत्तम है दूसरे देश के निवासियों को देश के भीतर जाने
आज्ञा नहीं है, समुद्र की तट पर केवल थोड़े शहर वसे हैं
यूरोपीय मनुष्य रहते हैं या बाहर के ब्योपारी,ठहर सकते हैं,रेल
भी थोड़े दिनों से प्रचार होगया है और सभ्य देशों की वस्तुएं प्रस्तु
तिब्बत, तातार, मंगोलिया इत्यादि ऐसे उपजाऊ देश नहीं
यहांके निवासीभी जंगली और लड़ाका होते हैं यह स्वाधीन
नरोंके अधिकार में हैं और राजधानीसे अधिक दूरहोनेके कारण
बंध अच्छा नहीं है, पथिकोंका कुशल पूर्वक निकलना अत्यंतही
ठिन है और किसी बातकी फरियाद व सुनाई होना सहल नहीं
अमन चैन और स्वाधीनता का यहां वर्णन नहीं होता।

चीनी सभ्यता - सृष्टिके आरम्भसे यह देश प्रथम श्रेणी
उन्नति पर है और जैसा प्रथम था वैसाही आज तक है सम्पूर्ण
में एक जाति और एक मतके मनुष्य रहते हैं और उन्हींका रा
है बाहर वालोंका अधिकार आज तक नहीं हुआ बड़ा भारी
बलवान राज्य है हर प्रकारके यंत्र और कार्यालय सदैवसे इसमें
तमान हैं, सबसे प्राचीन और बड़ा समाचार पत्र संसार भरमें पी
नगज़ट है, फर्टैसी गोटका प्रचार यहां ४००० वर्षसे है बिजट का
प्रथम इसी देशमें प्रचलित हुआ था.छापेके कामका यहां हज़ारों
षसे प्रचार है कई नहरें (सींचनेके लिये) बहुत प्राचीन हैं जिन
एक ६०० मील लम्बी है. संसार में सबसे बड़ा बाग महाराजा
चीनका है।

चीन के मनुष्य यहां के निवासी बड़े बुद्धिमान हैं और परि-
श्रमी इतने होते हैं कि एक मनुष्य दिनभर बराबर कोई काम
करता या पढ़ा रह सकता है और कुछ भी नहीं थकता. ऐ
होते कि थाड़ भोजन में काम चैन कर लें, और पसीना पर
पूर्वी हो पर हर स्थान में आराम से सो रहें, साधारण [illegible]
दस्त इत्यादिकों में पसंद नहीं करते,
[illegible]

चांवल, गेहूं, मछली इत्यादिक का है बहुत से उत्तम जाति के म
नुष्य मांस नहीं खाते, और छोटी जाति के भी जो खाते हैं वह कि
सी जीवधारी को मार कर खाना भला नहीं समझते मुर्दा जान
वर को खाते हैं, स्त्रियें अत्यंत ही सुघड़ होती हैं वस्त्र कुछ मेम लो
गों से मिलते से होते हैं, मनुष्य एक घेर दार पायजामा पहनते
और ढीला कोट. टोपी नोक दार होती है, मर्द सिर के बाल बिल
ल मुड़वाते हैं परंतु चोटी हिन्दुवों से भी दूनी लम्बी रखते हैं डा
नहीं रखते, परंतु मूछें बहुत लम्बी होती हैं शिखा कट जाने
चीनी मर जाना अच्छा समझता है और बिना शिखा वाला उन
यहां एक गाली है, राजा का पहिनाव बिलकुल साधारण हो
है, मांदरीन अर्थात् अधिकारी मनुष्य गले में मोतियों की मा
पहिनते हैं और ठंढ व गर्म ऋतुओं के वस्त्र पलटने के लिये सब
से तिथियें नियत होती हैं,

चीन वालों के भक्ष्य पदार्थ कुत्ता, बिल्ली, मेंढक इत्या
दि खा लेते हैं अबाबील का घोंसला बड़ा मूल्य वाला भो
समझते हैं, चावल की मदिरा पीते हैं अंगरेज़ों की छुरी कांटे
भांति हाथ में लकड़ी की पतली चिपटियां ले कर उन से भो
करते हैं गाय का दूध बिलकुल नहीं पीते, रोगों में स्त्रियों के
पीने का नियम है,

कोई चीनी ठंढा पानी कदापि नहीं पीता सदैव या तो उष्ण पीते हैं
चाय का पानी, इस लिये बहुधा रोग बहुत कम होते हैं, अफीम
के का इस देश में बहुत प्रचार है जिस से बड़ी बरबादी फैली र
है, चाय का बर्ताव प्रत्येक मनुष्य करता है,

चीनीबनावट चीन वालोंपर तकल्लुफ़ समाप्त है, सलाम औ
कुशल प्रश्न के यहां अद्भुत ढंग हैं कोई मित्र जब टलना चाह
है तो कहता है " मैं महाशय की शिक्षा सुनने को फिर किसी दि
प्रस्तुत हूंगा " कोई दूसरा जो घर में आवे, यह बराबर ये कहे
उन करता है चाहे कितने ही दिन वह टहरे, कहने की आवश्यक
उस दिन पड़ती है जब कि उस को भोजन कराना स्वीकार न है

ात दर्जा के सभ्य नेक और परिश्रमी होते हैं प्रबन्ध सरक
सम है दूसरे देश के निवासियों को देश के भीतर जाने
हीं है, समुद्र की तट पर केवल थोड़े शहर बसे हैं जह
मनुष्य रहते हैं या बाहर के ब्योपारी,ठहर सकते हैं,रेलक
दिनों से प्रचार होगया है और सभ्य देशों की वस्तुएं प्रस्तुत
रत, तातार, मंगोलिया इत्यादि ऐसे उपजाऊ देश नहीं और
ावासीभी जंगली और लड़ाका होते हैं यह स्वाधीन गव -
धिकार में हैं और राजधानीसे अधिक दूरहोनेके कारण प्र-
ा नहीं है, पथिकोंका कुशल पूर्व्वक निकलना अत्यंतही क-
र किसी बातकी फरियाद व सुनाई होना सहज नहीं है
र और स्वाधीनता का यहां वर्णन नहीं होता।

सभ्यता - सृष्टिके आरम्भसे यह देश प्रथम श्रेणीकी
है और जैसा प्रथम था वैसाही आज तक है सम्पूर्ण देश
ते और एक मतके मनुष्य रहते हैं और उन्हींका राज्य
ालोंका अधिकार आज तक नहीं हुआ बड़ा भारी और
त्य है हर प्रकारके यंत्र और कार्यालय सदैवसे इसमें व
वसे प्राचीन और बड़ा समाचार पत्र संसार भरमें पेकि-
रंसी नोटका प्रचार यहां ४००० वर्षसे है विजट कार्ड
ेशमें प्रचलित हुआ था,छापेके कामका यहां हज़ारों व-
ै कई नहरें (सींचनेके लिये) बहुत प्राचीन हैं जिनमें
मील लम्बी हैं. संसार में सबसे बड़ा बाग महाराजा

मनुष्य यहां के निवासी बड़े बुद्धिमान हैं और परि-
होते हैं कि एक मनुष्य दिनभर बराबर कोई काम
खड़ा रह सकता है और कुछ भी नहीं थकता. ऐसे
ड़ भोजन में काज देर कर लें, और पलंग पर या
हर स्थान में आराम से सो रहें, साधारण स्वभाव और
ेकों में घमंड नहीं करते, साधारण काम काज में बड़े
[illegible] में बड़ी ग़रताई दिखाते हैं मद्य बहुधा

चांवल, गेहूं, मछली इत्यादिक का है बहुत से उत्तम ज़ाति के मनुष्य मांस नहीं खाते, और छोटी जाति के भी जो खाते हैं वह किसी जीवधारी को मार कर खाना भला नहीं समझते मुर्दा जानवर को खाते हैं, स्त्रियें अत्यंत ही सुघड़ होती हैं वस्त्र कुछ मेम लोगों से मिलतेसे होते हैं, मनुष्य एक घेर दार पायजामा पहनते हैं और ढीला कोट, टोपी नोक दार होती है, मर्द सिर के बाल बिल्कुल मुड़वाते हैं परंतु चोटी हिन्दुवों से भी दूनी लम्बी रखते हैं डाढ़ी नहीं रखते, परंतु मूछें बहुत लम्बी होती हैं शिखा कट जाने से चीनी मर जाना अच्छा समझता है और विना शिखा वाला उनके यहां एक गाली है, राजा का पहिनाव बिल्कुल साधारण होता है, मांदरीन अर्थात् अधिकारी मनुष्य गले में मोतियों की माला पहिनते हैं और ठंढ व गर्म ऋतुओं के वस्त्र बदलने के लिये सर्कार से तिथियें नियत होती हैं,

चीन वालों के भक्ष्य पदार्थ कुत्ता, बिल्ली, मेंढक इत्यादि खा लेते हैं अबाबील का घोंसला बड़ा मूल्य वाला भोजन समझते हैं, चावल की मदिरा पीते हैं अंगरेज़ों की छुरी कांटे की भांति हाथ में लकड़ी की पतली खिपटियां ले कर उन से भोजन करते हैं गाय का दूध बिल्कुल नहीं पीते, रोगों में स्त्रियों के दूध पीने का नियम है,

कोई चीनी ठंढा पानी कदापि नहीं पीता सदैव या तो उष्ण पीते हैं या चाय का पानी, इस लिये यह या रोगी बहुत कम होते हैं, अफीम के में का इस देश में बहुत प्रचार है जिस से बड़ी बरबादी फैली रहती है, चाय का बर्ताव प्रत्येक मनुष्य करता है,

चीनीबनावट चीन वालोंपर तकल्लुफ़ समातहै, सलाम औ कुशल प्रश्न के यहां अद्भुत ढंग हैं कोई मित्र जब टटना चाहे है तो कहता है " मैं महाशय की शिक्षा सुनने को फिर किसी प्रस्तुत हूंगा " कोई दूसरा जो घर में आवे, यह बराबर ये कहे उन करता है चाहे कितने ही दिन वह ठहरे, कहने की आवश्यक उस दिन पड़ती है जब कि उस को भोजन कराना स्वीकार न हो

चीनी लोग अपने लिये देवता और दूसरों को जंगली जाने
लिये प्रत्येक से अलग रहना पसंद करते हैं, दूसरे देश में
बसते हैं वह भी अपने ही श्रेष्ठ देश में आकर मरना पसंद क
परदेशियों से इतनी घृणा होनेपर भी वह किसी के संग
बचाव नहीं करते, यह लोग लड़ाई झगड़े से बहुत दूर रहते
गप का बड़ा आदर करते हैं और स्त्रियें अपने स्वामी को
मान समझती हैं स्त्रियें बड़ी पर्देदार और लाज वाली होती हैं
पने बेटेको बेच डालने का अधिकार रखता है,

आचरण भी चीनी लोग हिंदुओं के अनुसार ही

प्रथम मुर्दे को नदी के पानी से निहला करके उसके
ला डालते हैं और कुछ सोना व जवाहिरात भी फिर उस
नी वस्त्र पहिनाते हैं, तब कफन में सुगंधित पदार्थ भरकर
बंद कर देते हैं, सातवें दिन नाते दारों को समाचार भेजो
रंत आते और कुछ सुगंधित पदार्थ व द्रव्य लाते हैं—लाश
तक घर में रक्खी रहती है, जब तक कि पण्डित उस के
उचित स्थान गाड़ने के लिये नियत न करदें चाहे कई
, प्रति दिन उसको सुगंधित धूनी दी जाती है। फिर किसी
तक लेजाकर समाधिस्थान में गाड़ देते हैं।

तावीज़ (मंत्र गंडे) का प्रचार भी चीन में है परन्तु दूसरी प्रक से यह लोग मंत्र लिखे हुए कागज़ों को छत की कड़ियों में चिप देते हैं जिस से रोग घर में अधिकार नहीं करने पाते-सर्कारी क या स्टाम्प में बड़ी करामात समझते हैं, जब कोई बच्चा रोगी होता है तो उस की शिखा में उस के टुकड़े बांध देते हैं, महूर्त, पृश्न इ, त्यादि में भी निश्चय रखते हैं,

व्याह का ढंग चीनियों में बिलकुल हिन्दुओं कासा है प्रत्येक चीनी की सब से बड़ी इच्छा यह होती है कि उस का व्याह हो जावे जिस से संतान उत्पन्न हो कर उस का नामलेवा पानीदेवा रहे इस लिये बहुत छोटी अवस्था से ही व्याह होने लगता है नाई ब्राह्मण लड़के वाले की ओर से लड़की वाले के यहां कुछ अद्भुत पदार्थ लेकर जाते हैं जन्म पत्र मिलाये जाते हैं फिर एक शुभ महूर्त नियत होकर बड़ी धूम से बरात जाती है, जिस में सम्पूर्ण नातेदार सम्मिलित होते हैं और दोनों पक्ष वालों का बहुत धन व्यय होता है कोई नियत तिथि हद नहीं सक्ती यदि यह स्त्री बांझ हो तो उस को तिलाक़ देकर अलग कर के फिर दूसरा व्याह कर सकते हैं-दामाद लड़की के बाप को बहुत सा द्रव्य नज़राने के तौर पर देता है दुलहिन के सिर पर मोहर बांधा जाता है बेवा स्त्री का दोबारा व्याह करना ऐब समझा जाता है ऐसी स्त्रियां फांसीलगा आत्म हत्या कर डालती हैं और उन के स्मर्ण के लिये एक सती का मठ बनाया जाता है। जिस चीनी के कोई बेटा न हो उस को ऋण नहीं मिल सकता चाहे बेटियां कितनी ही हों क्योंकि बेटी अपने बाप के ऋण की अधिकारिणी नहीं वह अपने दूल्हा का ऋण अदा करेगी परन्तु बेटा तीन पुश्त तक का ऋण अदा करने का अधिकारी समझा जाता है इसी वास्ते चीनी लोग लड़की की प्रतिष्ठा नहीं करते।

चीन वालों का मत चीन में तीन मत प्रचलित हैं परन्तु एक अद्भुत दशा के साथ अर्थात् प्रत्येक मनुष्य तीनों मतों का एक ही समय में मान्य रहता है-प्रथम कनफ्यूशिस जो अधिक तर ..य पोलिटिकल वर्तावों से सम्बन्धित है और अधिक विद्वान

दूसरा बौध जो प्राकृतिक और अध्यात्मिक है और अधिकत
कलाकार है, तीसरा टायज़म जो जितेन्द्रिय है और वेदांती
गों हैं परन्तु इन सब में अधिक तर बौधमत के धर्मानुसार निव
प्रतिपादन होता है-कनफ्यूशिस के मंदिर प्रत्येक नगर में बन
और प्रति वर्ष सम्पूर्ण प्रजा सर्कारी कर्मचारियों समेत और
शाह भी उस की पूजा करते हैं कोई बालक जब पाठशाला
ता है तो प्रथम कनफ्यूशिस की तख्ती के आगे अपना मस्त
नाता है और प्रतिमास उस पर धूप चढ़ाता है सब से प्रथम इ
में नवग्रहों व तत्त्वों इत्यादिक के पूजा की प्रथा प्रच
थी फिर कनफ्यूशिसने हर भांति के नियम स्थापित किये फि
भारत वर्ष में बौद्धमत फैला और उस के उपदेशक चीन त
ब बादशाहने उस का वचन सुन कर स्वीकार किया और बहु
विद्वान भारत वर्ष को भेज कर यहां से पुस्तकें मंगा कर उल्थ
या बहुतसे बादशाह राज्य छोड़ कर बौद्धमत के सन्यासी बनग
शक्ति सब से पहिला देवता चीनियों का है जिस के नाम
एक अति सुन्दर बहुत बड़ा मन्दिर पेकिन में बना है
के चबूतरे के तीन भाग हैं सब से ऊपर के भाग में जाने
अधिकार केवल बादशाह को प्राप्त है, यह मन्दिर पांच सहस्र
का पुराना है उस में सृष्टि के उत्पन्न करने वाले की पूजा की
है बादशाह प्रति वर्ष इन्द्र देवता की पूजा करता है और
अपने हाथ से चलाता है और उस की रानी रेशम के कीड़े पा
है। चीनी मनुष्य अपने मन को बहुत स्वाधीन रखते हैं देवताओं
ना भी करते हैं परंतु जब कोई देवता कहना न माने अर्थात्
करने सेभी प्रसन्न न हुआ और दुख दूर न करे तो उस के-
को कुछ काल के लिये बंद कर देते हैं या उस की मूर्ति को
देते या तोड़ डालते हैं, यदि वर्षा न हो तो इन्द्र देवता की
को धूप में बिठालते हैं रोग फैलने पर रोग के देवता को मा
दुख देते हैं, जब किसी अपराधी देवता का मुकद्दमा करते
प्रथमही उस की आंख फोड़ देते हैं जिस से वह हाकिम को

तक देवताओं ने राज्य किया फिर चीनियों ने पश्चिम से आ
वहां निवास किया जिस को पांच सहस्र वर्ष का समय हुआ
मोगलियों और तातारियों ने कई जीतें कीं और अब दो सहस्र
से एक ही कुटुम्ब में राज है, राजा सब के प्राण व धन पर अधि
रखता है. और देवता से भी अधिक उस की आबरू की जा
राजा के दर्शन करने का किसी को बड़ी कठिनता से अ
प्राप्त होता है. और चाहे कितना ही बड़ा मनुष्य उस के दर
जावे उस को पृथ्वी पर झुककर प्रणाम करना पड़ता है, स
अफसर मांदरन कहलाते हैं [यह शब्द संस्कृत मंत्री से बना
कोई मांदरन अपने निवास स्थान में नौकर नहीं होसकता,
तीन साल से अधिक नौकरी नहीं करसकता और न उस के
कारी पृथ्वी में उसका कोई मित्र किसी कार्य्य पर नियत किय
सकता है, किसी अपराधी को दण्ड नहीं दिया जाता जब त
वह अपराध को स्वीकार न करले - अपराधी के गलेमें तौक
कर बांध देतेहैं या पिंजरेमें बंद करदेते हैं और बेंत मारने का दंड
स्थानपर सबके सामने दियाजाताहै जहां अपराधी अपराध करत
प्राणनाशक अपराधीका सिर काटाजाता है-निर्दयी प्राणनाशक
बापके प्राणनाशक को यह दंड दियाजाता है, कि उसको एक
से बांधकर उस के शरीर को ठौर व ठौर काट कर घाव कर दे
इसी प्रकार वह तड़प २ कर मरजाता है, किसी २ अपराधी
रात दिन जगाते रहते हैं बिलकुल नहीं सोने देते इसी प्रकार
के जीवन काल को समाप्त कर देते हैं, बंदीगृह अत्यंतही छोटे व
व कीड़ेमकोड़ों से भरे रहते हैं — चीन का रुपया
होता है उस के मध्य में एक छेद ऐसा होता है कि उस को
डोरे में पिरोकर रख सकें यह उपाय तो अत्यंत ही माननीय है,
में रुपये के गिरने का डर नहीं ।

चीन की मुख्य बातें चीनी लोग पुस्तक का मान भी नहीं जा

नते । राज वैद्य यदि रोग को ठीक औषधि या निदान न करता
तो एक वर्ष का वेतन उसको नहीं दिया जाता । अर्थात कारण

धि दूसरे देशवालों को ज्ञात हुई, चीन में अब भी इसका बड़ा
है हर स्थान में सैकड़ों बाग शहतूत के केवल रेशम के कीड़े
खाने के वास्ते नियत हैं। चीनी मिट्टी जो ऐसी चिकनी, नरम
हलकी होती है, वह केवल चीन में ही उत्पन्न होती है, सैकड़े
हुत भारी २ उसके कार्यालय है, चीन में लाखों मनुष्य ऐसे हैं
घरों में न रहकर नावों में रहते हैं और जहां चाहते हैं फिर
पानी पीते और मछली खाते हैं यह मनुष्य अपने बच्चों की कम
तूंबे बांध रखते हैं जिससे यदि कभी कोई नदी में गिर पड़े
डूब न जावे।

से परीक्षक मिल न जावे-पास हुवे विद्यार्थियों की भोज [दावत]
ी व प्रधान पुरुष करते हैं और उनको नीले रंग का मुख्य प्रति
त वस्त्र मिलता है उन की गणना बादशाही प्रतिष्ठित पुरुषों में
ने लगती है। यहां जो विद्वान हैं वही प्रतिष्ठित हैं। क़ानून वहां
त्र वालों को भी अच्छी तरह से याद है। हाथी दांत के जाली
र गोले एक के भीतर एक काटते हैं बहुत अचम्भित काम है।
ां कोई कारीगर जबतक कि १ रुपये की वस्तु पर काम करके
रुपये की वस्तु न बना सके बुद्धिमान नहीं समझा जाता। पौं
त लाखमन चाय प्रति वर्ष कांटन से जहाज़ों पर लादी जाती है
ई किसी अपराधी को दंड दिया जावे और उस के मां बाप वृ
और उनके कोई लड़का सेवा करने को नहो तो उसका अपर
ा किया जाता है।
यदि कोई अपने बाप का सामना करे तो उस को प्राणदंड और
की स्त्री तथा उस प्रांत के प्रधान को उचित दंड दिया जात
क्यों उन्होंने उस के चाल चलन को ठीक न किया। प्रति ग
प्रति मास एक बार तहसील दार लोगों को न्यायालय के निय
चाल चलन के ठीक करने की बातें सुनाता है और प्रति साल
बार कलक्टर सम्पूर्ण प्रांत [ज़िला] के कर्मचारी गणों व
ाम समझाता है फिर भी यदि कोई मनुष्य अपराध करे तो अ
धी और प्रधान दोनों को दण्ड मिलता है, वहां यह भी निय
के वर्ष के अंत में सब लोग अपने हिसाब किताब से निश्चित ह
जिस का जो कुछ लेना देना हो लेदे लेवें यदि कोई उस दि
ण का उद्धार न करे तो ब्योहरे [जो ऋण देता है] को अधि
र है कि जो चाहे वह उस पर सख्ती करे बादशाह फर्याद न सु
। मांस सब लोग खाते हैं परंतु मरे हुए जानवर का। शहर पी
न के मध्य में एक तालाब कोसभर लम्बा चौड़ा है उस के बीचो
व एक टापू है उस में एक सोने के काम का मंदिर बना है उस
ु का पुल संगमर्मर का है। कपूर के पेड़ अधिक उत्पन्न होते हैं
प्रकार के पेड़ और उत्पन्न होते हैं जिन में मोम और चर्बी की स
त वस्तु निकलती ... बनती है।

पहाड़ भी इसी देश में हैं किसी २ में से तो राता दिन बराबर
र पत्थर निकला करते हैं जिनका प्रकाश रात
रह चमका करता है। जापान में भूडोल प्रति दिवस
हैं और कई बार वर्षा में नदियां इतने बल पूर्वक उमड़ती हैं
कड़ों गांवों को बहा ले जाती हैं।

गर्म ऋतुओं में आंधियां और तूफान भी अधिक तर आते
स के तट का समुद्र चारों ओर अति गहरा है और ऐसा
ड़ता है कि यह देश गोया एक पहाड़ है जो समुद्र के
निकल खड़ा हुआ है।

जापान का दुख। ऐसे डरावने देश में जो मनुष्य
र रहते हैं उनको समझ लीजिये कि कैसे बहादुर होंगे।
दुखों पहाड़ों और भूडोलों से जितनी हानि द्रव्य व जीवों
दा हुआ करती है उन की कथाएं सुनाते हैं। सन् १७०७ ई० में
क पहाड़ से अग्नि निकली, धूएं की अधिकता से दिन में आधी
त की समान अंधेरा होगया, गरम दहकते हुए अंगारों की कोत
क की पृथवी पर तीन गज़ मोटी तह जम गई। बहुत से गांवों के
न्ह तक न बचे कि कहां थे साठ मील तक उस की घड़घड़ाहट
शब्द सुनाई देता था और सम्पूर्ण वायु में धूल छागई—सन् १८५५
में एक भूडोल टोकियो शहर में आया था जिससे बहुत
घर गिर गये और शहर में स्थान प्रति स्थान में आग लग गई
और भूडोल सन् १८६१ ई० में आया जिस में कई गांव उजड़
खेड़े रह गये और डेढ़लाख मनुष्य मिट्टी में मिल गये, जापान
इतिहास आरम्भ से अन्त तक ऐसे ही दुखों से भरा हुआ है
लिये यहां के मनुष्य अधिक चैतन्य, बुद्धिवान और बहादुर
और भले और ईमानदार भी हैं।

जापान के मनुष्य। यहां के मनुष्य चीनी संतान हैं अत्यंत
र, पुष्ट पीले रंग के, मुंह पर बाल बहुत कम, सिर बड़ा, लम्बी
र और शरीर छोटा - स्त्रियां बहुत छोटी व सुंदर होती हैं इन

का टुकड़ा भी मुंह तक लेजा सकते हैं, तमाकू बहुत पी
परंतु मांस व शराब से बिल्कुल बचाव रखते हैं, तरकारियां व
दूध पीना जानते ही नहीं, दिन में ३ वेर भोजन करते हैं, प्रा
बस गरम पानी में नहाते और बालों में चाय का तेल डाल
प्रत्येक मनुष्य के हाथ में एक गोल पंखा रहता है, बुरश और
दवात भी साथ रखते हैं। नरम काग़ज़ का रूमाल होता है उ
मुंह इत्यादि पोंछते और आवश्यकता पड़ने पर उसी पर प
ख लेते हैं। शाम के समय हर एक के स्नानागार में पानी
होता है और स्वामी से लेकर सेवक तक उस में स्नान कर
ठंढे पानी से नहाना श्रम करना समझा जाता है। स्त्री पुरुष
होकर एक ही स्थान में बराबर स्नान करते हैं न कुछ लाज
हैं न बुरी दृष्टि से किसी को देखते हैं -- जापानी सौगंद कभी
खाते इस के स्थान में केवल मुस्करा कर चुप हो रहते हैं।
बच्चों को दूध बड़ी अवस्था तक पिलाती हैं बच्चा अपने म
छोड़ता है, बच्चे बड़े सीधे, परिश्रमी और बुद्धिमान होते हैं,
बूढ़ों केसे वस्त्र पहिनते हैं जो खिलौने की समान[छोटे से जा
मालूम होते हैं

जापानी मनुष्य बड़े खिलाड़ी होते हैं। खेल का इतना
रखते हैं कि संसार में और कोई जाती [क़ौम] इतना नहीं रख
मज़दूर भी दिन में दो एक दांव शतरंज या चौसर का खेल
है। कोई २ लड़कियां अपने बाप का ऋण चुकाने को वर्ष दो
के लिये वेश्या बन कर हाट [बाज़ार] में बैठती हैं यह बुरी
समझी जाती। शत्रु के हाथ में जाने से या अपमान हो कर जी
से जापानी मरने को अच्छा समझता है इस लिये वह अपमान
पूर्वक अपने पेट में छुरा घुसेड़ कर मर जाता है या उस के लि
समाज मंडली में उस की प्रसन्नता से सिर काट देते हैं।

जापानी लोग बच्चे को बहुत प्यार करते हैं और उसे हर समय
अपने संग रखते हैं कहीं बाहर को जावें तो भी पलपालने में होता

दीवारें बिलकुल नहीं होतीं चारों ओर खम्भे खड़े होते हैं
न में किवाड़ें ऐसी लगाते हैं कि वह तै होकर संदूक में
हैं । और आवश्यकीय समय पर चारों ओर लगाली
पुष्ट कागज़ के पर्दे द्वारों पर पड़े रहते हैं और इन्हीं
को मध्य [बीच] में लगाकर अलग २ कमरे बनालेते हैं,
छोटी चटाइयां बिछाते हैं यह चटाइयां दो गज़ लम्बी और
चौड़ी होती हैं इन्हीं के हिसाब से प्रत्येक घर बनता है ।
कि सम्पूर्ण घर एक सूरत के हैं कोई १० चटाई का हो चाहे
र के साथ कुछ फूल वाटिका भी होती है मेज़ कुर्सी कोई
न गालीचा बिछाते हैं उसी चटाई के फर्श पर बैठते हैं
की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि वह फर्श पर सोते हैं
किया सिरहने रखते हैं और ऊपर एक
तु मच्छरों के बचाव के लिये मसहरियां लगाते हैं । आगके
विना एक दम भी गुज़ारा [काल क्षेप] नहीं होता
लथी मारकर बैठने की प्रथा नहीं है प्रत्येक मनुष्य इस प्रकार
है जिस प्रकार कि मुसलमान नमाज़ को बैठते हैं प्रत्येक घर
का कमरा एकांत होता है परदों में सुंदर से अच्छे २ बेल
हैं और चीनी बर्तन व कागज़ की लालटेन इत्यादिक समा
शोभा के सामान हैं. छप्पर फूंस या खपरैल का छाते हैं ।

नी भाषा जापानी भाषा है तो अलग परंतु उसमें
शब्द बहुत हैं और नये विद्या के नाम भी चीनी से
लिये जाते हैं तौ भी इन दोनों भाषाओं में इतना अंतर
नी व जापानी परस्पर वार्ता नहीं कर सकते । स्वर संर
चार हैं और सन् ४०० ई० में प्रचलित हुए थे । लिखने
नियों ही के समान है पहला समाचार पत्र सन् १८७१
अंगरेज़ ने निकाला था उसके उपरांत १८ वर्ष के भीतर
० सौ, समाचार पत्रों का प्रचार होगया । जापानी
या को इतनी चाह नहीं रखते कि जितनी कला व
त्वा यह है कि यह बड़े प्रसन्न चित्त मनुष्य

न को प्रयोजन यह है कि इस चाल से वहकाकर ४० वर्ष के
..र ६ लाख मनुष्यों का धर्म नष्ट किया जब महाराजा जापान ने
कि पुर्तगीज़ के बादशाह की इच्छा है कि बड़ा सेना भेजकर
ईसाइयों की सहायता से सम्पूर्ण देश को जीते। तो महाराज
आज्ञा पत्र का प्रचार किया जिसका आशय यह था कि स-
| परदेशी और ईसाई देश से बाहर निकाल दिये जावें. नहीं
दी किये जांय, इस पर भी बहुत से फरंगी छिपे हुए मनुष्यों
बहकाते रहे। यहां तक कि सन् १५९८ ई० में जब महाराजा
गया और गद्दी के लिये झगड़ा हुआ तो ईसाई समूह ने एक
के पक्ष पात में तलवार उठाई परंतु ईश्वर की दया से यही स-
परास्त होगया इस लिये अंतिम बादशाह ने ईसाइयों की ओर
डरकर सन् १६१५ ई० में इस आज्ञा पत्र का प्रचार किया और
न स्थान में पत्थरों पर खुदवा करके रास्ते पर गड़वा दिया।
जब तक पृथ्वी पर सूरज प्रकाशित रहे कोई फरंगी जापान में
घुसने पावे और सब को ज्ञात हो कि खुद स्पेन का शहंशाह चाहे
ाइयों का परमेश्वर वरन सम्पूर्ण संसार का परमेश्वर ही क्यों
हो यदि इस आज्ञा के विरुद्ध कार्य्य करेगा तो ... ...
जाय।

कितनी उन्नति करेंगे इनका बढ़ना भी कुछ असभ्यों को धोखा या चालाकी से दबा कर नहीं है वरन बड़े सभ्य व बलवान राज्यों की छाती पर पांव देकर अपनी बुद्धि चैतन्यता व धैर्य्य से है।

जापान की उपज व शिल्प । जापान में सोना चांदी अधिक उत्पन्न नहीं होता वहां तो जैसे यहां के निवासी बुद्धिमान हैं वैसे ही कार्योपयोगी वस्तुएं ईश्वर ने उत्पन्न की हैं लोहा और कोयले की खानें अधिकता से हैं, सम्पूर्ण देश पहाड़ी और ठंढा है अल्पमांस पृथ्वी उपजाऊ है इसलिये अनाज व फल आवश्कता से अधिक उत्पन्न नहीं होते। शेर भेड़िये जापान में बिलकुल नहीं होते। परंतु बन्दर और रीछ बहुत होते हैं, गधा, भेड़, बकरी भी नहीं होते, गाय दूध पीने के काम नहीं आती जापानी इस पर बोझा लादते हैं, सारस और बगुले अधिकतर होते हैं, सांप केवल एक प्रकार का विषैला होता है. सो इसको वहां के निवासी उबालकर औषधि के तुल्य खाते हैं समन्दर एक जानवर वहां अधिक होता है रेशम का कीड़ा वहां बहुत पाला जाता है वार्निस का काम जापान में संसार से निराला और अच्छा होता है और चित्रकारी व चीनी मिट्टी व धातु इत्यादि के काम बहुत अच्छे होते हैं, एक करामाती जापान का शीशा अत्यंत ही प्रसिद्ध है इस शीशे पर जो बेलबूटे चित्रकारी होती है वह सामने की दीवार पर वैसी ही ज्यों की त्यों दृष्टि पड़ती है।

अनोखि २ बातें । जापान की सवारी सब से अनोखी है यहां पालकी के अतिरिक्त कंधों में भी घोड़ा न जोतकर मनुष्य जोता जाता है यह मनुष्यों घोड़ा बहुत अच्छी वर्दी पहने हुए इस गाड़ी को अकेला खींचता हुआ घोड़े के समान शीघ्र दौड़ता है और दो ख्यता यह है कि राह में पथिक की प्रसन्नार्थ कथा भी सुनाता चलता है इस सवारी को जिन रक्षा कहते हैं-शहर टोकियो में ऐसी ११००० गाड़ी हैं।

जापान बच्चे बड़े, पतंग और गेंद के बड़े खेलाड़ी हैं गाय का

कितनी उन्नति करेंगे इनका बढ़ना भी कुछ असभ्यों को धोखा या चालाकी से दबा कर नहीं है वरन बड़े सभ्य व बलवान राज्यों की छाती पर पांव देकर अपनी बुद्धि चैतन्यता व धैर्य्य से है।

जापान की उपज व शिल्प। जापान में सोना चांदी अधिक उत्पन्न नहीं होता वहां तो जैसे वहां के निवासी बुद्धिमान हैं वैसे ही कार्योपयोगी वस्तुएं ईश्वर ने उत्पन्न की हैं लोहा और कोयले की खानें अधिकता से हैं, सम्पूर्ण देश पहाड़ी और टेढ़ा है अल्पांश पृथ्वी उपजाऊ है इसलिये अनाज व फल आवश्यकता से अधिक उत्पन्न नहीं होते। शेर भेड़िये जापान में बिलकुल नहीं होते। परंतु बन्दर और रीछ बहुत होते हैं, गधा, भेड़, बकरी भी नहीं होते, गाय दूध पीने के काम नहीं आती जापानी इस पर बोझा लादते हैं, सारस और बगुले अधिकतर होते हैं, सांप केवल एक प्रकार का विषैला होता है. सो इसको वहां के निवासी उबालकर औषधि के तुल्य खाते हैं समन्दर एक जानवर वहां अधिक होता है रेशम का कीड़ा वहां बहुत पाला जाता है वार्निस का काम जापान में संसार से निराला और अच्छा होता है और चित्रकारी व चीनी मिट्टी व धातु इत्यादि के काम बहुत अच्छे होते हैं, एक करामाती जापान का शीशा अत्यंत ही प्रसिद्ध है इस शीशे पर जो बेलबूटे चित्रकारी होती है वह सामने की दीवार पर वैसी ही ज्यों की त्यों दृष्टि पड़ती है।

अनोखि २ बातें। जापान की सवारी सब से अनोखी है वहां पालकी के अतिरिक्त बग्घी में भी घोड़ा न जोतकर मनुष्य जोता जाता है यह मनुष्यी घोड़ा बहुत अच्छी वर्दी पहने हुए इस गाड़ी को अकेला खैंचता हुआ घोड़े की समान शीघ्र दौड़ता है और खो स्वता यह है कि राह में पथिक की प्रसन्नतार्थ कथा भी सुनाता चलता है इस सवारी को जिन रक्शा कहते हैं—शहर टोकियो में ऐसी ३३००० गाड़ी हैं।

जापान दरचे छट्ट, पतंग और गेंदके बड़े खेलाड़ी हैं नाग का

पक और दूसरी भांति से खेलते हैं। डौरू [डमरू] सित
ढोल बजाते हैं जापानी लोग बड़े तकल्लुफयाज़ और संसारमें अ
धिक पवित्र रहते हैं, मनुष्य मौन और स्त्रियां वाचाल हो
सर्कारी नियमानुसार हर कर्मचारी के मस्तक पर उस
ार कर्तव्य व उसके स्वामी का नाम और प्रत्येक बच्चे के वक्ष
सके मा बाप का नाम और ठिकाना लिखा होता है जिस
आधे बिजली का प्रकाश प्रत्येक शहर में होता है।

ान का मुख्य इतिहास। मनुष्य संख्या यहां की तीन
है उजाड़ बन कहीं नहीं गांव से गांव मिले हुए हैं सम्पूर्ण
हाड़ी है बर्फ भी बहुधा चोटियों पर जमी रहती है। [illegible]
ा पृथ्वी खेती से खाली नहीं जो पृथ्वी साल भर तक पा
र पड़ी रहती है उसको सर्कार छीन लेती है। खच्चर, हाथी
बिल्कुल नहीं होते, दीमक की यहां अधिकता है, बुराई करना
अपराध समझते हैं कोई किसी को गाली नहीं देता, गाय
[illegible] नहीं करते मजदूर को भी जब तक नम्रता पूर्वक
गे वह तुम्हारी बात का उत्तर न देगा। लोग की [illegible]
पहिनते हैं घोड़े की लगाम साईस के हाथ में रहती है स्वामी
नहीं छूता। घर में असबाब कम और स्वच्छता अधिक होती
क घर में स्नानागार अवश्यही होता है सब वालों के लि
मुकर्रर है। जहां लड़के की पुष्टि कराई कि बाप ने उस [illegible]
[illegible]। [illegible] [मेहमान] के आने से जो मिठाई बचे [illegible]
[illegible] में लपेट कर अपने घर लिजावे। शाम के समय [illegible]
[illegible] बागों पर सवार होकर [illegible] नहीं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

फावड़े से भी काम करता होगा तो भी एक हाथ में गज भ
हुक्का अवश्य ही होगा। इसी कारण वहां के २ मनुष्य इतन
ाहीं कर सकते कि जितना अन्य देश का एक आदमी कर
। कोरिया वाले बड़े संतोषी व बेखटके होते हैं घर के भीतर
ाई और लकड़ी के तकिये व परदा के अतिरिक्त और सुख क
ोई सामान न निकलेगा इस लिये न कोई रुपया पैदा करने क
ाम करता है और न इकट्ठा करना चाहता है यदि उनको कुछ
का होता है तो जाड़े के लिये पूंजी इकट्ठी करने का। इस देश
ाई ऋण भी नहीं लेता व्योपार भी बहुत न्यून है क्योंकि। उनकी
ासी वस्तु के न तो मोल लेने की इच्छा है और न बेचने की आ
श्यकता। ऐसे सीधे सादे हैं कि यदि किसी मनुष्य के पास रुपया
धिक हो तो वह सर्कार में इकट्ठा कर देता है व्यर्थ झगड़ा अपने
में नहीं रखता।

ोरिया की गवर्नमेंट। यहां का राजा स्वाधीन है बौद्धमत
र कनफ्यूशिस का प्रचार है प्रति मनुष्य साल भर में तीन माह
सर्कारी बेगार करता है राजा के आधीन बहुत से छोटे २ राज्य
वेद्या की अधिक आबरू है।

ोरिया की अनौखी बातें वहां यह अद्भुत रीति है कि स्त्री
दिन भर घर में बंद रहती हैं मर्द बाहर काम काज करते हैं परंतु
ा होते ही सब मर्द घर के भीतर घुस जाते हैं और रात को ग-
ों व बाज़ारों में स्त्रियां निकलकर काम करती हैं इसके सिवे बड़े
नियम हैं सूबे कोयचाऊ में एक निराली रीति यह है कि जब
के बच्चा उत्पन्न होता है तो वह उठकर काम धन्धे से लग जा-
ै और उसके स्थान में पुरुष जच्चा बनकर बैठता है और एक मा
ह उपरांत स्त्री बैठती है [अच्छे - पुरुष का यही दंड है
ने बच्चा उत्पन्न किया हमारे देश की नाईं नहीं कि पानी में
लगा अमालो दूर बड़ी]

श्याम देश का वर्णन।

चीन के दक्षिण और ब्रह्मा के पूर्व में यह एक बड़ा राज्य व

बलवान राज्य है यह देश तो छोटासा ही है परंतु वहां की सब बातें उन्नति पर हैं इसमें श्याम, अनाम, कम्बोडिया, कोचीन इत्यादिक ा सम्मिलित हैं गो इनमें कोई राज्य स्वाधीन हैं परंतु हम उनका ान एक ही स्थान पर करना उचित समझते हैं।

श्याम के निवासी यहां के हिंदुओं के अनुसार होते हैं स्त्री पुरुष ा धोती बांधते हैं - वस्त्र के पहिनावे में कोई अन्तर नहीं इस ये स्त्री पुरुष का पहिचानना दूसरे के लिये कठिन काम है - अ- त ही भले मानुष, सीधे, डरपोक और बेपरवाह होते हैं - प्रत्येक म पर ध्यान व समानता रखने वाले मुखपर किसी भांति के चिन्ह हीं प्रगट होने देते क्योंकि कोई श्यामी कभी हंसता ही नहीं केवल स करता है वह भी हाथ पांव से न कि मुंह और आंख से स्त्रियें सी पवित्र इस देश में होती हैं कदाचित् और स्थान में नहीं होती ग सब का सांझा होता है - पुरुषों का सिर मुंडा हुआ केवल ोटी थोड़ीसी दाढ़ी - स्त्रियों के बाल ऐसे जैसे हमारे देश के, मर्दों : और आंखों पर बेल बूटे, होटों को लाल और दांतों को काला रं- ते हैं - पान दिन भर बकरी की भांति चबाया करते हैं स्त्री पुरुष ब तमाखू पीते हैं स्त्रियों और बच्चों को गहना पहिनने का बड़ा ाव होता है कान में गहना नहीं पहिनते।

श्याम देश के घर। थोड़ी ऊंचाई पर बनते हैं दीवार, छत, रवाज़े, चटाई और तकिया सब बांस ही के बनाते हैं चारपाई ा नाम नहीं जानते घर की बनी हुई चटाई पर सोते हैं उन्हीं की ाकिया बनाते और मसहरी लगाते हैं इस देश में शीशा, लैम्प, घड़ी त्यादि के प्रचार का भी आरम्भ हो गया है दूसरे देश वासियों से मेलने के समय मेज़ कुर्सी भी लगाते हैं।

श्यामी गवर्नमेंट। प्रथम रीति थी कि प्रजा राजा की सूरत न देख सक्ती थी यदि कोई प्रतिष्ठित मनुष्य या परदेशी मिलने को जाता तो पृथ्वी पर लोट कर प्रणाम करता, बैठने या खड़े होने की मजाल न थी परंतु अब यह रीति बंद हो गई अब राजा को भरी सभा में सब कोई देख सक्ता है, गुलामी भी बंद हुई और जो कोई

से ऋणी लोग अभी तक गुलाम हैं यह नाम मात्र को हैं।
विद्यार्थी विलायतों को विद्या पढ़ने के लिये भेजे गए
भागों के उच्च कर्म्म चारी फिरंगी हैं राजा चोलालंगकरन
न्दिमान् व परिश्रमी है आज कल सम्पूर्ण यूरोप में घूमता
महाराजाओं से मिलता फिरता है उस का छोटा भाई
बुद्धिमान और परिश्रमी है और लक्ष्मणजी को
री है वही आजकल राज्य का प्रबन्ध करता है, पहिले
दिया राजधानी था सन् १७०० ई० में फाजकिन फरंगी
लिये कुछ इस से अंतर पर शहर बंकाक बसाया, उप
क्रमण कर के शहर अयोदिया को जला दिया मृत राज
। अमरांची व बुद्धिमान था इस के समय [illegible]
विख्यात यंत्र श्याम में आगये थे, आप अंगरेज़ी [illegible]
। विद्वान था और बहुत से यंत्र व अंगरेज़ी वस्तुएं [illegible]
न का राजकीय पुस्तकालय बहुत बड़ा है राजा
। है और दिन भर यावही राज का प्रबंध करता है
केवल राजधानी में जा सके हैं भाषा इस देश की [illegible]
गी है परंतु उस में मत और नियम के सम्पूर्ण शब्द [illegible]
पाली भाषा के हैं।

स देश की मुख्य बातें। नदी के तट पर रा[illegible]
हर बसा हुआ है बहुधा घर नावों पर बनते हैं, बाज़ा[illegible]
पर है, राजा का मंदिर भवन पानी के भीतर शीशे का [illegible]
[illegible] ठंडा रहता है प्रतिष्ठित और धनवान मनुष्य अपने
[illegible] इस लिये उन के नाखून [illegible]
ते हैं। जिनसे प्रतिष्ठित जाने जावें नाखून।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रत्येक मनुष्य थोड़ा बहुत अवश्य पढ़ा होता है कृषि कर्म की
धिकता है उपज बांस, शकर, गुलाब, पीपल, चावल, तमाखू,
, गोंद, मोम इत्यादि की अधिकता है धातु और रत्नों की खान
भी कमी नहीं है हाथी की इस देश में इतनी अधिकता है कि
येक मनुष्य घोड़े की भांति हाथी पर चढ़ता है।

ाम का मत व रीतियें मत और चाल चलन इन लोगों
हिंदुओं कासा है बौध की पूजा अच्छी तरह से होती है एक
न्दिर में बुध की प्रतिमा ५० गज ऊंची रक्खी है, एक मंदिर का है
दि सफेद हाथी पकड़ा जावे तो बड़ा मेला होता है, शहर, झालर
जते सवारी निकलती और राजा व प्रधान सबही पैदल चलते हैं
ाह का मुहूर्त ठहराते हैं एक बिचौलिया मनुष्य बातें कराता है
नों पक्षों से सम मूल्य की वस्तुएं दीजाती हैं. बड़ी बरात आती
पंडित लोग बुध के वेद को बांचते हैं स्त्री के जब तक लड़का न
त्पन्न हो तब तक दूल्हा भी ससुरालमें रहता है एकस्त्रीसे अधिक
ई नहीं रखता, मृतक की लाश में फूल व सुगंधित पदार्थ रखकर
तीनों घर में रख छोड़ते हैं जहां कि पंडित कथा सुनाते और
जा करते रहते हैं फिर मुख्य नियत की हुई मुहूर्त में गाड़ते हैं।
ाऊ जाति के मनुष्य अधिक सुंदर होते हैं परन्तु सबसे एकान्त
हते हैं स्त्री पुरुषों के कान फटे रहते हैं स्त्रियां इस में मुंदरा पहिन
ी और पुरुष इस में चुरट लगाते या फूल लगाते हैं। स्त्रियां घर
ाहर का सब काम करती हैं, पुरुष खेलते और सैर करते हैं जब
च्चा उत्पन्न होता है तो उसको रन पर बिठाल कर भूत प्रेत से
छते हैं कि ठीक है तो सब लेजाओ नहीं तो फिर इसे तुम मत
ना फिर इसको। किसी मालदार के हाथ बेच डालते हैं कि जिससे
त का अधिकार न रहे क्योंकि सन्तान को भूत की समझते हैं
ी को चारों ओर पूर्ण जलाकर तपाते हैं बच्चा तीन वर्ष तक
ध पीता है इसके पश्चात् चुरट पीने का प्रारम्भ कर देता है
ोगों अपना हाथ उलटा सीधा सब ओर को मोड़ सकते हैं यह
ुछ अभ्यास रखते हैं इस प्रकार के लोगों के शरीर पर चम
दिखाई होते हैं यह जाति यहां बहुत थोड़ी है और मुख्य न
दियों पर है।

कम्बोडिया इसमें फ्रांसीसी राज्य है यहां के निवासी ...
घराने के नहीं परन्तु असली आर्य्य नस्ल से हैं भाषा उनकी
ल संस्कृत के अनुसार है मंदिरों में हिन्दुओं कीसी मूर्ते रक्खी
यहां पुराने मंदिरों के खंडहर बड़ेर भारी वर्तमान हैं जिन पर
रामचन्द्रजी व विष्णुजी के वृत्तांत खुदे हुए मिलते
बहुत सी मूर्तों और पुस्तकों से भरा हुआ है मंदिरों में बड़े
...य रत्न और कोप हैं पुराने समय में यह बौधमतका बड़ा
राज्य था। निवासियों के वस्त्र और आभूषण स्वच्छ और
...मक के होते हैं सम्पूर्ण मनुष्य सभ्य और सच्चे व भले हैं
...नके वृत्तांत बहुत कम ज्ञात हुए हैं, रीतियें व चाल चलन
... चीनियों के अनुसार हैं एक समय में सम्पूर्ण देश में
... राज्य हो गया उस का गुण अधिक है-ऐरावत हाथी की मूर्ति
...ड़ी भारी है बहुत से पृथ्वीमें दबे हुए नगरोंके खंडहर जो इस
खोदे गये उन का संक्षेप वृत्तांत एक फ्रांसीसी ने अपनी पुस्तक
लिखा है जिस्का तरजुमा हमछापेंगे ॥

कोचीन देश का वर्णन । यह देश भी फ्रांस के अधि...
...र में है यहां के निवासी बहुत अच्छे दिल वाले ठठोलिये और
...स्वादी होते हैं सिक्खों की भांति से सिर के बाल रखाते हैं बहुत
...चे और ईमानदार होते हैं चावल, मछली का भोजन प्रति दिवस
है परन्तु कीड़े, छिपकली, कुत्ते, बिल्ली, का भी बचाव नहीं
एक मनुष्य पान और तमाकू का वर्ताव अधिक रखता है शराब
... घृणा करते परन्तु चाय बहुत पीते हैं एक मनुष्य कई स्त्री
...ता है परन्तु पहिली की प्रतिष्ठा अधिक होती है लड़कियां ब्याह
...लिये मोल लीजाती हैं बल पूर्वक बलात्कार का दंड प्राण दंड
होता है साहूकार को अधिकार है कि अपने ऋणी को और उस
के लड़के स्त्री को पकड़ कर के बेच डाले-बौधमत का प्रचार है म...
पूर्ण रीतें चीन और श्याम के समान हैं । अनाम का हाथी और
मिट्टी का तेल प्रसिद्ध है ॥

मलाया देश का वर्णन यहां के निवासी मुसलमान हैं पर-

बड़े सीधे होते हैं किसी की वस्तु पर दृष्टि नहीं करते वरन
पना भी छोड़ने को प्रस्तुत ठठोली दिल्लगी करने से कुछ
। प्रयोजन नहीं रखते मत के पक्षपात का नाम भी नहीं जानते
त्येक गांव का एक प्रधान और एक पुजारी अलग नियत होता है।
त्येक गांवमें एक अलग देवता का स्थान होता है जिसकी पूजा होती है

जूआ खेलना पक्षियों का लड़ाना साधारण काम है, मलाया के
मनुष्य होता तो बड़ा भला मानुष है परन्तु जब विवश होजाये तो
आपे से बाहर और मरने मारने को तत्पर होजाते हैं यदि स्त्री, य
साहूकार या शत्रु से बहुत दुख पावे और बरांन वाले कोई बात न
यहाँ न न्यायालय से उनका न्याय होते तो यह विक्षिप्त होकर आपत

ब्रह्मा देश का वर्णन

यह देश भारतवर्ष के पूर्व में बंगाले से आगे है क्षेत्र फल में [बं]गाले और आसाम के योग के बराबर है उत्तर में चीन की से[ना] [से] मिला हुआ है. पूर्व में स्याम कम्बोडिया से मिला है और दक्षि[ण] में मलाया प्रायद्वीप व समुद्र है प्रथम वहां पर एक बोधमत [का] राजा था परन्तु थोड़ा समय व्यतीत हुआ कि इसको अंगरेज़ों [ने] जीत लिया अब इसमें बहुत से भारतवर्षीय भी पहुंच गये हैं औ[र] हर प्रकार के विभाग [महकमे] खुल गये हैं और रेल भी प्रचलि[त] हो गई है।

इस देश में बहुत से वन हैं जिसमें तस्करों [डाकुओं] के [यू]थ के यूथ छिपे रहते हैं यह लोग सर्कार को बहुधा तंग किया [क]रते हैं। इस देश में याकूत नीलम इत्यादि की बहुत प्रसिद्ध खानें [हैं] जिस के कारण से यह देश बड़ा धनाढ्य है और भी बहुत सी [ब]हु मूल्य वस्तुएं व्यौपार की यहां उत्पन्न होती हैं। मिट्टी का ते[ल] [व]हां से सम्पूर्ण संसार में जाता है लकड़ी भी यहां से लाखों रु[पयों] [की] जाती है इस की राजधानी मांडले है इस में बड़े २ नगर [रं]गून, अवा, अक्याव, मौलमीन इत्यादिक हैं, ईरावती नदी ११[००] [मी]ल लम्बी है इस में जहाज़ चलते हैं इस में जो एक पहाड़ है उ[स] [क]ा नाम यम है।

[ब्र]ह्मा की उपज । ईश्वर की लीला है कि रत्न इत्यादिकों [की] [ख]ानें शहर मांडले के ही आस पास हैं वहां से ६० मील पर ए[क] [मै]दान १०० मील लम्बा उतना ही चौड़ा है उस के प्रत्येक स्थान [में] [ल]ाल, माणिक, सुलेमान पत्थर इत्यादिक अमूल्य रत्न निकलते हैं [रा]जधानी से १५ मील पर सफेद पत्थर की खान है इरावती नदी [के] [कि]नारे १०० से अधिक कुए ऐसे हैं जो १०० गज़ गहरे हैं इन में [मि]ट्टी का तेल भरा है यह तेल उबल कर बाहर निकलता है और [प्र]ति वर्ष तीन लाख मन के लगभग हाथ लगता है बांस के वन बहुत [हैं] चावल १८२ प्रकार का होता है प्रत्येक स्थान में केला अधिकता [से] मिलता है और तमाखू भी प्रत्येक स्थान में अधिकतर बोई जाती

; और इस के त्रुरट बनाकर बिलायत को भेजे जाते हैं, एक प्रकार
का गोंद जो रंगने के काम में आता है प्रति वर्ष लाखों रुपये का
अमेरिका को जाता है, वनों में हाथी और गैंडे अनगिनती होते हैं
इस देश का घोड़ा छोटा होता है और मुर्गे लड़ाई के लिये पाले
जाते हैं सागून की लकड़ी सम्पूर्ण संसार से यहां अधिक होती है।

ब्रह्मा के मनुष्य । यहां के मनुष्य बड़े पुष्ट और कसरती जवा
न होते हैं, कसरत, खेल, और सवारी शिकारी इत्यादि में कोई इन
की समानता नहीं कर सका इन के सिर पर घने बाल होते हैं परंतु
दाढ़ी मूछ बिलकुल नहीं होती सूरत चीन और मलाया लोगों के म-
ध्यवर्ती होती है इस में विरुद्ध २ जातें बसती हैं- प्रथम असली
ब्रह्मी, दूसरे तिलंग जो हज़ारों वर्ष हुए कि तब भारत वर्ष से आकर
यहां बसे थे, तीसरे कारन लोग जो तिब्बत से आये हुए बतलाते हैं
चौथे शान जो पूरब की ओर से आए। यह मनुष्य कृषि कर्म और
व्योपार में बुद्धिमान होते हैं छठे असभ्य जाति जो उत्तर में रहती
है और फ़न असभ्य जो दक्षिण में रहती हैं । भारतवर्ष के तिलंगे
सिकंदर के समय से भी पहले ब्रह्मा में व्योपार के वास्ते गये थे।
क्योंकि ब्रह्मा उस समय में बहुत उन्नति पर था जिस प्रकार कि
फिरंगी लोग अमेरिका में जाकर बसे उसी प्रकार हिन्दू लोग भी
सटांग और सालोन की पृथ्वी पर जाकर बसे जो स्वर्ण भूमि के
नाम से प्रसिद्ध था यहां लोगों ने कम जाति से व्याह व्योहार कर-
ना आरम्भ कर दिया इस लिये अब उन की सूरत व चाल चलन
में बड़ा अंतर होगया॥

ब्रह्मी लोगों का भोजन चावल प्रत्येक अमीर ग़रीब खाता
है सुबह और शाम के खाने के लिये मेर हैं । सुखाई हुई मछलियां
और चींटियां लाख इन का अचार बनाते हैं और चटनी बना कर
खा लेते हैं प्रत्येक स्त्री पुरुष बच्चे तमाखू पीते हैं चाय पीने की भी
रीति है कोई वस्तु खाकर प्रत्येक मनुष्य हाथ मुंह अवश्य धोता
है पान भी बहुत से लोग खाते हैं।

पहिनावा स्त्री पुरुष दोनों ही अपनी चोटी के बाल इतने लंबे रखते हैं कि पांव तक लटकते हैं जिन को वह सिर के पीछे बांध लेते हैं स्त्रियां लहंगा पहिनती और एक जाकट छाती के ऊपर इंस फसी हुई ओढ़नी ओढ़ती हैं सिर पर फूल लगाती हैं और इन्हीं च्योटों में अच्छे सोने के आभूषण पहिनती हैं पुरुष धोती बांधते हैं या ढीला पायजामा पहिनते हैं कुर्ती और जाकट या लम्बा कुर्ता रखा पहिनते हैं धोता उन की छोटी होती है और लहबंद की समान बांधी जाती है जाकट में मिर्ज़ई (छोटी अंगरखी] की समान तनी बंधती हैं बटन नहीं लगते गले में कालर लगाते हैं सिर पर पगड़ी बांधते हैं कमर फेंट कसते या पट्टी बांधते हैं कान और गले में हिन्दुओं के से अभूषण पहिनते है ॥

ब्रह्मा के घर । सर्कारी न्यायालय महल मंदिर और धर्मशाला तो अत्यंत ही सुंदर व बड़े हैं परन्तु अधिक तर मनुष्य छप्पर के झोंपड़ों में रहते हैं क्योंकि पका ईंट का घर बनाना और पलस्तर कराना प्रत्येक मनुष्य के लिये सर्कारी नियमानुसार वर्जित है सब घर एक खंड के होते हैं आर छत के स्थान पर दो पल्लू छप्पर होते हैं दीवारें बहुत कम देखने में आती हैं केवल खम्भों पर घर रहते हैं बहुधा घरों में लकड़ी का बहुत महीन काम होता है घर के आगे चौक बहुत अधिक रखते हैं जिसमें बहुधा अच्छे२ पेड़ लगाते हैं। मेज़ कुर्सियां और सुख के असबाब नहीं रखते चटाइयों पर बैठते और लकडी का तकिया लगाते हैं ॥

ब्रह्मा वालोंका स्वभाव । यहां लोग बड़े सीधे और संतोषी होते हैं कोई धनाढ्य होना नहीं चाहते जिसके निकट अधिक द्रव्य इकट्ठा होजाता है तो वह दान पुण्य व भोज इत्यादिकों में व्यय कर देता है यह अधिक बखेड़े और खटके को नहीं चाहते प्रति समय मगन और निश्चित रहना आनंद समझते हैं माते दिन सवेरे स्नान करना मित्रों में बैठकर ठठोलियां करना अपने खेत इत्यादि देखना और चुरट का धुंआ उड़ाना इस प्रकार दिन काटते हैं ऋतु [जिस में अनाज काटा जाता है] में भी कोई अधिक श्रम नहीं करता कोई

सा नहीं है जिसको यहाँ लोग प्रसन्नता पूर्वक न सहन कर
इसी प्रकार उनका मन नहीं टूटता एक समय जबमांडले नगर
लगी और नगर का बड़ा भाग जल गया कोई वस्तु सिवा-
के घरों के न बची तब एक फिरंगी उनसे दुख प्रकाश
के हेतु आया परन्तु उसको यह देखकर अत्यन्त अचम्भा
कि वे ठट्ठा मारकर हंस रहे हैं और सपूर्ण सामान को जला
देखकर हंसी में नाचते कूदते हैं यह परस्पर बिलकुल नहीं
न न्यायालय में जाना चाहते हैं परन्तु थोड़ीही सी अधिकता
तु को प्राण से मारडालते हैं स्त्रियें सब काम मनुष्यो की भांति
और बाहर निकलती हैं आराम की वस्तुएं बहुत कम रखते
ल एक बक्स सम्पूर्ण आवश्यकताओं के लिये काफी है।
भोजन मिट्टी की हांडी में पकाते और मिट्टी की थाली
में खाते और चमचा लकड़ी का रखते हैं प्रत्येक घर में एक
कुत्ता होता है जुआ बहुत खेलते हैं। मरने और ब्याह आदि
हुत रुपया व्यय कर देते हैं वर्ष में केवल एक फसल
प्रत्येक घर में कपड़ा बुनने का ताना होता है रेशम
पालते हैं वस्त्रों को बहुत गहरे रंग मे रंगते हैं लकड़ी में
दार बेल बूटे बनाते हैं फुटबाल का खेल संसार भर में सबसे
खेलते हैं मुर्गों की लड़ाई भैंसो की लड़ाई, और नावों की
राने के बड़े रसिक हैं।

ा के स्वांग !

संसार भर में कोई देश ऐसा नहीं कि जैस
ों थेटर या नाटक के उन्माद हैं,' कोई ब्रह्मी ऐसा नहीं है
अपनी अवस्था में कभी स्वांग न किया हो प्रत्येक शहर में
होने और प्रत्येक तेवहार या भोज इत्यादिक पर स्वांग हुआ
प्रत्येक मनुष्य उसमें कुछ द्रव्य देता है खुले मैदान में स्वांग
र होते हैं और स्त्री पुरुष मिलकर करते हैं इनमें बोध करना-
चन्द्र जी, कृष्णजी, की लीलाएँ या महाभारत की कथाओं
ांग
ओं

ह्मी गवर्नमट आज कल तो अंगरेज़ी राज्य है परंतु इससे
प्रथम राजा स्वाधीन रहता था, महलों के भीतर बंद रहता था कि-
न्तु प्रजा का साहस नथा जो उसकी ओर आंख उठाकर देख सके सब उसका
अत्यंत प्यार के साथ नम्र भाव से हुकम मानते थे बहुधा राजा के
नौकर बढ़कर मंत्री तक बन जाते थे, छतरियां विरुद्ध २ रंगों की
मुख्य मनुष्यों के लिये सर्कारी नियमानुसार नियत हैं।

रात को बन्दी ग्रहों में बंदियों के न भाग जाने के लिये यह
उपाय किया जाता था कि उनकी टांगों में लकड़ी अटका कर उसमें
रस्सा बांध कर छत में बांध देते थे जिससे सिर नीचे पांव ऊपर
रहते थे। राजा कठोर दंड नहीं देता था और बड़े दयालु भाव से
बहुधा अपराधियों को क्षमा कर देता था, प्रथम ईसाइयों से कुछ
झगड़ा न करते थे परन्तु अन्त में उनकी चपलता देख कर लोग
उनसे घृणा करने लगे परन्तु तौ भी राजा ने उनको कठोर दंड न
दिया, राजधानी नगर बिलकुल एक वर्गमील से अधिक लम्बा
अच्छी बनावटका बसाया गया है चारों ओर शहरके एक पुष्ट कोट
बनाया गया है जो १० गज ऊंचा है जिसके बारह द्वार हैं चारों
ओर १०० फीट चौड़ी खाई है जो प्रति समय पानी से भरी रहती है
रंगून नगर बौध के समय में दो हिन्दू सौदागरों ने बसाया था और
बौध अवतार ने अपने बाल चिन्ह के लिये रख कर १ मंदिर
उस स्थान में बनाया था अब इस मंदिर में तीर्थ के लिये इयाम
कम्बोडिया, के अतिरिक्त जापान और कोरिया तक के यात्री आते
हैं इसी प्रकार मांडले में एक मंदिर है जिसमें सुनहरी सात छत्ते हैं
२५२ खम्भों के ऊपर बुध की जड़ाऊ मूर्ति धरी है दिन भर इसमें
यात्रियों का जमघट रहता है और धूप की सुगन्ध उड़ती है, प्रत्येक
मंदिर में बड़े भारी धातु के घंटे बजाने के लिये टंगे रहते हैं।

ब्रह्मी भाषा। के शब्द बहुत छोटे होते हैं और उनके अर्थ बड़े
गूढ़ होते हैं हिन्दी की भांति बांई ओर से लिखी जाती है शब्दों के
मध्यमें बिलकुल स्थान नहीं छोड़ते, स्वर व्यंजन पाली भाषासे बना-
ये गये हैं और पुस्तकों में संस्कृत के शब्द अधिक मिलते हैं परंतु

। फिर उसमें गौतम बुध की उत्पति और उसके कुटुम्ब के एक राजा का ब्रह्मा में जाकर राज्य स्थित करना नगर बसाना लिखा है। फिर उसके कुटुम्ब में ४२ राजा हुए और बहुत से विरुद्ध २ राजा दूसरे सूबों में रहे १३०० ईसवी में तातारी मुगल क़िल्लाखां ने अपने सिपाही कर लेने को भेजे वह सिपाही ढीठ थे राजा के चाकरों ने उनको मारडाला इसपर क्रोधित होकर क़िल्लाखां ने आक्रमण किया और नगर को नष्टकर डाला फिर एक सूबेदार अलोमपारा नामी ने उन्नति पाई और श्याम के देश तक अपना अधिकार किया सन् १८२२ ई० में जब ब्रह्मा वालों ने आसाम व मनीपूर में आक्रमण किया तो अंगरेज़ों से युद्ध हुआ और हारकर युद्ध का व्यय व थोड़े सूबे देकर संधि करनी पड़ी फिर व्यर्थ बातों पर दो चार और सर्कार अंगरेज़ से युद्ध हुआ जिसका फल यह हुआ कि थीवा राजा अपने कुटुम्ब सहित राज कीय बंदी करके भारत में रक्खा गया और देश में अंगरेज़ी राज्य हुआ उससे प्रथम सब राजा अपने को स्वाधीन समझते थे और किसी फरंगी महाराज से बिल्कुल न डरते थे।

मुतफर्रिक़ात टांगन यहां का प्रसिद्ध है, अमर पूर में संगमर्मर की खान है आवा का नाम यहांवाले रतनपुर कहते हैं इसमें सम्पूर्ण घर लकड़ी के हैं पक्की ईट का सिवाय राजा के और कोई नहीं बना सक्ता भैंस का दूध नहीं पीते। शेर और हाथियों का बन पीगू के निकट है, संखिया, कहरवा, [एक प्रकार का गोंद] सोना, चांदी और रत्नों की खान अधिकता से हैं ताड के पत्ते और सोने के पत्रों पर लिखते हैं, आवागमन को मानते हैं युद्ध के समय प्रत्येक मनुष्य को सेना में काम देना पड़ता है मनुस्मृति की नीति प्रचलित है, नावों पर सोने का काम है, सफेद हाथी की बड़ी प्रतिष्ठा है उसकी सभा अलग लगती है उसके लेखक [मुंशी] चोबदार, मंत्री अलग होते हैं सोने के बर्तनों में खाता पीता है, पानदान, पीकदान भी उसके सामने रहता है, राजा मनुष्यों के कंधे पर चढ़कर निकलता है और उसके मुंह में रुमाल की लगाम लगाते हैं।

तिब्बत का वर्णन ।

यह भारतवर्ष के उत्तर में हिमालय पर्वत के दूसरी ... बड़ा भारी देश है भूटान से लेकर काश्मीर तक बराबर इस सीमा है यह देश इतना ऊंचा है जितना कि आसमान के बादल पड़ते हैं इसी लिये यह अत्यन्त ठंढा है इस देश की अभी तक बहुत कम ज्ञात हुई है क्योंकि केवल दस बीस व दूसरे देशवासी इसमें जानेलगे हैं नहीं तो प्रथम हिन्दुओं के अति और कोई इस की दशा से ज्ञात न था।

मान सरोवर झील इसी देश में है जिसमें हंस मोती चुगा हैं कैलाश पर्वत भी इसी स्थान में है जहां शिव जी रहते थे गंगा, सिंध, ब्रह्मपुत्र इत्यादिक भारतवर्ष की बड़ी नदियों के निकलने का स्थान भी यहीं है।

अद्भुत बात झीलें इस देश में कई हैं जिनमें एक काली २५० मील के फेरे में है इसमें १ टापू ७ मील चौड़ा है उसमें के थोड़े से साधु रहते हैं. जाड़े की ऋतु में जब सम्पूर्ण पानी जम बर्फ़ जम जाता है तब लोग उस टापू में जाकर इन साधुओं भोजन देते हैं, गर्मी की ऋतु में फिर कोई आदमी उस टापू में नहीं सकता क्योंकि इस देश में नावें बिलकुल नहीं होतीं यहां नदियों में रस्सी के बहुत चौड़े और सुन्दर पुल होते हैं ऊपर रस्सियों को पकड़कर नीचे की पतलीसड़क पर रास्तागीर[पथि निश्चित होकर चलता है। और सम्पूर्ण पुल झूले की भांति हिल ... नदियों के मार्ग से चलने के लिये भैंसे की खाल के भीतर ... र कर उसे फैला लेते हैं उस पर सवार होकर जहां चाहें ... फिरते हैं ऐसे चमड़े के जहाज़ बहुधा पंजाब की नदियों में ... जाते हैं।

तिब्बत की आब हवा यह देश बड़ा ठंढा है इस में १२ ... ने जाड़े की ऋतु रहती है गर्मी और वर्षा का कोई नाम भी ना ... जानता ठंढ इतनी अधिक होती है कि बर्फ कभी नहीं पिघलती औ ... टुकड़े सुखाक

नका चूर्ण कर सकते हैं, लकड़ी यहां कभी नहीं सड़ती वरन टूट कर चूर २ होजाती है सम्पूर्ण मनुष्य भेड़ की खाल के कपड़े पहिनते हैं और मुंह से सांस के साथ भाफ निकला करती है और बहुधा वस्तुओं में से विजली निकलती हुई दिखाई देती है - प्रथम तो यह देश बादलों से भी अधिक ऊंचा है इस लिये वहां बादल बिलकुल दृष्टि नहीं पड़ते, दूसरे जो बादल आते हैं वह हिमालय पर्वत से रुककर उसी स्थान पर बरस जाते हैं इस लिये यहां बड़ा ही सूखापन रहता है।

तिब्बत की उपज सुहागा, गंधक और शोरे के अतिरिक्त यहां सोना बहुत से स्थानों में निकलता है पेड़ बिलकुल उत्पन्न नहीं होते परंतु हरी घास के मैदान बहुधा स्थानों में पाये जाते हैं बनैले जानवर भागे फिरते हैं एक नये प्रकार का जानवर सुरागाय केवल इसी देश में होता है इसके पांव बहुत छोटे होते हैं और शरीर में बहुत से लम्बे २ सफेद बाल रीछ की समान होते हैं यह पालतू होती है परंतु तो भी ठीक आज्ञा नहीं मानती प्रति समय नाक में नकेल रहती है तब लकड़ी के बल काम करती है यह हल जोतने को स्वीकार नहीं करती परंतु बोझा लादकर लेजाने में अद्वितीय है —हाड़ी कठिनाई से भरे हुए रास्ते जहां बकरी के सिवाय और कोई जानवर नहीं चढ़ सकता यह सहज ही में जाती है और चाहे राह में दाना पानी कुछ न मिले परंतु तो भी किसी न किसी भांति अपना गुज़र कर ही लेती है. जिस भांति कि रेगिस्तान की नाव ऊंट है ऐसे ही पर्वतस्तान की नाव यह सुरागाय है इसकी पूंछ का चंवर बनता है जो मूल्यवान और सुन्दर होता है. सुरागाय की सुन्दरता का इसी से अनुमान होसकता है कि उसकी पूंछ के बाल कैसे घने, लम्बे और पतले होते हैं तिब्बत में बहुधा इस पर सवार भी होते हैं बनैले घोड़ों के झुंड भी चरते फिरते हैं परंतु मनुष्य से कोसों भागते हैं, इनके बाल पृथ्वी तक लटका करते हैं भेड़ें भी अधिक होती हैं जो अपने स्वामी की सीटी को भली प्रकार पहिचानती हैं और उसकी आज्ञा पूरी करती हैं, कुत्ते बहुधा भेड़ों के रेवड़ को राह बताते हैं।

त्वत के निवासी । मनुष्य यहा के वासियों के ...
तार जाति के हैं बड़े पुए गोरे रंग के सीधे सच्चे होते हैं
को मानते हैं लामा गुरु को पूजते हैं और हिंदुओं की
की रीतें रखते हैं पुरुष लम्बा चोगा [जामे की समान
पहन कर कमर पर फेंट कसते हैं, सिर पर टोपी
जिस में दोनों ओर कानसे निकले रहते हैं ऊपर एक कपड़ा
गले में डालते हैं ठंढ के कारण से पावों को भी अच्छी
रहते हैं प्रत्येक मनुष्य गले में यंत्र और कान में बालियां
की आवश्यकीय वस्तुएं जैसे चाकू, डोर, तमाखू, जौ के
इत्यादि प्रत्येक मनुष्य अपनी फेंट के भीतर रखता है औ
सी ऊन भी रखता है क्यों कि वह चलते २ उस को
भी ऐसा ही चोगा पहिन कर कमर बांधती हैं ऊप
शाल ओढती हैं सिर पर टोपी पहिनती हैं और जो कुछ
है उस को सिर के ऊपर बांध लेती हैं बालों की चोटी
हीं होती वरन उन की गुंथावटें दोनों ओर होकर का
एक कुन्ड सा बना लेती है डाढी किसी मनुष्य के नहीं

सब रखते हैं यह मनुष्य वर्षों में कदाचित
करते हैं और होली दिवाली में वस्त्र पलटते हैं जब कि
ह जीर्ण हो कर फट जाते हैं परंतु इन की आरोग्यत
नहीं पड़ता बहुत बड़ी अवस्था में मरते हैं पुष्ट ऐसे हो
भी दो मन बोझ लेकर पहाड़ में चढ जाती है शब्द
होता है

त के घर । यहां एक मुख्य भांति के घर बनते हैं प्र
३ खंड का होता है नीचे के खंड में चौपाये रहते हैं लक
इत्यादि इक ट्ठा रहताहै, बीच के खंड में घर का स्वामी रह
से ऊपर के खंड में एक मंदिर होता है दीवारें ईंट, चू
घर की गढ़ की समान होती हैं छप्पर भी छाते हैं भोजन
...

य सवेरे दोपहर और शाम को चाय पीता है यदि चाय न मिले
। उस से कुछ काम न हो और सिर में पीड़ा होने लगे [हमारे
श की समान अफीम और हुक्के का बर्ताव नहीं है]

तिब्बत में ब्याह । यहां अद्भुत रीति है एक स्त्री कई पुरुष
रती है सगाई (सम्बन्ध) बहुत छोटी अवस्था में होजाती है
बसे बड़े भाई के संग ब्याह होता है और सब भाई उसीपर सं-
ोष करते हैं ब्याह के पश्चात मां बाप उस घर को छोड़ दूसरे घर
। बसते हैं और बड़ा बेटा उस कुटुम्ब का स्वामी समझा जाता है
ब सब भाई उस के संग प्यार और आज्ञा वर्ती के साथ काल क्षेप
रते हैं ब्याह में सम्पूर्ण गांव के मनुष्य दुलहिन को कुछ भेंट करते
ं संतान सब भाइयों की पंचायती होती है कोई स्त्री कभी रांड
हीं होती यहां की स्त्रियों को आभूषणों की बिलकुल इच्छा नहीं
ृतक को कई दिनतक रस्सी से बांधकर घर में खड़ा रखते हैं उस
े पश्चात् पण्डितों से महूर्त पूछकर लाश कुत्तों को खिलादेते हैं-
धनाढ्य और पुजारियों की लाश जलाई जाती है जिस प्रकार इस
देश में श्मशान और समाधिस्थान [कब्रस्तान] होते हैं उसी प्र-
कार तिब्बत में ऐसे घर होते हैं जिन में सैकड़ों कुत्ते लाशों को खाने
के लिये पालतू रहते हैं ७ दिन तक लामा पुजारी मृतक के घर के
छप्पर पर बैठकर पानी लुढ़काया करते हैं फिर गरुड़पुराण की स-
मान किसी पुस्तक की कथा बांचते हैं, चिता की राख में दूसरे दिन
पुजारी आकर ढूंढ़ता है कि किस जानवर के पैर का चिह्न है और
जिस का चिह्न वहां दृष्टि पड़ता है उस जानवर की योनि में इस
[illegible] लेना लिखाते हैं।

ली बातें कहता है जिनको पंडित लोग लिखते जाते हैं, रात ।
मय सम्पूर्ण पुजारी अपनी छतों पर बैठकर और लाल लालटैन
काशित करके भजन गाते हैं लामा लोग मुख्य २ नियत कियेहुए
त्र पढ़िनते हैं । और दान पुण्य पर कालक्षेप करते हैं पुजारी के
त्र वही मनुष्य बनसकता है जो इसकी परीक्षा पास करले ।
दीवारों पर बड़े देवताओं की मूर्त्ति और पवित्र नगरों और
देरों का चित्र होता है प्रत्येक गांव में एक झंडा होता है जिसपर
मने पदम होमपर लेख लिखा रहता है, वज्र की पूजा होती है
ला में १०८ दाने होते हैं, जादूगरों की माला और भांति की होती
यद भूत जिनसे रक्षा के लिये काम में लाई जाती है । इस प्रकार
मंत्र पूजा में पढ़े जाते हैं ओम् मार सगम स्वाहा । ओम सरेश्व
डिया हरो परी स्वाहा इत्यादि । मंदिरों में शंख बजाया जाता है
म् शब्द की बड़ी प्रतिष्ठा व पूजा होती है प्रत्येक मंदिर में पुस्त-
लय भी होता है—डौरू, मजीरा और तुरही के बाजे बजाते हैं एक
व तेवहार पर पहाड़ पर चढ़कर कागज़ के घोड़े बनाकर सब
[illegible]

तिब्बत को गये हिंदी के अक्षरों में और छह अक्षर मिलाकर त्बत वालों ने अपने स्वर व्यंजन बना लिये हैं मत की पुस्तकों में हुधा शब्द और नाम संस्कृत भाषा के हैं यहां की लिखावट में अक्षर प्रकार के होते हैं और चार विरुद्ध २ कामों में वर्ते जाते हैं. कंजोर, जोर यहां की मत की पुस्तकें हैं जिनमें से प्रथम तो १०८ जिल्दों में सरी २२५ जिल्दों में बंटी हैं संसार में सब से अधिक पुराने मत पुस्तकालय इसी देश में हैं हिमालय की वर्फी शिखाओं पर बादलों अधिक ऊंचे स्थानों में पहाड़ी कंदराओं में सैकड़ों पुस्तकालय तैमान हैं। जिनको केवल तपस्वी लोग देखते हैं लाखों साधू महात्मा हिमालय और तिब्बत के मैदान में छिपे हुए तप कर रहे हैं और दोन २ खोजों से अत्यन्त अद्भुत स्थान ज्ञात होते जाते हैं, लासा पुस्तकालय में एक पुस्तक मिली है कि जिसमें लिखा है कि ज़रत ईसा इस स्थान में आकर पढ़े थे यह देश संसार के प्रारम्भ आज तक शत्रुओं के नष्ट करने से बचा रहा है और अत्यन्त हरा भरा और मनुष्य संख्या अधिक है वरन मनुष्यों की उत्पत्ति और उन्नति और सभ्यता का प्रारम्भ इसी स्थान से हुआ इस लिये पुरानी सभ्यता और विद्या के चिन्ह अब इस ही में हाथ ग सके हैं इस कोष की खोज में सैकड़ों फिरंगी देशाटन करने वाले सहस्रों प्रकार के दुख उठाकर यहां जाते हैं एक बंगाला विद्वान ने ऐसा स्थान ढूंढा है कि जहां महाभारत के समय के साधू बैठे तप कर रहे हैं उस स्थान का नाम सिद्धाश्रम है इसकी राह किसी को ज्ञात नहीं और न वहां प्रत्येक मनुष्य जा सकता है यह पहाड़ इतना ऊंचा है कि जहां कभी पानी नहीं बरसता और वहां सर्दी के कारण से धूप की प्रचण्डता दुख नहीं दे सकी इस लिये वहां घर बनाने की कुछ आवश्यकता नहीं इत्यादि।

तिब्बत की बुराइयां इस में बड़े २ नगर लद्दाख - लाहोल-लेह-गिघगट-सर्प्ती-लासा इत्यादि हैं चीन के बादशाह को केवल कर दिया जाता है शेष सब देशी प्रबन्ध देशी मनुष्य करते हैं। लामा-गुरु नाम मात्र को राजा है सम्पूर्ण कार्य्य एक सभा द्वारा होते हैं

राजा की बेटी दूसरी नैपाल के राजा की बेटी यह दोनों रानियां धमत रखती थीं उन्होंने राजा से पत्र कर के बड़े मंत्री भूमी न्प को भारतवर्ष भिजवाया वह यहां से बुधमत की पुस्तकोंका था कराकर ले गये इसी प्रकार वहां बुधमत फैला यह रानियां ड़ी बुद्धिमान थीं और विद्वानों को बड़ा पारितोषिक देती थीं उन निकट ऐसी बुध की मूर्त वर्तमान थीं जिससे अचम्भित २ बातें खाती थीं इसके पश्चात् नालंद से एक ब्राह्मण पद्म शम्भु गया सने वहां लामा का मत चलाया जिसमें हिन्दू और बुध दोनों म की बातें मिली हुई हैं इसने जादू मंत्र और शकुन इत्यादि को चालित किया मन्जसुरी नाम एक ब्राह्मण था जिसने नैपाल में धमत फैलाया उसको तिब्बत वाले देवता मानते हैं और एक डित अमितभा की भी पूजा होती है। सन् १२६० ई० में जब तातार मुगल बादशाह किब्लाखां ने तुरकिस्तान, चीन, ब्रह्मा, कश्मीर त्यादि सम्पूर्ण देश जीत लिये तो तिब्बत को भी अपने बड़े राज्य एक भाग स्थिर किया उसने पंडितों को बुलाकर उनकी शिक्षा नी और अपनी सम्पूर्ण सेना सहित बुधमत स्वीकार किया और तिब्बत के राजकीय अधिकार लामा गुरू को देदिया फिर सन् १७०० ० के लगभग इसको चीन वालों ने जीत लिया सन् १८४० ई० में द्दाख को महाराजा कश्मीर ने जीत लिया सन् १८५० ई० में सिकम का राज अंगरेज़ों के अधिकार में आया सन् १८६४ ई० में तिब्बत और नैपाल वालों में बखेड़ा हुआ परंतु अंत में दोनों ने चीन की दास त्वता स्वीकार परंतु चीन का राज्य बहुत भारी है और राज धानी बहुत दूर है इस लिये महाराज कुछ ध्यान नहीं करते और न देशों को अपने झगड़े आप निबटाने को छोड़ देते हैं इस देश में रुपये को बहुतकम प्रतिष्ठा है। तिब्बत वाले पथिकों से रुपया नहीं मांगते सुई, डोरा, बटन इत्यादिक ऐसी कार्य्य वाही की वस्तुएं लेकर खाने की वस्तु बेचते हैं, [illegible]

तिब्बत को गई हिंदी के अक्षरों में और छह अक्षर मिलाकर
तिब्बत वालों ने अपने स्वर व्यंजन बना लिये हैं मत की पुस्तकों में
हुआ शब्द और नाम संस्कृत भाषा के हैं यहां की लिखावट में अक्षर
प्रकार के होते हैं और चार विरुद्ध २ कामों में वर्ते जाते हैं. कंजोर,
जोर यहां की मत की पुस्तकें हैं जिनमें से प्रथम तो १०८ जिल्दों में
सरी २२५ जिल्दों में बंटी हैं संसार में सब से अधिक पुराने मत
पुस्तकालय इसी देश में हैं हिमालय की बर्फी शिखाओं पर बादलों
अधिक ऊंचे स्थानों में पहाड़ी कंदराओं में सैकड़ों पुस्तकालय
र्तमान हैं। जिनको केवल तपस्वी लोग देखते हैं लाखों साधू महात्मा
ी हिमालय और तिब्बत के मैदान में छिपे हुए तप कर रहे हैं और
वीन २ खोजों से अत्यन्त अद्भुत स्थान ज्ञात होते जाते हैं, लासा
े पुस्तकालय में एक पुस्तक मिली है कि जिसमें लिखा है कि
ज़रत ईसा इस स्थान में आकर पढ़े थे यह देश संसार के प्रारम्भ
आज तक शत्रुओं के नष्ट करने से बचा रहा है और अत्यन्त
ी हरा भरा और मनुष्य संख्या अधिक है वरन मनुष्यों की उत्पत्ति
ौर उन्नति और सभ्यता का प्रारम्भ इसी स्थान से हुआ इस
लिये पुरानी सभ्यता और विद्या के चिन्ह अब इस ही में हाथ
ग सके हैं इस कोष की खोज में सैकड़ों फिरंगी देशाटन करने
ाले सहस्रों प्रकार के दुख उठाकर यहां जाते हैं एक बंगाली विद्वा-
ने ऐसा स्थान ढूंढा है कि जहां महाभारत के समय के साधू बैठे
प कर रहे हैं उस स्थान का नाम सिद्धाश्रम है इसकी राह किसी
ो ज्ञात नहीं और न वहां प्रत्येक मनुष्य जा सक्ता है यह पहाड़
र इतना ऊंचा है कि जहां कभी पानी नहीं बरसता और यहां
सर्दी के कारण से धूप की प्रचण्डता दुख नहीं दे सकी इस लिये
यहां घर बनाने की कुछ आवश्यकता नहीं इत्यादि।

तिब्बत की बुराइयां इस में बड़े २ नगर यहाख - लाहोल-
ोह-गिलगट-सप्ती-लासा इत्यादि हैं चीन के बादशाह को केवल कर
देया जाता है शेष सब देशी प्रबन्ध देशी मनुष्य करते हैं। लामा-
ुरु नाम मात्र को राजा है सम्पूर्ण कार्य्य एक सभा द्वारा होते हैं

के राजा की बेटी दूसरी नैपाल के राजा की बेटी यह दोनों र
बौधमत रखती थीं उन्होंने राजा से पक्ष कर के बड़े मंत्री
शाम्ब को भारतवर्ष भिजवाया वह यहां से बुधमत की पुस्त
उलथा कराकर ले गये इसी प्रकार यहां बुधमत फैला यह र
बड़ी बुद्धिमान थीं और विद्वानों को बड़ा पारितोषिक देतीं थी
के निकट ऐसी बुध की मूर्ति वर्तमान थीं जिनसे अचम्भित र
दिखाती थीं इसके पश्चात् नालंद से एक ब्राह्मण पद्म शम्भु
उसने वहां लामा का मत चलाया जिसमें हिन्दू और बुध दोन
तों की बातें मिली हुई हैं इसने जादू मंत्र और शकुन इत्यादि
प्रचालित किया मन्जसुरी नाम एक ब्राह्मण था जिसने नैपा
बौधमत फैलाया उसको तिब्बत वाले देवता मानते हैं और
पंडित अमितभा की भी पूजा होती है। सन् १२६० ई० में जब र
रो मुगल बादशाह किब्लाखां ने तुर्किस्तान, चीन, ब्रह्मा, क
इत्यादि सम्पूर्ण देश जीत लिये तो तिब्बत को भी अपने बड़े
का एक भाग स्थिर किया उसने पंडितों को बुलाकर उनकी
सुनी और अपनी सम्पूर्ण सेना सहित बुधमत स्वीकार किया
तिब्बत के राजकीय अधिकार लामा गुरू को देदिया फिर सन् १
ई० के लगभग इसको चीन वालों ने जीत लिया सन् १८४० ई
लद्दाख को महाराजा कश्मीर ने जीत लिया सन् १८५० ई० में सि
का राज अंगरेज़ों के अधिकार में आया सन् १८६४ ई० में तिब
और नैपाल वालों में बखेड़ा हुआ परंतु अंत में दोनों ने चीन
दास रखना स्वीकार परंतु चीन का राज्य बहुत भारी है और र
धानी बहुत दूर है इस लिये महाराज कुछ ध्यान नहीं करते अ
इन देशों को अपने झगड़े आप निबटाने को छोड़ देते हैं इस दे
में रुपये की बहुतकम प्रतिष्ठा है। तिब्बत वाले पथिकों से रुपया न
मांगते सुई, डोरा, बटन इत्यादिक ऐसी कार्य्य चाही की वस्तु
लेकर खाने की वस्तु बेचते हैं, इन्कमटैक्स की यह दशा है कि ए
सौदागर १) रुपया वर्ष देकर देश के भीतर फिर सकता है।

तिब्बत ५ और लिखावट इस देश की भाषा ति

: तिब्बत को गई हिंदी के अक्षरों में और छह अक्षर मिलाकर
ब्बत वालों ने अपने स्वर व्यंजन बना लिये हैं मत की पुस्तकों में
हुधा शब्द और नाम संस्कृत भाषा के हैं यहां की लिखावट में अक्षर
प्रकार के होते हैं और चार विरुद्ध २ फार्मों में वर्ते जाते हैं. कंजोर,
जोर यहां की मत की पुस्तकें हैं जिनमें से प्रथम तो १०८ जिल्दों में
सरी २२५ जिल्दों में बंटी हैं संसार में सब से अधिक पुराने मत
पुस्तकालय इसी देश में हैं हिमालय की बर्फी शिखाओं पर याद्वलों
अधिक ऊंचे स्थानों में पहाड़ी कंदराओं में सैकड़ों पुस्तकालय
र्तमान हैं। जिनको केवल तपस्वी लोग देखते हैं लाखों साधू महात्मा
ो हिमालय और तिब्बत के मैदान में छिपे हुए तप कर रहे हैं और
याँन २ लोगों से अत्यन्त अद्भुत स्थान ज्ञात होते जाते हैं, लासा
े पुस्तकालय में एक पुस्तक मिली है कि जिसमें लिखा है कि
ज़रत ईसा इस स्थान में आकर पढ़े थे यह देश संसार के प्रारम्भ
र आज तक शत्रुओं के नष्ट करने से बचा रहा है और अत्यन्त
ी हरा भरा और मनुष्य संख्या अधिक है वरन मनुष्यों की उत्पत्ति
ौर उन्नति और सभ्यता का प्रारम्भ इसी स्थान से हुआ इस
िये पुरानी सभ्यता और विद्या के चिन्ह अब इस ही में हाथ
ग सके हैं इस कोष की खोज में सैकड़ों फिरंगी देशाटन करने
ाले सहस्रों प्रकार के दुख उठाकर यहां जाते हैं एक बंगाल विद्वा-
न ने ऐसा स्थान ढूंढा है कि जहां महाभारत के समय के साधू बैठे,
प कर रहे हैं उस स्थान का नाम सिद्धाश्रम है इसकी राह किसी

सेनापति चीनी हैं जो केवल देशमें शांति उपस्थित रखते हैं स्त्रियां
जब घर से बाहर निकलती हैं तो मुंह पर स्याह मिट्टी पोत लेती
जिससे कुरूप ज्ञात होवें यह नियम दो सौ वर्ष हुए एक लामा गुरु
ने स्त्रियों का सतीत्व स्थिर रखने के लिये प्रचलित किया था देशा
टन करने वालों को राह यहां कठिन है प्रथम तो यहां के मनुष्य
परदेशी को मारडालते हैं और माल छीन लेते हैं दूसरे बनों में
घास पानी का सुख नहीं किसी २ स्थान में जहां सूखी घास के
बन है वहां आपसे आप आग लगकर कोसों तक वहां की वस्तुओं
को भस्म करदेती है बटोही भी उसमें भस्म होजाते हैं पानी मिल
ता नहीं जिससे उसको बुझावें । राह में पग पग पर मृतकों के ढेर
व हड्डियों व पिंजरों के ढेर मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि
प्रथम कितने देशाटन करने वाले यहां नष्ट होचुके हैं सिर प
गिद्ध मंडराते हैं कि प्राण निकलें और नोचकर खावें ठंढ [illegible]
इतनी अधिकता है कि किसी दिन जब वर्फ पड़ता है तो निर्बल
मनुष्य चलते २ अकड़ कर जम जाता है फिर हिल नहीं सकता मृ
[illegible] के ह्र मान स्थिर रहजाता है पर जीवित ज्ञात होता है और जो
निकल जाता है गलता सड़ता नहीं। नदी नाले पार उतरने में
[illegible] बैठ जाता है तो उठना कठिन पर वह फिर उस स्थान पर
[illegible] में गल जाता है। इत्यादि

तिब्बत में हिमालय पहाड़ और कैलाश के मध्य में मान
सरोवर झील १५ मील लम्बी और ११ मील चौड़ी है इसको हिन्
दू और बौद्धमत वाले पवित्र जानते हैं एक और झील है जिसका
नाम रावणहृद [illegible] कहते हैं [illegible] अधिक होता है तिब्बत
[illegible] कश्मीर में जाता है फिर उसके दुशाले बनकर कश्मीर
[illegible] को आते हैं लामा गुरु को [illegible] समझते हैं और कहते हैं
[illegible] [illegible] कभी नहीं मरता [illegible] में [illegible]
[illegible] होजाता है तो वह [illegible] शरीर को [illegible] जाता है
[illegible] यह है कि [illegible] [illegible] हो [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible]
[illegible] होता है और [illegible] के [illegible]

समझ कर गद्दी पर विठाते हैं तो वह सब पहले जन्म की बातें जा
नता है और उसके शरीर पर मुख्य चिन्ह भी होते हैं सन् १८७
ई० में कप्तान टरनर साहब जो सर्कार अंगरेज़ की ओर से राजदू
धनकर तिब्बत को गए थे उन्हों ने लामा के दर्शन किये थे वह लि
खते हैं कि उस की अवस्था केवल १८ महीने की थी परंतु वह स
बातें समझता था और प्रत्येक बात का उत्तर सैन द्वारा दे देता।
वरन उस ने अपने हाथ से उठा कर कुछ मिठाई कप्तान साहब
दी और सेवक से सैन में कहा कि चाय लावे लामा जो मृतक हो
हैं तो उस की देह को चांदी में मढ कर पूजा के लिये रख छोड़ते
सब स्थानों से यहां का देशी प्रबंध उत्तम है सभा में कई मंत्री
एक का काम यह है कि प्रत्येक काम पर योग्य मनुष्य को निय
करे और विचार रक्खे कि वह अपने कर्तव्य को सचाई और ध्या
से करता है या नहीं।

लंका का वर्णन ॥

ऐसा कोई हिन्दू नहीं जो इस के नाम से ज्ञात न हो इस को हमारे श्रीरामचन्द्रजी ने जीत कर के राक्षसों के राजा रावण को मार कर अपनी रानी सीताजी को बंदी से छुड़ाया था लिखा है कि लंका का सम्पूर्ण नगर सुवर्ण का बना हुआ था और मय राक्षस ने इसे बनाया था यह राक्षस पाताल लोक का रहने वाला था उसने इस स्थान पर अपना राज्य स्थिर किया और दूसरे टापू बसाये यह अद्भुत टापू है जिस के मद्धे मूर्ख और विद्वान दोनों के विचार असत्य हैं मूर्ख हिन्दू तो यह समझते हैं कि यहां अब तक राक्षसों का राज है और मनुष्य जा नहीं सकता और विद्वान अंगरेज़ यह जानते हैं कि सम्पूर्ण रामायन की कथा कल्पितहै और उसकी सब बातें विरुद्ध हैं और इतिहासिक समाचार नहीं-अपने हिंदू भाइ‌यों को तो हम केवल इतना ही सुनाते हैं कि अब अंगरेज़ी राज्य जहाज़ पर बैठ कर प्रत्येक मनुष्य यहां जा सकता है रेल डा और तार भी यहां सब मौजूद हैं और बहुत से भारत वा यहां पर रहते हैं और चिट्ठी पत्री यहां से आती जाती हैं जै हमारे नगर धन और मनुष्य हैं वैसे ही यहां के राक्षसों की भार वर्ष में क्या कमी है जो बेचारी लंका से भय खाते हैं।

साहब बहादुर भी अब यह भोली बातें भूलजावें नवीन विद के खोजों से सिद्ध हो गया है कि हमारी सब कथायें ऐति हासिक समाचार हैं सितम्बर सन् १८६५ ई० के समाचा रेवयो आफ़ रेवयूज़ में आरटिकल छपाहै जिस में लिखा है कि एक फ्रांसीस डाक्टर लीप्लून्ज़न नामक ने अमेरिका देश के यूकटाब के चिचिनइज़ा नगर और अक्समल के पुराने खंडरों के चिह्नोंकी खोज कर के और यहां की पुरानी जाति मय की भाषा मयाक्ष के हस्त लिखित इतिहास तरधनों का उल्था करवाया तो ज्ञात हुआ कि प्रथम अमेरिका में सूर्य वंशी और नाग वंशी राजा ओं का राज्य था और उनके एक राजा मय ने जाकर अमरीका के

पास यहां टापू बसाये सोना जो अमेरिका में अधिकतर उत्पन्न होता है कदाचित यह राक्षस जहाज़ों में भर कर लंकाको लाया होगा और जिस प्रकार अमेरिका में उस के रहने के घर सोने के थे वैसे ही उन से यहां बनाये गये जिससे सोने की लंका मशहूर हुई उसी की संतान राजा रावण था अमेरिका के खंडहरों में हनूमानजी और गणेशजी की मूर्त्तियां भी मिली हैं, इस तर्क को भली भांति हम दूसरी पुस्तक [पुराने भारतवर्ष] में करेंगे - कुछ हो-हम अब लंका का वह वर्णन करते हैं जो अंगरेज़ ऐतिहासिकों और देशाटन करने वालों ने अपनी पुस्तकों में लिखा है ॥

यह एक टापू भारतवर्ष के दक्षिणमें है इसका क्षेत्रफल २५००० वर्ग मील है अर्थात् २७० मील लम्बा और १४० मील चौड़ा है भारत वर्ष से इसका अंतर केवल ६० मील है मध्य में समुद्र है परन्तु कहीं कहीं पृथ्वी के ऐसे टुकड़े पाये जाते हैं जिन से रामचन्द्रजी ने — [illegible]

अब तक [illegible]

[illegible] था उसमें जहाज़ नहीं निकल सकता था और केवल गज़ दो गज़ गहरा जल था जिस पर मनुष्य भली भांति से पार हो जाता था और चारो ओर बालू के ढेर दृष्टि आते थे परन्तु अंगरेज़ों ने जिस प्रकार कि स्वेज़ नहर खोद कर जहाज़ों की राह निकाली पनामा का बनाया उसी प्रकार यह राह भी खोद कर स्वच्छ और गहरा बना लिया। इस में एक नदी महावली गंगा १४० मील लम्बी है और एक पहाड़ है जिसपर कुला आदम अर्थात् एक अत्यंत अद्भुत चिह्न मनुष्य के पांव का है जो लगभग २ गज़ के लम्बा है मुसलमान कहते हैं कि बाबा आदम बैकुंठ से इसी स्थान पर गिरे थे और यहां के देशी निवासियों का कथन है कि महात्मा बुधके चरणों का चिह्न है जल वायु यहां की उष्ण है वर्षा में बिजली का प्रकाश और कड़क सम्पूर्ण पृथ्वी को हिला डालती है और एक ही बौछार में जल जंगल एक हो जाता है चावल अधिक बोया जाता है केला भी अधिक होता है वन में हाथियों के झुण्ड के झुण्ड फिरते हैं चौपाये सब होते हैं परन्तु भारतवर्ष से

थी पर सवार दो दाय में बैठे रहते हैं दूसरे शिकारियों
चारों ओर से जब घेरकर शोर मचाते बाजे बजाते हाथिय
भुंड को उन कोटों के द्वारे पर खदेरकर घुसा देते हैं फिर
हाथी बनैले हाथियों के निकट जाता है और शिकारी धीरे
पैर में ज़ंजीर का फंदा डालकर पेड़ से बांध देते हैं फिर थो
तक सेवा टहल से साधते हैं प्रथम तो विचारा बुद्धिमान ह
दी होने पर भोजन छोड़ देता है परंतु अंत में भूख से व्या
कर और अच्छे २ खाने देखकर स्वीकार करता है. फिर
अपने प्रबन्ध कर्त्ता से प्यार करने लगता है और उसकी
मानने लगता है। फंदा डालते समय भी हाथी मनुष्य पर अ
नहीं करता यह अचम्भा है।

लंका के निवासी इस टापू में दो जातियें पुराने स
रहती थीं एक का नाम यक्ष अर्थात् राक्षस दूसरे नागा
सांपकी जात परंतु इन दोनों जातों के मिलजाने से एक नई
उत्पन्न होगई जो अब तक वहां के वनों और पर्वतों पर वर्त
और वेधा कहलाती है यह मनुष्य बिलकुल असभ्य हैं और
पर समय व्यतीत करते हैं पांच से आगे गिनती नहीं जानते
की कुछ प्रतिष्ठा नहीं समझते। परंतु नारियल, नमक, कुल्हाड़ी
बर्तन इत्यादि लेकर अपने शिकार की उपज को बड़ी प्रसन्न
ब्यक देते हैं परंतु बहुधा सभ्य मनुष्यों के सामने नहीं आते जो
विक्रयार्थ स्वीकार होती है उसको नियमित स्थान पर रखकर
प जाते हैं फिर दूसरे दिन उसके मूल्य को उसी स्थान से अ
उठा लेजाते हैं यह मनुष्य अब केवल १० हज़ार शेष रह ग
यह बिलकुल काली और बुरी सूरत के और बलवान होते हैं, द
वहां के देशी मनुष्य जो इस समय असली निवासी ज्ञात हो
परंतु वास्तव में सहस्रों वर्ष प्रथम उत्तरी देश से यहां आकर बसे
यह मनुष्य शंघाली कहलाते हैं और अच्छी सूरत के होते हैं।
लद्वीप की पद्मनी इन्हीं स्त्रीयों के बारे में प्रसिद्ध हैं यह लोग सं
भाषा बोलते हैं और हिंदुओं कासा मत रखते हैं स्त्री पुरुष
बाल कांधे पीछे बंधे हुए।

लेये विदेशी मनुष्य को पहिचानने में कठिनता होती है इनके
रेक्त बहुत से भारतवासी, थोथ मूर अर्थात् यवन हैं जो ता
भाषा बोलते हैं और बहुधा दूकानदार हैं या राजगीरी कर
सिंगलियों के अतिरिक्त देशी ईसाई जो अंगरेज़ी बोलते हैं कोट
पतलून पहिनते हैं, मोची, दरज़ी या क्लर्की का काम करते हैं
मनुष्य संख्या ३ लाख के लगभग है।

लंकावालों की रीति और स्वभाव। अब अंगरेज़ी
राज्य की उन्नति है स्त्रियां बाहर निकल कर मनुष्यों की भांति
काम करती हैं यंत्र मंत्र टोना इन का प्रचार है इसलिये कार्य सब
पूछ कर किये जाते हैं शकुन का बहुत विचार करते हैं प्रत्येक म
अपने सम्पूर्ण काम अपने आप करता है असत्य बोलने से
शरमाते, बड़े परिश्रमी होते हैं और इतने ही घमंडी, परंतु क्रोध
को बहुत ही न्यून आता है और अपने दास तक को नहीं
बड़े कृपण होते हैं, चोरी इस देश में कोई नहीं करता शराब य
इत्यादिक भी नहीं खाते परंतु व्यभिचार से बचाव नहीं करते
या मोज़ा कोई नहीं पहिनता क्योंकि सवारी नियमानुसार
का अधिकार राजा को है इसी प्रकार दो खंड के घर बनाने,
रेशम छाते और सफ़ेदी से पोतने का भी केवल प्रतिष्ठित पुरुषं
ही आज्ञा है स्त्रियें बड़ी बुद्धिमान और मितव्ययी होती हैं
जाति का बड़ा विचार है प्रत्येक जाति के पहिनाव का ढंग
एक दूसरे के विरुद्ध व अलग २ है पहिनावा धोती बांधकर
कर पहिनना और १ भाग धोती का छाती पर डालना - सामा
घरों में बहुत ही न्यून होता है कुर्सी पर केवल राजा बैठता है
लिये और सब कोई मोढे रखते हैं, चटाई पर सोते हैं, चांवल
हैं, गऊ का मांस खाना अपराध समझते हैं किसी के हाथ का
में छिया हुआ जल नहीं पीते, भोजन के उपरांत हाथ मुंह
धोते हैं ब्याह भी चाव कर देते हैं परंतु यह कुछ दृढ़ नहीं
नई औरत जब चाहें छोड़ देवें और दूसरा
करें इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य कम से कम ५ तक स्त्रियां र
उपरांत दूसरा करके दिखाने देता है हिन्दुओं की भांति

जाती है और मंडवे की भी हानि होती है पुरुष १
रखता है परंतु स्त्री कई पुरुष एक साथ रख स
हाँ यदि तिलाक देने के समय संतान होवे तो लड़के
और लड़कियां स्त्री के संग जाती हैं बच्चों के नाम
पलटे जाते हैं यदि कोई चोरी करता हुआ पकड़ा जा
७ गुणा जुर्माना देना पड़ता है यदि ऋणी ऋण से
तो साहूकार उस का कुल माल और उस को व उस
को अधिकार में रख सकता है रोगी को औषधि जई
देते हैं वैद्य से औषधी नहीं कराते बड़ी जाति के म
दाह करते हैं नीच जातें गाड़ती हैं ऋण लेने को इन
धत [स्वभाव] है

लंका की भाषा कागज़ के स्थान पर ताड़ के प
की क़लम से खुरच कर लिखते हैं फिर उस पर कोय
हैं जिस से अक्षर काले हो जावें शब्द संस्कृत और
के संयुक्त काम में लाये जाते हैं बौध मत की बहुत
हैं जिन में बहुधा बुध के उत्पन्न होने का वर्णन है प
बुध के ५५० बार जन्म ग्रहण करने का संक्षिप्त वर्णन है
आशययुक्त बातें हैं जिन से मत धर्म और
शिक्षा साथ ही होती जावे ऐतिहासिक पुस्तकें जैसी
में मिलती हैं किसी और देश में नहीं इनमें धार्मिक आर
तक का वर्णन संक्षिप्त लिखा है बहुधा पुस्तकें पद्य श्लो

सिंगाली मत । लंका वालों के घर का मत तो
परन्तु यहां सहस्रों वर्ष तक हिन्दुओं का राज्य रहा औ
बड़ी प्रचंडता पर रहा इस से अब इन का मत ऐसा
जिस में सब मतों की बातें हैं एक ही भजन में बुध
महादेव तीनों की पूजा कर लेते हैं सम्पूर्ण धर्मशास्त्र की
मत की हैं परन्तु उस के विरुद्ध जादू मंत्र शकुन इत्यादि
हैं यहां के यवन भी तामिल भाषा बोलते हैं और देशी
देवताओं के आगे मस्तक झुकाते हैं बड़े बड़े भारी मंदिर

जाती है श्रौर मंडवे की भी राति होती है पुरुष केवल एक स्त्री
रखता है परंतु स्त्री कई पुरुष एक साथ रख सकी है जो क
हीं यदि तिलाक देने के समय संतान होवे तो लड़के पुरुष के सं
श्रौर लड़कियां स्त्री के संग जाती, हैं बच्चों के नाम युवा वस्थ
पलटे जाते हैं यदि कोई चोरी करता हुश्रा पकड़ा जावे तो उस
७ गुणा जुर्माना देना पड़ता है यदि ऋणी ऋण से मुक्त न हो
तो साहूकार उस का कुल माल श्रौर उस को व उस की स्त्री ब
को अधिकार में रख सकता है रोगी को श्रौपधि जड़ी बूटियां
देते हैं वैद्य से श्रौपधी नहीं कराते बड़ी जाति के मनुष्य मृतक
दाह करते हैं नीच जातें गाड़ती हैं ऋण लेने को इन लोगों को

... समय मान और नग पक्ष
पूर्वक जावे फिर जैमिनो ने यह विचार कर कि युद्ध में उस
थ से बहुत पुरुष मारे गये हैं शेष अवस्था अपनी पूजा इत्या-
व्यय की अनिरुद्ध पुर का एक प्रसिद्ध पीतलकामहल इस ने
या, इस ने किसी सेवक से मुफ्त में काम न लिया, इस नेवा-
लि धर्म शाले औषधालय, पुल, तालाव बनवाये सम्पूर्ण पुजारियों
स्त्र बनवाये और मंदिरों में दीपक प्रज्वलित किये एक समय
त पड़ा तब इस ने अपने कान की वालियां दे दीं जिन को बेच
सम्पूर्ण कंगालों को भोजन बंटा करता अपनी अवस्था में पांच
स ने राज्य के अधिकार एक २ सप्ताह के लिये पुजारियों
विद्वानों को दे दिये सन् ई० से १४० वर्ष प्रथम इस ने शरीर
न किया फिर एक राजा बलगम बाहु राजा विक्रमादित्य के
के लगभग हुआ इसकी रानी को तामिल लोग छीन ले गये थे
सको पुनर्वार प्राप्त हुई तो स्मारक चिन्ह में एक बड़ा मंदिर
जो दो मील के लगभग चौड़ाथा फिर एक राजा श्रीसिंह
हुआ जो प्रत्येक को दंड देने से भय करता और कांपता था
महासैन हुवा इस ने ऐसे सरोवर बनवाये जो १० दस कोस
तों को सींच सकें इतने बड़े राजा हुए इनके उपरांत समय
रा आया फिर राजा धातू सेनको उसके बेटे केशव ने गद्दी
र कर एक दीवार के भीतर जीवित गाड़ दिया फिर तामिल
ने देशको विजय किया सन् ११५३ ई० में राजा पराक्रम बाहु
जिसने नहरें निकालीं अरण्य [बाग] लगाये गढ और कोट
ये और भारत वर्ष में आक्रमण कर के चोला और पांड के
को विजय किया। सन् १५२२ ई० में पुर्तगालों का जहाज़
स तट पर आलगा उनकी बंदूकों का शब्द सुनकर और
खकर मनुष्यों को बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि वह धनुषबाण
तिरिक्त कोई शस्त्र ऐसा न जानते थे - राजा ने दूत भेजे
जाकर वृत्तांत प्रकाशित किया कि शत्रु बड़ा बलवान है उ-
द करने के पलटे मित्रता करना उत्तम है- प्रयोजन यह कि
र्तगालोंने यहां मनुष्यों को बसाया- फिर उन्होंने अपना मत
और अधिकार स्थित करना चाहा परंतु सिंघाली राजा ने
की सहायता से इनको देश से बाहर करदिया इत्यादि

जावा टापू का वर्णन॥

पूर्वी भारत वर्ष के टापुओं में बहुत से टापू सम्मिलित
सब देश ब्रह्मा के दक्षिण और लंका के पूर्व में हैं इन में से
प्रसिद्ध सुमात्रा, जावा, बोरिनियो, बाली, सि...
यहां हम केवल जावा और बाली का वर्णन करेंगे शेष
वर्णन दूसरे टापू आस्ट्रेलिया इत्यादिक के साथ करेंगे।
आकार जौ की सुरत के समान है यह टापू है तो छोटासा
बड़ा प्रसिद्ध है यहां पुराने समय में अत्यंत [illegible]

राज्य किया [परन्तु ज्ञात होता है कि कदाचित उनका
ास असली देश का था जिस को हिन्दू लोग अपने संग ले
रन्तु इस से भी अधिक माननीय दूसरी कथा है वह यह है
हले भारत वर्ष और जावा की पृथ्वी परस्पर मिली हुई थी
में समुद्र न था लगभग दो सहस्र वर्ष के व्यतीत हुए कि
ापुर के राजा प्राहूजैयाहुना जो अर्जुन की पांचवीं पीढ़ी में
लवान राजा हुआ अपना मंत्री आदीसागा को
भ्य बनाने को भेजा यह सब से प्रथम सभ्य विदेशी था जो
ेस में आया बड़ा बुद्धिमान था इस ने नौसा
स पर अधिकारी थे विजय करके सभ्य बनाया और
ी अधिक कृषी होती थी इस लिये नाम जावा रक्खा इस
स का नाम कैडांग था उसने पत्तों पर कुछ लेख
ौर प्राचीन जावा भाषा की बातें दोनों को संयुक्त करके लेख विद्या
नाई उस के एक राक्षस देवत चंकार नामक से बड़े युद्ध हुये अं
 वह अपनी नवा विष्कृत बातों को लेकर हास्तिनापुर को वड़
ाया उसने देशी प्रवन्ध, विद्या और मतका प्रवन्ध सिखाया इसके
थम बिलकुल साधारण नियम था कि चोर से माल छीन लेना
ौर तस्कर को दास बनाना- फिर उसने यहां एक नवीन वस्ती
ेथत की परन्तु जल वायुके बिगाड़ से रोग फैला इसलिये यहदेश
ोड़ना पड़ा, फिर रूम के बादशाह ने लाल
रस्य बंदी भेजे कि देश निकाले हुए मनुष्यों की वस्ती

१ १४५७ ईसी में यहां के मनुष्य मुसलमान हो गये फिर सन्
२० ई० में डच लोगों ने पहुंच कर यहां अपना अधिकार किया

जावाकी भाषा । जावा में दो प्रकार की भाषा प्रचलित हैं
क बोलने की दूसरी विद्या और पुस्तकों की आम भाषा
बहुत गड़बड़ है इस में संस्कृत- श्यामी - चीनी फारसी
त्यादि मिली हुई हैं परंतु विद्याकी भाषा जो पढ़े लिखों की
और काव्य कहलाती है बिलकुल संस्कृत के अनुसार है उस के
ड़े से शब्द दृष्टांत तुल्य वर्णन करते हैं
स्त्रीकेनाम-गदा-त्रिशूल-चक्र शास्त्र की पुस्तकें नीति परचा,
ति शास्त्र, मनु शास्त्र, निगमकर्म- सेवक कर्म-अगम
माह के दिवस दित-सोम, अंगिरा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनीचर
रह राशियों के नाम मकर, कुम्भ, कुवा मीन, वृश्चिक, मरछक तुला,
लु सिंह, कन्या, वृष, मरशा

: दि

का

के

राजा दश मुख को जीत कर उसका राज्य बतलाया को दिया दूस-
रे में लिखा है कि अरजुन ने कौरवों की जय करके हस्तिनाका रा-
ज्य किया फिर उसका पोता परीक्षित राजा हुआ फिर भावी विच
र (पेशीन गोई) किया है कि फारंगियों का राज्य होगा जिस को

आदम का बैकुन्ठ से निकालाजाना जावा के इतिहास विरुद्ध के
नाम से भलीभांति मिलता है और गिरने का स्थान भी निकट अ-
र्थात लंका में है।

नोट—कदाचित इसके अर्थ यह हैं कि जावा सुमात्रा मलाया आपस
में मिले होंगे और मलाया तक भारतवर्ष का भाग समझा जाता
होगा जैसे आजकल फर्दर इंडिया या यदि बंगाले की खाड़ी के
स्थान पर पृथ्वी और भारतवर्ष का आकार ऐसा त्रिभुजाकार न
हो तो भी अनुमान करसके हैं क्योंकि यह वर्तमान काल में भी
देखने में आता है कि बहुत से नगर जो प्रथम समुद्र से कोसों दूर
थे वह समुद्र के बढ़जाने से उसके भीतर डूबगये पृथ्वी का घटना
बढ़ना प्रति दिवस विद्या के बलसे सिद्ध हुआ है।

सन् १६८० के लगभग कलिंग जाति का राजा छीत केल
२१०० के लगभग यह टापू सदा के लिये डूब जायगा
है कि मेलार में तीन बड़े वृद्ध स्त्रियों के लिये हुए एक
की के लिये, दूसरी देवी सोना के लिये, तीसरी देवी
लिये-एक दूसरे से दो सहस्त्र वर्ष पश्चात्-इस देश में
म्बत्, शाका, शालिवाहन का प्रचार है।

जावाके खंड रात - शोच है कि इस देश के प्राचीन
जो बड़े २ भारी सुंदर, अति उत्तम चालाक बेल बूटे के
कों के स्मारण चिन्ह है घास और मिट्टी के नीचे दबे पड़े
राज्य होने के कारण से उन के विषय में कुछ खोज नहीं।
पत्थर के घर यहां मिलते हैं ऐसे प्राचीन मिश्र के खंड हर
न भारत वर्ष और न आमेरिका में उन के तुल्य घर देखे
ब्रह्म वन का मंदिर जो बहुत बड़ा है बिल्कुल पत्थर का
ईंट - चूने का कहीं उस में पता भी नहीं है - कहीं उन
उत्पन्न होगये हैं जिन से उनकी प्राचीनता का विचार आश्चर्य
उत्पन्न होता है

ः बातें कहता है यह लोग बड़े सीधे और सच्चे होते हैं देव क
ा करते हैं बंगलवा पुस्तक मतकी रखते हैं दूसरी जाति वाले
ब्याह इत्यादिक नहीं करते पहाड़ों में रहते हैं और हिन्दू देवत
। को मानते हैं प्रत्येक गांव में एक पंडित होता है जो वैद्य औ
ारी का काम करता है

ावा की गवर्नमेंट । डच लोगों की राजधानी विटेविया
ों के प्रधान देशी रईस वेतन पाते हुए सम्पूर्ण अधिकारों युत
वों की ओर से हैं थोड़े फिरंगी गवर्नर भी हैं देशियों की सहायत
देश में बड़ा भारी प्रबंध व सुकाल वर्तमान है युद्ध उपद्रव
ाम नहीं परन्तु राजकीय नियम बड़े कठोर हैं और प्रत्येक बात
र्कारी आज्ञा की आवश्यका है दो करोड़ देशी निवासी, दोला
ानी और ३० हजार फरंगी हैं जावा के प्राचीन प्रदेशों के ना
स्रवन, जंगलू, मोजपती, सिंघसारी, मादंग इत्यादि हैं और थो
र नगरों के नाम अम्राम, चिरोवन, कलिंगवर्त, कोट वेदाह इत्या
ः सिंहपुर [जिसको यूरोपीय सिंगापुर कहते हैं] को एक हिं
ाजा श्री त्रिभुवन ने बसाया था इसके मरने के पश्चात् सन् २
में उसका बेटा श्री राम विक्रम गद्दी पर बैठा कईसौ वर्षके उपर
यहां भी यूरोपियों का अधिकार हुआ

बाली द्वीप । यह टापू तो बहुत छोटा है परन्तु इसमें मनु
संख्या अधिक है और उपजा भी बड़ा भारी है और यहां के
वासी प्रथम श्रेणी के सभ्य हैं संसारभर में यही एक स्थान है ज
एक स्वाधीन प्रबन्ध युक्त हिन्दू राज्य स्थापित है

यहां शाक शाहन सम्बत का प्रचार है चार जाति के निवासी
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, एक जाति जो शहर से बाहर रहती
और भंगी व चमार का कार्य्य करती है चंडाल कहलाती है, प्रत्ये
मनुष्य संस्कृत भाषा बोलता है और देव नागरी अक्षर लिखता
सम्पूर्ण राजकीय तथा मत के नियम ठीक शास्त्रों के अनुसार
गणना, सम्वत् और वस्तुएं इन सब का नाम संस्कृत में है ठेपा
गौत और ग्रहण इत्यादि का विचार हिन्दुओं ही के समान है मं
रों में देवताओं की पूजा होती है, शिव, दुर्गा और गणेश के मं

...ता है परंतु प्रत्येक मनुष्य शिव का इष्ट...
यहां कट्टर हिंदू हैं. साधु यहां बिलकुल नहीं होते राजा...
उस के नीचे यहां लोग निगम और अगम के अनुसार दीवानी
फौजदारी के अभियोगों का न्याय करते हैं दण्ड नि...
मिलता है. शपथ पर अधिक ध्यान दिया जाता है दण्ड वादी
से न्याय कर्त्ता के सामने दिया जाता है इसी जाति के मनुष्य
हैं ब्राह्मण की बड़ी प्रतिष्ठा है, केवल ब्राह्मण लोग मांस नहीं खाते
की रीति प्रसन्नता से है अप्रसन्नता से मनाही है. [तिलाक]
का प्रचार नहीं है मनुष्य बड़े पुष्ट और बलवान व वीर होते
किसी से नहीं दबते आरम्भ में कम मिलते हैं परंतु फिर सच्चे
हो जाते हैं राजा के ऊपर प्राण देने पर तैयार हैं और क...
...पदा का कुछ विचार नहीं करते — स्त्रियां बिलकुल मर्दों के
...न समझी जाती हैं घर का प्रबंध मनुस्मृती के अनुसार होता
...ह ७ सूबों में विभक्त है और १० लाख मनुष्य संख्या है।
...चा देश के भोजपत प्रदेश के राजा को ब्राह्मणों ने भावी विचार
कहा कि ४० दिन के उपरांत तुम्हारा राज्य यवन नष्ट करेंगे
...ये उस ने अपने बेटे को कुटुम्ब सहित प्रथम ही से उस ...
भेज दिया था ...

हैं ओदो या पुरुष सिपाही, जादूगर, वैद्य या वृद्ध पुरुष हो
में होते हैं।

स्ट्रेलिया की रीतें दूसरे के माल लेने वाले के अंग में बर्छी
तेहैं दूसरे की स्त्री लेवे तो उसके अंग में स्त्रीके कुटुम्ब के सब म-
अपनी २ बर्छी घुसे यदि दुर्द्दा कुछ न्याय किसी झगड़े का
र तो दोनों पक्षपाती परस्पर कट मरें, स्त्रियों को कड़ा दण्ड
ता है युद्ध की अधिक कांक्षा रहती है और यही एक सदैव का
र्य इनका है बैठे बिठाये झगड़ा उत्पन्न करते हैं दूसरी जातों से
व्यर्थ बातों पर कि तुम्हारी जाति ने जादू से हमारी जाति को
ी कर दिया था स्त्री या शिकार के अधिकार के वास्ते जिस
ुष्य को मारते हैं उसकी चर्बी अपने अंग में मलते हैं ताकि उसका
उनके अंग में आजावे। चर्छी का फेंकना और वांग चलाना
रंभ ही से सिखाते हैं आगे के दो दांत तोड़ डालते हैं नाक छेदते
ार अंगको गोदकर मिट्टी से रंगदेते हैं बच्चा मरजाता है तो स्त्री
ुत रोती है उसको थफस में बंद कर महीनों साथ रखती है जब
लकुल सड़जावे तब जलाती या गाड़ती है प्रसिद्ध मनुष्य मरजावे
उसके हाथ काटकर नातेदार प्रसादके तुल्य अपने निकट रखते हैं।
तक को या तो पेड़ पर टांग देते है या पूर्व की ओर मुंह कर क
सको समाधि में बिठाते या पर्वत की गुफा में डालदेते हैं कोई २
ति मृतक को जलाती हैं उनकी भाषाओं में बहुत सूक्ष्म और सा
ारण शब्द हैं पांच से आगे गिनती नहीं जानते वैद्य और जादूगर
सर्व शक्ति मान जानते हैं और उन से बहुत भय करतेहैं मनका
ाम भी नहीं जानते ईश्वर से कुछ प्रयोजन नहीं रखते केवल द-
ष्ट करने वाला जानते हैं किया कर्म पर पुनर्जन्म को मानते हैं और
ावागमन को भी मानते हैं

ब्याह। किसी जाति में स्त्रियों का एक पुरुष पुरुषों के एक पुरुष
के साथ ब्याह करना है अर्थात् कोई स्त्री यदि ब्याह एक पुरुष
के साथ है तो वह दूसरे के - किसी एक के वश में नहीं फिर इस
का नियम बड़ा भ्रमित है दूसरे जातों में ब्याह परस्पर होता है

... पर कहता है परंतु ... ओढ़ना पड़ता है
कोई स्त्री किसी गबरू [युवा पुरुष] के ... के घर लेजा
के क्या तुम मेरेलिये माना चाहोगे यह ... पास ...
गता है फिर उसके मा बाप और नातेदार ... यह सुनकर वह पुरु
भली प्रकार बुद्धि करते हैं और लड़की को भी ... पीछा करके
तमें सास कहती है कि इसी के संग जानेदो परन्तु ...
सास और दामाद परस्पर नहीं मिलते, सुघड़ ...
के प्रेमी घारंबार ले भागते हैं इसी प्रकार कई कुटुम्बों में
ल होती. भागता फिरता है और ससुराल वालों
करती है ब्याह करने का अधिकार मर्दों को होता

त बातें — चूंकि देश ऊजड़ है और मनुष्य
यदि क्षुधा लगती है तो पेट को पट्टी से कस
लगे तो मिट्टी थोप कर सहज से कई ...
हैं एक बूटी जिस के खाने से कई दिवस तक भू
ब को ज्ञात होती है [हाय पेट का दुख सब स्था
न खंजर की भांति ऐसा अद्भुत बनाते
पर फेंकने से या तो ! वह जीवधारी को
नहीं तो उलटा शिकारी के हाथ में लौट आता है
होता है और १०० डेढ सौ गज़ के अंतर तक मा
बहुत श्रम किया परंतु उस का बनाना न सीख
मानी उसके बनाने और चलाने में है, यह ...
गोलाई का बनता है फेंकने वाला यदि भलीप्रका
ता हो तो पृथ्वी के धरातल और वायु का विचार
ख्य रीति पर घुमा कर फेंकता है तब वह घूमता हु
र जाता है और फिर लौटता है लौटते समय उस
न शिकारी पकड़ सकता है कोई मूर्ख पास होते
है उस से बचना भी यही मनुष्य ...

अर्थात् स्त्री के भाई को अपनी बहन ब्याहनी पड़ती है लड़की भ
भी इस बात पर लड़ती है परंतु पीटकर दूल्हे के घर भेजी जाती
कोई स्त्री किसी गबरू [युवा दिल] के पास समाचार भेजती
कि क्या तुम मेरे लिये मरना चाहोगे यह सुनकर वह पुरुष उसे
भागता है फिर उसके मा बाप और नातेदार पीछा करके स्त्र
के भली प्रकार शुद्धि करते हैं और लड़की को भी घायल करते
अंतमें सास कहती है कि इसी के संग जाने दो परन्तु फिर जी
भर सास और दामाद परस्पर नहीं मिलते, सुन्दर लड़कियाँ
उनके प्रेमी बारंबार ले भागते हैं इसी प्रकार कई कुटुम्बों में आ
घायल होतीं. भागता फिरता है और ससुराल वालों के दुर्वाच्य
हन करता है ब्याह करने का अधिकार मर्दों को होता है।

अद्भुत बातें -- चूंकि देश उजड़ है और मनुष्य जंगली इ
लिये यदि क्षुधा लगती है तो पेट को पट्टी से कस कर औ
तृषा लगे तो मिट्टी थोप कर सहज से कई दिन बित
सकते हैं एक बूटी जिस के खाने से कई दिवस तक भूख प्यास
न लगे सब को ज्ञात होती है [हाय पेट का दुख सब स्थानों पर है
एक शस्त्र रौजर की भांति ऐसा अद्भुत बनाते हैं कि
शिकार पर फेंकने से या तो ! वह जीवधारी को घायल
करता है नहीं तो उलटा शिकारी के हाथ में लौट आता है। यह
लकड़ी का होता है और १०० डेढ़ सौ गज़ के अंतर तक मारता है
अंगरेजों ने बहुत श्रम किया परंतु उस का बनाना न सीख सके.
बड़ी बुद्धिमानी उसके बनाने और चलाने में है, यह मुख्य
चौड़ाई और गोलाई का बनता है फेंकने वाला यदि भलीप्रकार से
फेंकना जानता हो तो पृथ्वी के धरातल और वायु का विचार कर
के उस को मुख्य रीति पर घुमा कर फेंकता है तब वह घूमता हुआ
शिकार की ओर जाता है और फिर लौटता है लौटते
केवल बुद्धिमान शिकारी पकड़ र
घायल होजाता है उस से बचना भी

रर्थात् स्त्री के भाई को अपनी बहन ब्याहनी पड़ती है लड़की यह
ा इस बात पर लड़ती है परंतु पीटकर दूल्ह के घर भेजी जाती है
तोई स्त्री किसी गबरू [युवा छैला] के पास समाचार भेजती है
के क्या तुम मेरेलिये खाना लावोगे यह सुनकर वह पुरुष उसे ले
ागता है फिर उसके मा बाप और नातेदार पीछा करके दामाद
ा भली प्रकार बुद्धि करते हैं और लड़की को भी घायल करते हैं
ततमें सास कहती है कि इसी के संग जानेदो परन्तु फिर जीवन
ार सास और दामाद परस्पर नहीं मिलते, सुघड़ लड़कियों को
नके प्रेमी बारंबार ले भागते हैं इसी प्रकार कई कुटुम्बों में जाती
ायल होती, भागती फिरती है और ससुराल वालोंके दुर्वाच्य स-
न करती है ब्याह करने का अधिकार मर्दों को होता है।

हुत बातें -- चूंकि देश ऊजड़ है और मनुष्य जंगली इस
ये यदि क्षुधा लगती है तो पेट को पट्टों से कस कर और
या लगे तो मिट्टी थोप कर सहज से कई दिन बिता
कते हैं एक बूटी जिस के खाने से कई दिवस तक भूख प्यास
लगे सब को ज्ञात होती है [हाय पेट का दुख सब स्थानों परहै]
[illegible] कि

दूसरे द्वीपों का वर्णन

पापुआ द्वीप इसको सन् १८७२ ई० में यूरोप वासियों ने खो
ज किया और उसमें जाकर निवास किया उसका अधिकांश
अभी तक अज्ञात है अधिक अधिकारी डच लोग हैं और आगे
अंगरेज़ और जर्मन सम्मिलित हैं यहां के निवासी बड़े निर्दयी,
डाका, और हत्यारे होते हैं प्रथम फरंगियों को उन्होंने बहुत
मार कर खाया अब कुछ मौन बैठे हैं यह मनुष्य को कच्चा खा
हैं कीड़े और छिपकली सब की चटनी बनाते हैं स्त्री पुरुष बिल
नग्न रहते हैं छाल की कौपनी बांधते हैं आभूषणों के बड़े रसि
हड्डी, लकड़ी, दांत रस्सी या कौड़ियों को छाती पर पहिनते या
क में लगाते हैं. स्त्रियों के केश कटे हुए पुरुषों के लंबे होते हैं म
बल्लियों के ऊपर ताड़ या बांसके पैसे बनाते हैं जिनमें दस
कटम्ब एक संग रह सकें।

राकातुआ-यह टापू सन् १८८३ ई० में सदैव के लिये समुद्र
डूब गया इसमें ५० सहस्र मनुष्य बसते थे इस वर्ष सम्पूर्ण धर-
के गोले में जो संध्या को लाल बादल दृष्टि आया करते थे वह
त ज्वालामुखी के कारण थे जिसने उसको नष्ट किया था सम्पूर्ण
काश में बालधूल छागई थीं।

नसीबीज - अत्यंत हरे : टापू जिनमें योगी जाति के
नुष्य रहते हैं, मत मुसलमा और रीति प्रत्येक टापू की
क दूसरे के विरुद्ध है राज ोगों का और राजधानी मका-
र नगर है।

लक्का। बहुत से छोटे टापू, जिनमें मुसलमान मजायों का
ज्य है, कोई २ डच लोगों के आधीन और देशी जंगली राजा स्वाधीन

लो। मुसलमान पादशाह का राज्य और कुछ हस्पानियावालों
: अधिकार में है, दासत्व की अधिकता, समुद्री डाकुओं का अधिक
ल, और मोती व कछुवे की हड्डी का व्योपार है।

फिलपइन। सैकड़ों छोटे टापुओं का योग, स्पेन का राज्य म-
ला राजधानी है इसमें टागल जाति की बस्ती है मनुष्य संख्या१५
ाख है मत मूर्ति पूजक, आठ नौ सहस्र यूरोपीयन भी रहते हैं
नके अतिरिक्त मुसलमान और देशी ईसाई भी बहुत हैं चीनीलोग
त्यंत अधिकता से रहते हैं तमाखू व ऊख का व्योपार होता है।

तैमुर। यहां गांव देखने को भी न मिलेगा प्रत्येक वंश के मनुष्य
ायक २ बनों में एक घर बना कर रहते हैं, घर छप्पर का बना कर
ास के आस पास बांसों की झाड़ी प्रबंध के लिये लगाते हैं - ब्याह
े पश्चात् पुरुष स्त्री के घर रहता है और ब्याह बहन से पलट कर
ोता है - देवियों का राज्य है - बड़की गद्दी पर बैठती है तो
सका पानी का दूलहा अपनी इच्छानुसार किसी को बनाती है शक्कर
ाम्र और तालमेवा की उपज अधिकता से है मृतक के शव को

कड़ीलाना, पहाड़पर चढ़ना, असपोसना, इत्यादि इसलिये स
उत्पत्ति में कमी होनेसे जाति दिन प्रति दिन नष्ट होती जाती
व्याह के लिये पुरुष को अपनी वीरता सिद्ध करने के लिये उ
होता है कि अपने मारे हुए शत्रुओं की खोपड़ियां सार्टीफिके
तरह पेश करे यह नियम प्राचीन समय से कदाचि
जंगली जातों के परस्पर युद्ध के कारण चला आता है न
तो वह आज कल बड़े सभ्य और नम्रचित्त के होते हैं संग्राम
उनका पहिनावा बड़ा वीरता युक्त होता है,। लिखना बिलकुल न
जानते मत भी कोई नहीं है केवल बड़े पुरुषों को पूजा करते हैं औ

ाुआ-यह टापू सन् १८८३ ई० में सदैव के लिये समुद्र
ा इसमें ५० सहस्र मनुष्य बसते थे इस वर्ष सम्पूर्ण घर-
े में जो संख्या को लाल बादल दृष्टि आया करते थे वह
ामुखी के कारण थे जिसने उसको नष्ट किया था सम्पूर्ण
ें बालधूल छागई थी।

ाज - अत्यंत हरे भरे छोटे टापू जिनमें योगी जाति के
ते हैं, मत मुसलमान भाषा और रीति प्रत्येक टापू की
ट के विरुद्ध है राज्य डच लोगों का और राजधानी मका-
है।

मालेदार गोल बंदूक की सलामी और भेट देते हैं शोक में अधि
व्यय होता है इस लिये जब तक गाड़ का प्रबंध न हो सके द
को पत्तों पेड़ पर टांग रखते हैं उस के ऊपर छप्पर छा देते हैं इन
कौड़ी देवता का मंदिर है जिस में प्रति समय अग्नि प्रज्वलि
रहती है युद्ध या रोग के समय पुजारी रात्रि दिन पूजा करता औ
मूर्ति को सोने नहीं देता भेंटे चढ़ाता और उस से फल पूछता है
बच्चों पर अधिक प्रेम करते हैं निवासी सूधे और ये शां
हैं अधिकार देशियों का है (जमहूरी जिस में स्त्रियां भी सम्मति
दे सकती हैं) है प्रत्येक वस्तु लकड़ी पर अत्यंत महीन व बेल बूटे
का काम होता है नाव हो या मूर्ति या शस्त्र होवे ।

पर जीवित मनुष्य को गाड़ते थे धनवान या प्रतिष्ठित पुरुष
य के संग उसकी स्त्री सेवक इत्यादि को जीवित गाड़ते थे
सन् १८७४ ई० में यह सब मनुष्य ईसाई हो गये जीव हिंसा
दी और आप ही विनय कर के अपना देश उन्हों ने अंगरेज़ो
अधिकार में दे दिया, अब यह मनुष्य बिलकुल साहब बहादुर
और स्त्रियें मेम साहिबा लोहा इस देश में यूरोपियों के साथ गया
म यहां सम्पूर्ण शस्त्र लकड़ी के होते थे।

लनेशिया - यह सहस्रों लाखों टापुओं का योग है कोई २
में तो मील २ मील भी लम्बे चौड़े नहीं और दस बीस कोस से
अधिक तो कोई नहीं है इनमें महोरी जाति के मनुष्य रहते हैं स-
अंग में नीला गुदवाते हैं और यह रीति देवताओं की यत-
ते हैं मनुष्य की बलि देते- छाल पहिनते, स्त्रियों की प्रतिष्ठा क-
हैं घर गोल छप्पर का केवल सोने के लिये, शेष सब कार्य खु
मैदान में, कुछ सामान नहीं रखते। भोजन के समय हाथ मुंह
हैं सेवक भी साथ खाता है चाहे पुरुष हो या स्त्री, रोटी मेवा
जीवित मछली व केला खाते और समुद्र का जल पीते हैं,
ह थोड़ी अवस्था में कर देते हैं, पर दूसरे की स्त्री से छिपकर
भिचार करते हैं बच्चों को बहुधा मारडालते हैं, जिनके पास घर
हीं होता वह नाव पर बैठे हुए टापू २ फिरते हैं सब के सिर गोल
हैं, रंग काला या गेहुआ, अंगरेज़ी पहिनावा पहनते हैं दिन
दिन गिनती में न्यूनता होती जाती है, छोटे जहाज़ अच्छे
ते हैं।

यह लोग बड़े मत के पक्षपाती होते हैं-प्रत्येक काम पर पूजा
ते हैं भोजन रखने और रखने से प्रथम ही ईश्वर का गान करते
आवागवन को मानते हैं, जादू को मानते और वृद्ध पुरुष व भूतों
पूजा करते हैं पुरुषों के देवता पुरुष और स्त्री के देवता स्त्री
हैं स्त्री पुरुषों के समाधिस्थान और मंदिर पृथक होते हैं देव
ओं की मूर्ति लकड़ी की बनाते हैं - धनाढ्यों के शव में मसाला
र कर बक्स में बंद करके पेड़ों पर टांग देते हैं। स्त्रियें अत्यंत शोक।

र जीवित मनुष्य को गाड़ते थे धनवान या प्रतिष्ठित पुरुष
के संग उसकी स्त्री सेवक इत्यादि को जीवित गाड़ते थे
सन् १८७४ ई० में यह सब मनुष्य ईसाई हो गये जीव हिंसा
ी और आप ही विनय कर के अपना देश उन्हीं ने अंगरेज़ो
रकार में दे दिया, अब यह मनुष्य बिलकुल साहब बहादुर

तो मील २ मील भी लम्बे चौड़े नहीं और दस बीस कोस से
: तो कोई नहीं है इनमें महोरी जाति के मनुष्य रहते हैं स-
अंग में नीला गुदवाते हैं और यह रीति देवताओं की वत-
ई मनुष्य की बलि देते- छाल पहिनते, स्त्रियों की प्रतिष्ठा क-
घर गोल छप्पर का केवल सोने के लिये, शेष सब कार्य्य खु
ान में, कुछ सामान नहीं रखते। भोजन के समय हाथ मुंह
ई सेवक भी साथ खाता है चाहे पुरुष हो या स्त्री, रोटी मेवा
जीवित मछली व केला खाते और समुद्र का जल पीते हैं,
थोड़ी अवस्था में कर देते हैं, एक दूसरे की स्त्री से छिपकर
ार करते हैं बच्चों को बहुधा मारडालते हैं, जिनके पास घर
ोता वह नाव पर बैठे हुए टापू २ फिरते हैं सब के सिर गोल
;, रंग काला या गेंहुआ, अंगरेज़ी पहिनावा पहनते हैं दिन
देन गिनती में न्यूनता होती जाती है, छोटे जहाज़ अच्छे
हैं।

ह लोग बड़े मत के पक्षपाती होते हैं प्रत्येक काम पर पूजा
हैं भोजन करने और चलने से प्रथम ही ईश्वर का नाम लेते
पागवन को मानते हैं, जादू को मानते और वृद्ध पुरुष व भूतों
ा करते हैं पुरुषों के देवता पुरुष और स्त्री के देवता स्त्री
हैं स्त्री पुरुषों के समाधिस्थान और मंदिर एकांत होते हैं देव
की मूर्ति लकड़ी की बनाते हैं - धनाढ्यों के शव में मसाला
ार बक्स में बंद करके पेड़ों पर टांग देते हैं। स्त्रियें अत्यंत शोक

मालेदार थोग बंदूक की सलामी और भेंट देते हैं और है
रन होता है इस दिन सब लोग मंदिर का प्रबंध करते
को यहाँ पेड़ पर टांग लाते हैं उस के ऊपर दूसरा
बौद्ध देवता का मंदिर है जिस में सोने मढ़ा
रहती है युद्ध का रोग के समय पुजारी यदि दिन
मूर्ति को सोने नहीं देता और बजाता और उस से
करों पर अधिक प्रेम करते हैं निवासी मूर्ख और
है अधिकार देवियों का है (अर्थात् जिन में स्त्रियों को
दे सकती हैं) है प्रत्येक वस्तु लकड़ी पर सदैव
का काम होता है नाव हो या मूर्ति या शस्त्र होवे।

न्यूब्रिटिन - यहां के निवासी शुद्ध चित्त बुद्धिमान होते हैं
रुपया का नाम नहीं जानते परन्तु इत्यादि वस्तुएं
[रुपया] के बदले में लेते हैं. मनुष्य भद्दा हैं - अधिकार
कुछ भी नहीं है, स्त्रियें बड़ा कठोर श्रम करती हैं - ब्याह
जाति में नहीं होता, सास और दामाद में बातें नहीं होतीं,
आठ वर्ष की अवस्था से ब्याह के समय तक प्रत्येक
में बंद रहती हैं, केवल स्नान और भोजन के समय बाहर निकलती

सुलेमान टापू - यहां पर जर्मनी का अधिकार है
शियों का प्रभाव अधिक हैं पर पुरुष कई स्त्री रखता है।

न्यू हेब्रडीज़—और न्यूकाली डोनिया—यह टापू
सीसी राज्य में हैं मनुष्यों के सिर के बाल भेड़ के ऊनकी
होते हैं। घर बिलकुल गोल बनाते हैं कृषि कर्म बुद्धिमान,
बड़ा भारी निर्दयी
पानी इसी स्थान

फिजी -

करतीं हैं और अपने अंग में मगर मच्छ के दांत से घाव कर डालते हैं युद्ध में शत्रु पर दया बिलकुल नहीं करते प्रजा पर राजा का बड़ा भारी प्रभाव है प्रत्येक टापू का अलग प्रधान. अधिकार है सम्पूर्ण टापुओं का क्षेत्रफल ४५ हजार वर्ग मील है और मनुष्य संख्या ८ लाख है।

९ सेंडविच-(या हवाई टापू) इसके निवासी अत्यंत सभ्य हैं और बड़े नियमानुसार राज्य (अधिकार) रखते हैं यहांके मनुष्य दिनभर समुद्र में ऊद बिलाव की भांति पैर सक्ते हैं एक टापू में जब एक यूरोपीयन ने चित्र खींचने को केमेरा (यंत्र चित्र खींचने का) लगाया तो जंगली मनुष्य उसे तोप समझकर बड़ी शीघ्रतासे भागे बंदूक का शब्द सुनकर तो प्रथम वह मनुष्य शैतान (प्रेत) बतलाते थे इसी प्रकार एकबार पादरी साहब का बूट (जूता) देखकर जंगली लोगों ने कहा कि अब शीघ्रही मारडालो यह प्रेत है क्योंकि इसके पैरमें ऊंगलियां ही नहीं फिर जब पादरी साहब ने बूट उतारा तब उनका आश्चर्य और बढ़ा क्योंकि भीतर मोज़े पहिने थे फिर जब मोज़े भी उतारे तब संदेह दूर हुआ इसी प्रकार फरंगी लोग एकबार एक बिल्ली अपने जहाजपर बिठालकर लेगये जब एक टापू में जाकर उतरे और बिल्ली वहां फिरने लगी तो जंगली मनुष्यों को बड़ाभय हुआ क्योंकि उन्होंने ऐसा जानवर प्रथम कभी न देखा था इसलिये वह गांव में से सौ दो सौ युवा पुरुष

उबाल कर बड़े स्वाद से खाते हैं बारूद, चाकू और बर्तनों
को पलटते हैं-ईंटों का चूल्हा जहां चाहा बना कर भोजन
लिया और घास को बिछाकर सो रहे सोने के समय पचा
मनुष्य मिलकर एक स्थान पर सिर से सिर मिला कर
कर शयन करते हैं जिस से चारों ओर की सुधिरहे मृतक
उसके शस्त्र व बर्तन रख कर खड़ा गाड़ देते है बलवान और
धीनता पसन्द करते है किसी के नियम और अधिकार में
नहीं चाहते चीनियों का मारना धर्म समझते हैं वरन छुवरां
इत्यादि मृतक चीनियों के बालों का ही बनाते हैं ऋतु और
के नाम बिलकुल नहीं जानते, ऐसे मूर्ख कि अपनी अवस्था भी
बतला सकते चीनी लोग इनको प्रबंध के योग्य न समझकर
बैठे और केवल बल से दबाए रखते हैं जब यह लोग मित्रता
हैं तो प्रथम गले में हाथ डाल कर चुम्बन करते फिर एक
में पानी पीते है।

•—— ※ ——•
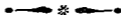
अफ्रीका का वर्णन
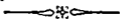
यह महाद्वीप अरब देश के निकट है यूरोप के दक्षिण और
र वर्ष के पश्चिम में है यह क्षेत्र फल में ही अधिक बड़ा है
नु सभ्य निवासी इस में अत्यंत कम हैं केवल थोड़े छोटे २
ी में इधरउधर स्थानों में सभ्य लोग निवास करते है शेष सम्पूर्ण
ड़ हैं सैकड़ों कोस के शून्य बन ऐसे है जिन में आज तक
ां ऐसे मनुष्य का आवागमन नहीं हुआ उनमें सिंह हाथी
, बनमानुष चारों ओर घूमते रहते हैं अथवा अजगर छिपे हुए
हैं मनुष्य भी जो ऐसे घने बनों में रहते हैं नाम मात्र को मनुष्य
बिलकुल नग्न, काली सूरत, छोटा आकार, पाशविस्थिये, मनुष्य
ी होते हैं खाने पीने और लड़ने के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते,
दशा ऐसे स्थानों की आजसे दस सहस्र वर्ष प्रथम वर्तमानथी
 आजहै, हिन्दुओं ने भी अपनी उन्नति के समय में केवल मिश्र
: मेंडगास्कर छोटी रूम्स बनाकर रहने दिया यवनराज्य में भी
ल समुद्रके तटके देश बर्बर व जंगबार ही सभ्य बनसके शेष
ा इस असीम मैदान का वैसाही जंगली रहा अब यूरोपीय भ-
 करने वाले मनुष्य सौ २ कष्ट झेलकर इन घने बनों में सैकड़ों
र भीतर घुमकर ईश्वरकी अद्भुत सृष्टि को देखते और देश की
नके विषय में खोज कररहे हैं परन्तु सम्पूर्ण अफ्रीका को सभ्य
ाना इन के बलसे भी बाहर और सहस्रों वर्षका काम जान पड़ताहै।
 चारों ओर समुद्र के तट पर कुछ२ दूरतक यूरोपियों ने बस्ति-
बसाई हैं और थोड़े से मुसलमानी राज्य प्रथम सेही वर्तमान हैं
न्तु इसके भीतर का वृत्तांत बिलकुल ज्ञात नहीं है कि कैसा देश
और कहां से कहांतक है. इस महाद्वीप का जो चित्र (नक्शा)
सदभी अनुमान से रचागया है, ४० लाख मीलके क्षेत्रफल में जो
: रेगिस्तान है, जिसको सहारा कहते हैं मानो यह सम्भो कि
 सम्पूर्ण भाग रेत का समुद्र है जहां पेड़ कोसोंतक दृष्टि नहीं

पड़ते और पानी बिल्कुल नाममात्र को भी किसी स्थानपर नहीं मिलता, वर्षा प्रथम तो यहां होती नहीं और होकर भी बिचारी क्या करे, आंधियां निःसंदेह ऐसी आती हैं लूकी प्रचडंता से अंग जलता जाता है न कहीं घास न कोई खेत न उपवन [बाग] केवल बालू का समूह जहां देखो दृष्टि पड़ता है और पथिक को महीनों हरि याली दृष्टि गोचर नहीं होती परन्तु जैसा देश है वैसेही निवासी भी हैं कोयले से भी अधिक काले मनुष्य को पकड़कर खाजावें या दास बनालें, न खेत करते हैं न वस्त्र पहिनते हैं वनके फल और जीवधारियों के मांसपर कालक्षेप करते हैं घर बनाना, भोजन पकाना, घोड़ेपर चढ़ना वह क्या जानें उनके हाथ में रुपया दो तो सूंघकर फेंकदेंग और मांसका टुकडा दो तो लपककर खालेंगे बन में आना ऐसा कठिन है कि सर्कारी पैमाइश करने वालोंने छः मास में केवल १६ मीलकी पैमाइश की, पचासों मील तक न कोई कुआ है न नदी या तालाब जिसका पानी पीलो, कोई वस्तु नहीं बिकती न कहीं गांव में दुकान है शुतर मुर्ग, हाथी, गैंडे चारों ओर भेड़ बकरी की भांति फिरते हैं !

इस महाद्वीप में इतने देश संयुक्त हैं उत्तर में मिश्र ट्यूनिस अलजीरिया मुराको इत्यादि पूर्व में जंगबार मौजंबीक सोमाली ट्रांसवाल इत्यादि दक्षिण में नेटाल, केपकालोनी इत्यादि पश्चिम में कांगो अंगोला, गिनी, सिनी गेम्बिया इत्यादि यह सब देश तो किनारों पर हैं और मध्य में वही घना वन है ।

उत्तरी अफ्रीका--में मराको का बड़ा राज्य यवनों का है यहां मौर जाति के मनुष्य बसते हैं जिन का एक समय में सम्पूर्ण अंडलिस में अधिकार था परन्तु ईसाइयों ने सन् १५०० में उनको वहां से निकाला तो भी यह लोग समुद्री तस्कर [डाकू] बन कर यूरोपियों को बहुत सताते हैं अलजीरिया में आज कल फरांसीसियों का अधिकार है ट्यूनिस देश में कारथेज नगर के खंड— [illegible] वर्तमान हैं यह देश एक समय में संसार के प्रसिद्ध ने विजय कर

ज़ा दिया ओर उस की पृथ्वी पर हल चलवाया प्रथम इस में
का राज्य था परन्तु अब फरांसीसी राजा हैं फिर इसके पूर्व
यूनिस देश है इस में अब तक तुरकों का राज्य है । इन देशों
नुष्य अर्बी ओर बर्बरी भाषा बोलते हैं मुसलमान और ईसाई
रखते हैं। रंग सब का काला होता है अंग [शरीर] लम्बा व
बड़े अतिथ पोषक होते हैं बर्बर लोग डेरों में रहते हैं- प्रत्येक
लेवे पर्यांत कमरा नियत होता है ये स्वतंत्र लोग हैं राजा से
नता करने का दावा रखते हैं स्त्रियें भी शस्त्र बांधती हैं
न का प्रसिद्ध नखलिस्तान ट्यूनस के दक्षिण में है जहां चारों
यन का असीम रेगिस्तान है यहां यह हरा स्थान टापू की
न बहुत भला ज्ञात होता है इस में छुहारे के पेड़ अनगिनत हैं
नेस के निवासी पुरुष बड़े रंग बरंग के वस्त्र पहिनते हैं स्त्रियें
धारण वस्त्र इत्यादिक पहिनती हैं यहूदी जो कुछ मनुष्य संख्या
पक तिहाई हैं सब से पर्यांत निवास करते हैं और गो
लोग यवनों के अधिक अत्याचार के कारण नाम मात्रको
सलमान् होगये परन्तु अभी तक आचार, विचार, रीति, व्यव-
यहां हैं केरवान नगर में बड़ी मसजिद है जो मक्का से
री श्रेणी का तीर्थ स्थान समझीजाती है ट्यूनिस नगर की
लियां बड़ी टेड़ी हैं यहां तक कि किसी २ घर के चारों ओर एक
गली घूम जाती है, मराको का चमड़ा प्रसिद्ध है इस का क्षेत्र
न बंगाल देश से द्विगुणा है यहां के मनुष्य बड़े कट्टर यवन हैं,
रान मजीद [धर्मशास्त्र की यवनों की] को पढ़ कर किसी
री विद्याकी आवश्यकता नहीं रखते रेल और तार से लाभ
ठाना अधर्म जानते हैं बच्चों को पाठ पढ़ाने के संग ही
साइयों पर धिक्कार देना भी पढ़ाते हैं राजा स्वाधीनहै विरुद्ध-
साधारण वस्त्र पहिनना है यहां ही प्रभावशाली है देश में औ-
षालय, पाठशाले और सड़कें इत्यादिक कुछ भी नहीं हैं प्राण व
न की रक्षा कुछ भी नहीं वरन घनाढ्यों पर सदैव राजा की दृष्टि-
रहती है जीव हिंसा और डाके की बड़ी अधिकता है कोई
परिवार नहीं सुनता सब नगर उजड़ रहे हैं ॥

हुधा बेची जाती हैं ब्याह के दिन जबस्त्री अपने घर आती है तो
दा प्रथम उसके कोड़े लगाता है जिससे कि सदैव को सीधी हो
ये. स्नान कभी नहीं करते परन्तु दातून प्रति दिन करते हैं स्त्री
तःकाल उठकर दूल्हे को जगाती है कि भोजन प्रस्तुत है खा
जिये। तम्बाकू बहुत खाते हैं जानवर और मनुष्य सब एक
थानपर मिले रहते हैं चाहे धनाढ्य हो चाहे कंगाल।

उगंडा। यह देश अफ्रीका के मध्यमें है अत्यंत बसा हुआ और
रा भरा है जिसमें अब सड़कें व पुल इत्यादिक भी बनगये हैं यहां
हुतसे छोटे आकारके [बौना] भी मनुष्य रहते हैं यहां पुरुषों से
त्रियां चौगुणी हैं अरबी पहिनावा पहिनते हैं शस्त्र बांधते हैं भोजन
समय हाथ धोते हैं केलाकी मदिरा पीते हैं राजा का महल के-
ल ३० गजका है तमाखू सब पीते हैं और नित्य नहाते हैं सम्पूर्ण
ाल मुड़वाते और धोती बांधते हैं और कौड़ी के सिक्के का प्रचार
है। मनुष्य यहांके अत्यंत सभ्य और अच्छे प्रबंधकर्ता हैं राजा के
मरने के पश्चात् दो एक अधिकारियों को छोड़ शेष सबको मार
डालते हैं प्रत्येक युवा पुरुषकी गणना सेना के सिपाहियों में होती
है। क्षणमात्र में लाखों मनुष्यों का कटक इकट्ठा हो सक्ता है मत
हिंदुओं का सा है।

अशान्ति - यह पश्चिमी अफ्रीका में है यहां सोना अधिक उ-
त्पन्न होता है सोने के आभूषण पहिनने के लिये सर्कारी आज्ञापत्र
की आवश्यकता, राजा मरे तो भोजके स्थान में सहस्रों मनुष्यों का
मारना, रात्रिको बाहर निकलने में जानका भय, मनुष्य बड़े लड़ाके
अपराधका दंड अत्यंत कठोर और तुच्छ बातपर रक्त बहाना, रंगीन
वस्त्र पहिनना और मुंह में कलई पोतना जिससे डरावने ज्ञात होवें।

दामी। यह देश भी इसी ओर है मनुष्य बंदर की भांति पेड़ों
पर चढ़जाते हैं, प्रेम का नाम नहीं, शरीर में प्रति समय तेल मिला-
हुआ, स्त्रियां कृषि कर्म करती हैं यहां का राजा एक सेना शस्त्र
युक्त स्त्रियों की रखता है यह पुरुषों से अधिक वीर होती हैं इसके

हबश---में भी एक बलवान राज्य ईसाई राजा का है इस
जो धुरे अधों का काम देते हैं यह कदाचित प्रथम इस देश
पर सच्चा आता हो जब तक भीतरी अफ्रीकाका वृत्तांत ज्ञा
वर्तमान समय के हबश के रहने वाले तो ऐसे धुरे नहीं और
हबशी लोग यह हैं जो सौडान में रहते हैं एक समय में हब
यों ने अरब तकको विजय किया था और भारत वर्ष तक का
सौ व्यापार अपने हाथ में ले लिया था यहां हाथीदांत सोन
दासों का व्यापार है और अरबी भाषा बोली जाती है गुल
रखने का यहां बड़ा प्रचार है यहूदी भी इस देश में रहते और
कार्य करते हैं बाप के मरने के पश्चात घरों का अधिकारी
बेटा और माल व असबाब व जागीर का स्वामी बड़ा बेटा है
दामाद सास का मुंह नहीं देख सक्ता, गायका मांस अधिक
हैं और बड़ी निर्दयता से मारते हैं, कोई मनुष्य अपने हाथ से
खाता स्त्री अपने हाथ से पुरुष को ग्रास खिलाती है ब्याह अ
भर किसी का नियत नहीं रहता तलाक़ शीघ्र ही दी
है छोड़ते समय लड़का स्त्री के संग और लड़की पुरुष के
जाती है ईसाई मत सब का है जितने गिरजा घर इस देश
उतने और कहीं नहीं हैं, घर गोल बनाते हैं बच्चा उत्पन्न
पुरुष कई दिन तक घर नहीं आता, बहुत से टोटके करते हैं
प्रेत से भय करते हैं कल्पित बातें बहुत गढ़ा करते हैं और
झोंपड़ी, पहिनावा यवनों का सा-पृथ्वी ऐसी अच्छी कि एक
५ फसल होवें परन्तु लूट मारकी इतनी अधिकता है कि
ब्योपारी अपना काम ठीक नहीं करना, चमड़े के सामान अत्यंत
च्छे बनते हैं यहां की भाषा हिंदी की भांति लिखी जाती है और
क अक्षर उसका सात प्रकार से लिखा जाता है ॥

सोमाली । यहांके मनुष्य बड़े लड़ाका मुसलमान और
घरबार के हैं हिंदू ब्योपारी भी यहां बहुत रहते हैं मनुष्य बड़े
कबादी और ठठोले चुम्बन करना यहां कोई नहीं जानता, लड़ाई

। मिश्रदेश का वर्णन ।

प्राचीन काल में यह देश अत्यंत बलवान राज्य था उस समय
वहां के मनुष्य प्रथम श्रेणी के सभ्य और विद्वान थे जिस समय कि
सम्पूर्ण संसार के निवासी बिल्कुल जंगली थे, भारतवर्ष के अति-
रिक्त यह देश प्राचीनता और सभ्यता में सब से बड़ा है इस को
बिगड़े हुए बहुत समय व्यतीत होगया परंतु अब भी उस की पु-
रानी प्रतिष्ठा उस के बड़े बड़े भारी खंडरों से ज्ञात होती है जो ऐसे
बड़े और अच्छे बने हुए हैं कि जिनको मनुष्य कृत नहीं कहसक्ते
भारतवर्ष की भांति इस देश ने भी बड़ी उन्नति व अवनति देखी
बड़े लौट फेर देखे, दूसरे मत के लोगों के अधिकार में रहा और
अब इस काल में भी कुछ कम प्रसिद्ध नहीं है।

इस का बड़ा भाग मरुस्थली है जहां बालू के पहाड़ खड़े हैं
आंधी से एक टीला उड़कर दूसरे स्थान को चला जाता है ऐसे रेत
का बन ४ लाख वर्ग मील का है और कृषि योग्य भूमि केवल १२
हज़ार वर्ग मील है अर्थात् नील नदी के तटपर दोनों ओर पांच छः
मील तक उत्तर की ओर बहुत सी नवीन भूमि भी नील नदी के
मिट्टी लाने से बनी है- तमलूक नगर जो अब समुद्र से ६० मील के
अंतर पर है बारह सौ वर्ष पहिले एक चीनी देशाटन करने वाले
उस को समुद्र के तटपर देखाथा – इस देश में कृषि वर्षा होने से
ही नहीं होती - वर्षा इस देश में बिलकुल नहीं होती - सम्पूर्ण खेत
नीलनदी के पानी से सींचे जाते हैं और नदी के बढ़ने की राह यहां
ऐसे देखते हैं जैसे यहां पर वर्षा होने की । यह नदी प्रत्येक वर्ष नि-
यत समय पर बाढ़ पकड़ती है सम्पूर्ण भूमि उस से डूब जाती है फिर
नियत समय पर उतर जाती है तब किसान लोग पृथ्वी खाली पाकर
फसल बोते हैं, यह नदी ३५०० मील लम्बी है इस में बहुधा बड़े न-
गोते हैं इस के किनारों के दोनों ओर दूर तक पक्के बंद बांध दिये हैं
जिस में पानी प्रबंध से विभक्त होजावे और स्थान प्रति स्थान में प-
त्थर लगे हुए हैं जिन से नदी की बाढ़ की गणना होती है कि कितनी
ऊंची चढ़ी क्योंकि उसी के अनुसार सर्कारी कर लगता है जंगल इस

अतिरिक्त बड़ी भारी सेना पुरुषों की भी है युद्ध के
मारकर खोपड़ी को राहमें कंकड़ की भांति कूटकर फ
और शत्रु की खोपड़ी को वर्त्तन की समान वर्त्तते हैं। इन
वरुण देवताओं की पूजा होती है, प्रणाम करने का ढंग
नुष्य का एक दूसरे के प्रतिकूल बहुधा झुककर प्रणाम
प्रचार, मनुष्य का मांस बाजारों में प्रत्येक स्थानोंपर
हाथीदांत के आभूषण पहिनते हैं, तर्क करनेका अधि
स्त्रियें बिल्कुल दास की समान रहती हैं, अग्वीवी में दा
क्रयार्थ बाज़ार है जहां सैकड़ों पुरुष, स्त्री, बच्चे बिल्कुल
कने के लिये खड़े किये जाते हैं, लेनेवाले उनके दांत
भांति देखते हैं इनकी जाति और अवस्था व शरीर के
इनका मूल्य लगाते हैं

केप कालोनी । यह अफ्रीका का दक्षिणी भाग है
काल में यहां अंग्रेजी राज्य है देश बहुत हरा भरा है - पू
अतिरिक्त भारत वासी भी अधिक रहते हैं हाटनाट, बुश
काफिर जाति के हबशी लोग रहते हैं नेटाल में भी अंगरे
है ट्रांसवाल में पंचायती राज्य है।

ज़ंगबार । यहां का राजा मुसलमान है हिंदू भी यहां अ
हैं, बहुत से तो व्योपारी हैं यह अफ्रीक़ा के पूर्वी तट पर है

। मिश्रदेश का वर्णन ।

प्राचीन काल में यह देश अत्यंत बलवान राज्य था उस सम
यहां के मनुष्य प्रथम श्रेणी के सभ्य और विद्वानथे जिस समय
सम्पूर्ण संसार के निवासी बिल्कुल जंगलीथे, भारतवर्ष के अ
रिक्त यह देश प्राचीनता और सभ्यता में सब से बड़ा है इस
बिगड़े हुए बहुत समय व्यतीत होगया परंतु अब भी उस की
रानी प्रतिष्ठा उस के बड़े बड़े भारी खंडरों से ज्ञात होती है जो
बड़े और अच्छे बने हुए हैं कि जिनको मनुष्य कृत नहीं कहस
भारतवर्ष की भांति इस देश ने भी बड़ी उन्नति व अवनति के
बड़े लौट फेर देखे, दूसरे मत के लोगों के अधिकार में रहा
अब इस काल में भी कुछ कम प्रसिद्ध नहीं है।

इस का बड़ा भाग मरुस्थली है जहां बालू के पहाड़ खड़े
आंधीसे एक टीला उड़कर दूसरे स्थान को चला जाता है ऐसे
का बन ४ लाख वर्ग मील का है और कृषि योग्य भूमि केवल
हज़ार वर्ग मील है अर्थात् नील नदी के तटपर दोनों ओर पांच
मील तक उत्तर की ओर बहुत सी नवीन भूमि भी नील नदी
मिट्टीले जाने से बनी है- तमलूक नगर जो अब समुद्र से ६० मी
अंतर पर है बारह सौ वर्ष पहिले एक चीनी देशाटन करने
उस को समुद्र के तटपर देखाथा – इस देश में कृषि वर्षा हो
ही नहीं होती - वर्षा इस देश में बिल्कुल नहीं होती - सम्पूर्ण
नीलनदी के पानी से सींचे जाते हैं और नदी के बढ़ने की राह
ऐसे देखते हैं जैसे यहां पर वर्षा होने की । यह नदी प्रत्येक वर्ष
यत समय पर बाढ़ पकड़ती है सम्पूर्ण भूमि उससे डूब जाती है
नियत समय पर उतर जाती है तब किसान लोग पृथ्वी खाली प
फसल बोते हैं, यह नदी ३५०० मील लम्बी है इस में बहुधा
सोते हैं इस के किनारों के दोनों ओर दूर तक पक्के बंद बांध दि
जिस में पानी प्रबंध से विभक्त होजावे और स्थान प्रति स्थान
स्थर लगे हुए हैं जिन से नदी की बाढ़ की गणना होती है कि कि
ऊँची चढ़ी क्योंकि उसी के अनुसार सर्कारी कर लगता है जंग

देश में देखने को नहीं मिलते, कहीं २ खजूरों के समूह दि
खाई गोचर होते हैं परन्तु यहां कम देश में भेजी जाती है इ
इस देश में धान कपास उत्पन्न होते हैं कि भोजन के पदार्थों में प
की जाती है, अनार नारंगी और खजूर अधिकता से उत्पन्न
हैं, गेहूं मक्का और बाजरा की उपज है, रुई यहां बहुत अ
और अच्छी होती है, तमाखू और केला भी कम नहीं होता।

जानवर-वर्ग (एक हिंसक जीव) भेड़िया, और लोमड़ी प
होते हैं गधे और ऊंट बोझ ढोने के काम में लाये जाते हैं, हवा
से चलाते हैं भैंस थोड़े समय से यहां पहुंची है, मगर मच्छ प
बहुत होते थे परंतु अब बिलकुल नष्ट होगये, काला सांप औ
होता है।

निवासी-यहां के मुसलमान और ईसाई व फिलाहीन तीन प्र
के हैं जिनमें से फिलाहीन यहां के प्राचीन निवासी हैं, राज्य अ
दल मुसलमान बादशाह का है जो खदेव कहलाता है और सुल
न के अधीन है परंतु अंगरेज़ों ने चूंकि उस देश में सुख स्थिर
था और बहुत सी उन्नति की हैं इस लिये उनका अ
कार भी नाम मात्र है, वर्तमान समय में अरबी भाषा बोली जा
है, पहिनावा भी बिलकुल अरब वालों कासा है और सब रंग ढ
भी वैसे ही हैं। परंतु इस देश के मनुष्य भाषा व मत व रीति
चित्त लुभाने वाली सुनने के योग्य हैं वह सब प्राचीन काल के
इस लिये हम प्राचीन समय में जो मिश्र की दशा थी उसीका वृ
त सुनाते हैं।

प्राचीन इतिहासिक वृतांत लिखा है कि सृष्टि के प्रारम्भ
में प्रथम राजा मनी हुआ जिस ने देशों व धर्म के शास्त्र बनाये
और नगर बसाये इसका समय इतिहास लिखने वाले यूरोपियों ने
मसीह से ५००० वर्ष पूर्व विचार किया है इसके वंश में बहुत रा-
जा हुए और कई वंश बदले। चौथे वंश में एक राजा खूफ हुआ
जिसने अपनी समाधि [क़बर] के हेतु प्रसिद्ध पहाड़ की सदृश

म बनवाया Pyramid उसके पश्चात मसीह के ४००० पूर्व तत्कार सा पुस्तक ताड़ के पत्तों पर लिखी गई। जो तक वर्त्तमान है, फिर छठे वंश में मैनकर राजा हुआ जिसने रम बनवाया फिर पूर्वसे आकर गलनवहत और शस्तसेन जा हुए फिर पांचसौ वर्षतक ग्वाल लोगों का राज्य रहा इनके नय में कनान से बनी इस्रायल यहां आकर बसे और हज़रत इ- हीम और हज़रत यूसफ़ आये फिर तोतमी बादशाह हुआ जि- ने शाम व सौडान तक विजय किया फिर मसीह से १५०० वर्ष र्व एक सबसे बड़ा राजा मिश्र का हुआ जिसके नामके अर्थ बड़े म के हैं Rames great इसने यूरोप, हबश, ईरान और भारत तक सम्पूर्ण देश विजय कर लिये वह अपनी गाड़ी में विजय किये हुए राजाओं को जोड़ता था (कदाचित इसी को पुराण में रथुराम लिखा है) फिर मसीह के ४०० वर्ष पूर्व मिश्र को ईरान के बादशाह ने जीता और सम्पूर्ण मन्दिरों को नष्ट करदिया फिर के सिकन्दर ने जीतकरके यूनानी राज्य बिठाया फिर रूमियों का राज्य हुआ और ईसाई मत फैला फिर खलीफ़ा उमर के समय में मुसलमानों ने जीतकर अपना अधिकार बिठाया, मिश्र के प्राचीन बादशाह फिर उन कहलाते थे।

मत। मिश्र के प्राचीन निवासियों का मत बिलकुल हिंदुओं का सा था बैल, सांप इत्यादि की प्रतिष्ठा करते थे इनके देवताओं के नाम एसी, रा. पथा अथोर सेबकरा इत्यादि हैं जिनमें दोनों साकार राम और दुर्गाके बिगड़कर बने हैं, नक्षत्रों की भी पूजा करते थे, करनाक में सूर्य का मंदिर था मेले और तेवहार बहुत रखते मंदिरों में मूर्ति रखकर पूजते थे और चांदनी पूजा करते थे और गाय व बैल को भी पूजते थे, गरुड़ भी इनका एक देवता है, इनके यहां एक पुस्तक गरुड़ पुराण की समान लिखी है जिसमें मरने के बाद मनुष्य के आत्मा की जिस प्रकार परीक्षा होती है उसका दृष्टांत दिखाई।

अद्भुत भाषा - प्रत्येक देश का लेख तो एक दूसरे
है परन्तु मिश्र वालोंका लेख जिसकी है उसमें प्रत्येक शब्द
एक जानवर की सूरत नियत थी वह सूरत यातो उस
प्रगट करती थी या उसका कोई कर्म्म जैसे हंसने के लि
शब्द बनता था कि एक मनुष्य नाचरहा है, बुद्धिमानी [
के लिये गीदड़ की सूरत, यह लेख दो प्रकार का अर्थ
एकतो प्रत्येक चित्रसे एक शब्द बने जिससे किसी बात
सन्मुख आजावे, दूसरा प्रत्येक चित्रसे एक मुख्य [illegible]
लिया जाता है औ [illegible]
में कुल १७०० शब्द [illegible]
और बहुतसे लेख [illegible]
ढ़ना हंसी ठट्टा नहीं था वरन असम्भव था विद्वान मनुष्य,
होजाते थे अंतको सन् १७९९ ई० में रोसट्टा स्थान में एक
मिला जिसमें एक लेख तीन प्रकार के अक्षरों में लिखा था
फरांसीसी विद्वान ने अकललड़ाकर पढ़ातो ज्ञात हुआ कि
के दो सौवर्ष पूर्व्व का लिखा हुआ है उसके पढ़लेने से
अद्भुत लेखका ढंग ज्ञात होगया।

मोमियाई--मिश्र वाले अपने मृतक को न गाड़ते थे न
थे वरन एक अच्छे बक्स में मसाला लगा कर सुगंधितद्र
सुगंधित कर के रखते थे इस प्रकार वह लाश सहस्रों वर्ष
बिगड़ती थी फिर जब चाहते उस का मुंह खोल कर दे
तूतमी और परशुराम इन दोनों राजाओं के शव जो ४०००
पुराने थे मोमियाई बनी हुई यूरोपियों के हाथ लगी उनको
तो बिलकुल जीवित ज्ञात होती थीं, नेत्रों की शोभा ओष्ठ व
की लाली में कुछ भी अन्तर न पड़ा था वरन उनके गलों
पुष्पों की माला थी उनकी भी रंगत न बिगड़ी थी बिलकुल
ताज़े हुए ज्ञात होते थे परन्तु [illegible]

ई मोमियाई औषधि के काम में भी आती थी अर्थात् जहां कि
नुष्य का कोई अंग नष्ट हुआ तो उसके स्थान में मोमियाई श
उसी अंग का टुकड़ा लगा दिया ॥

प्राचीन भवन-इस में थीब्स, मम्फस, करनाक, हिलो पोल
ार थे इन में अत्यंत भारी २ घर किसी समय में होंगे जिन
डहर आज कल मिलते हैं प्रत्येक महल या मंदिर की दीवारें
त्रों से अलंकृत थीं जिन से उन बादशाहों की कार्यवाही प्र
ो जिसने उसे बनवाया और जिग्राती अक्षरों में लेख लिखे उ
, स्तम्भ पत्थर के ऐसे गोल और बड़े लगाते थे कि जिन को
हीं समझ सकते कि यह किस प्रकार से तराशे गये होंगे यों
ाकड़ों बड़े२ घरों के खंडहर यहां पर हैं परन्तु Pyramid
कार के स्तम्भ जो अहराम मिश्री कहलाते हैं संसार में प्रसिद्
ाब से बड़े तो काहिरा से १० मील के अंतर पर नील नदी के
मी तट पर हैं इस स्थान पर प्रथम ममफस नगर बसा हुआ
हां अब बन है यहां किसी समय बड़े अच्छे महल और बा
उपवन आदि थे यह स्तम्भ त्रिभुजाकार पर्व्वत की सूरत व
ई सौ गज़ लम्बा इतना ही चौड़ा नीचे है इसकी ऊंचाई १६०
. २०६ साढ़ियां इसमें हैं और एक लाख मजदूरों ने २० वीस
नाया था. इसके पत्थर समान भाव से ऐसे अच्छे मसाले से
ै कि इन में सुई नहीं समा सकती इसी के भीतर राजा और
ी समाधि है उस के सन्मुख एक सिंह की सूरत जिसके मुर
आकार मनुष्य का सा है यह ४० गज ऊंचा है (Phoenyx
में भी साढ़ियें लगी हुई हैं और यह इतनी बड़ी है कि इस की
के मध्य में एक बड़ा मंदिर बना है और आश्चर्य यह कि
ही पहाड़ से काट कर बनाई है करनाक के मंदिर में १४० स
हैं एक२ स्तम्भ एक २ कमरे की समान मोटा और २० गज़
है और सैकड़ों आश्चर्यान्वित घर हैं ॥

वर्तमान समय-में इस की राजधानी काहिरा नगर है

चार सौ मसजिद हैं कोइर इन में से अधिक यहां
अजहर यहां का बड़ा कालिज है जिस में कई सहस्र
को शिक्षा पाते हैं, यहां के मनुष्य सिर पर पगड़ी बां
पहिनते हैं और कमर कसते व ढीला पाजामा पहि
बाहर घूंघट निकालकर चलती हैं जिस प्रकार हम
बगल में ले कर चलते हैं फिरंगी लोग गोद में उठाते
के जंगली लोग कमर पर बांधते हैं उसी प्रकार मिश्र
कंधे पर बिठाते हैं, भोजन के पूर्व हाथ धोते हैं प्र
प्रातःकाल उठना है सींचने के लिये पानी ढेंकली से ल
मचानपर बैठकर गोफन से पक्षियों को उड़ाते हैं मनु
मत के पक्षपाती और देश हितैषी होते हैं, ज्योतिष आ
मानते हैं यंत्र प्रत्येक मनुष्य बांधता है रमल का बहु
गधे पर बड़ी अच्छी भांति चढ़ते हैं स्त्रियें ओट में र
में वेश्याओं का नाच होता है प्रति ८ मनुष्य पीछे ७
हैं सिर मुंडवाते हैं सिर पर केवल छोटी सी शिखा र
भारत वर्ष की भांति आभूषण पहिनती है और मांस
व्यभिचारिणी स्त्री को मार डालते हैं मुहर दार अंगूठी
हते हैं प्रत्येक द्वार में कुरान मजीद की आयत लिखी है
भारत वर्ष के से होते हैं दासत्व की अधिकता बहुत
का प्रचार अधिक है छपी हुई पुस्तक को पसंद नहीं क
कोई नहीं पीता नित्यस्नान करते हैं नेत्रों के रोग अधिक
मनुष्य मिश्र की समान और कहीं नहीं होते हैं यहां
बड़े प्रेमी होते हैं और यहां की देश हितैषिता प्रसिद्ध है

[१४]

सुनसान अफ़्रीका के असभ्

चार सौ मसजिद हैं कोई२ इन में से अत्यंत बड़ी और उन्नत हैं अज़हर यहां का बड़ा कालिज है जिस में कई सहस्र विद्यार्थी मत की शिक्षा पाते हैं, यहां के मनुष्य सिर पर पगड़ी बांधते हैं, चोगा पहिनते हैं और कमर कसते व ढीला पाजामा पहिनते हैं, स्त्रियें बाहर घूंघट निकालकर चलती हैं जिस प्रकार हम लोग बच्चों को बगल में ले कर चलते हैं फिरंगी लोग गोद में उठाते हैं, आमेरिका के जंगली लोग कमर पर बांधते हैं उसी प्रकार मिश्र वाले बच्चेको कंधे पर बिठाते हैं, भोजन के पूर्व हाथ धोते हैं प्रत्येक मनुष्य प्रातःकाल उठता है सींचने के लिये पानी ढेंकरी से लाते हैं कृषिक मचानपर बैठकर गोफन से पक्षियों को उड़ाते है मनुष्य बड़े कट्टर मत के पक्षपाती और देश हितैषी होते हैं, ज्योतिष जादू आदि को मानते हैं यंत्र प्रत्येक मनुष्य बांधता है रमल का बहुत प्रचार है गधे पर बड़ी अच्छी भांति चढ़ते हैं स्त्रियें ओट में रहती हैं ब्याह में वेश्याओं का नाच होता है प्रति ८ मनुष्य पीछे ७ मनुष्य यवन हैं सिर मुंडवाते हैं सिर पर केवल छोटी सी शिखा रखते हैं, स्त्रियां भारत वर्ष की भांति आभूषण पहिनती है और मांस नहीं खातीं। व्यभिचारिणी स्त्री को मार डालते हैं मुहर दार अंगूठी सब पहिनते हैं प्रत्येक द्वार में कुरान मजीद की आयत लिखी होती है घर भारत वर्ष के से होते हैं दासत्व की अधिकता बहुत है तलाक का प्रचार अधिक है छपी हुई पुस्तक को पसंद नहीं करते मदिरा कोई नहीं पीता नित्यस्नान करते हैं नेत्रों के रोग अधिक होतेहैं अंधे मनुष्य मिश्र की समान और कहीं नहीं होते हैं यहां के मनुष्य बड़े प्रेमी होते हैं और यहां की देश हितैषिता प्रसिद्ध है ॥

•—— ※ ——•
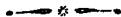
सुनसान अफ़्रीका के असभ्य
(जंगली)

अब हम उन जंगली जातों का वर्णन करते हैं जो अफ्रीका के अ-
ति कठिन सुनसान वनोंमें रहते हैं जहां आजतक सभ्य मनुष्यों
का गुज़र बहुत कम हुआ है उनके देश व नगर का कुछ पता नहीं
लिखते क्योंकि न इनका कोई घर न मकान जंगली मनुष्य हैं कुछ
प्रबंध के साथ नहीं रहते न इनके भाषा व राज्यका वर्णन
कहने योग्य है इतिहास इनका बस यही है कि इसी प्रकार
खाते पीते इनके बाप दादा मरगये इसी प्रकार यह मरजावेंगे इस
लिये केवल इनके स्वभाव और रीतों काही वर्णन करना उचित
समझते हैं।

बरबरलोग जो सहारा [वन] में रहते हैं कभी स्नान नहीं करते
चाल वस्त्र पहिनते और बड़े मत के पक्षपाती होते हैं जहां पानी
मिलता है वहां चौपाये लेकर ठहरते हैं।

गानचों - लोग जो कनेरी द्वीपों में रहते हैं धातु का वर्तना बिल्कु
ल नहीं जानते, बैल के सींग से हल जोतते हैं, ईश्वर और भूत प्रेत
को मानते हैं आवागवन को भी मानते हैं अपने मृतकों को मसाला
भर कर रखते हैं परंतु इन लोगों को हस्पानिया वालों ने पकड़ २
कर दासत्व में बेच डाले अब इस देश में दोगले [वर्णशंकर] मनु-
ष्य होते हैं जो उनकी और हस्पानियां वालों की संतान हैं।

नाक के ऊपर से सिर पर होती हुई गर्दन तक छोड़ देते हैं स्नान
करके केवल अंग में वालू मलते हैं वस्त्र बिलकुल नहीं पहिनते कांटे
खोवड़े से रक्षा के निमित्त चमड़े की खडाऊं पहिनते हैं स्त्रियों की
अधिक प्रतिष्ठा है कई स्त्रियों को रखना मना है और स्त्री
कोतलाक़ देना बिलकुल मना है । संतान मा के रक्त से उच व
नीच समझी जाती है जहां कोई मर जाता है वहां से डेरा उठाकर
दूसरे स्थान पर जा बसते हैं मत कुछ ईसाइयों का सा है जादू मन्त्र
को भी मानते हैं यंत्रादिक ऐसे पहिनते हैं जिन में कुरान की आयत
लिखी हो मृतक के लिये बिलकुल नहीं रोते ।

बद् यह गढ़ों और पहाड़ों की गुफाओं में रहते हैं बुरे से बुरा फल
और सुखाया हुआ गोश्त सब खाजाते हैं कई दिन तक भूखे रहस-
के हैं बीमार बहुत कम होते हैं बिचारे अवस्था भर में एक बार भी
[illegible]सना नहीं जानते नाचने गाने के स्थान पर बकवाद अधिक कर
[illegible] मत मुसलमानी है उनके प्रधान हैं परंतु न कुछ सेना न कर आ[illegible]

वालसी लोग बांये घुटने पर सीधा पैर रखकर जोगियों का स
[illegible]ासन मारकर खडे होते हैं स्त्रियां कौडियों की माला पाहेनती हैं

[illegible]ाला - स्त्री पुरुष एकसा चोगा पहिनते हैं सिर पर टोपी , शु
[illegible]र मुर्ग का पर वह मनुष्य लगा सकता है जो एक मनुष्य को मा[illegible]
[illegible]का हो प्रत्येक मनुष्य चौपाये बहुत रखता है, कोई घोड़ा और
[illegible]ुमक्खी ही को पालता है यदि चंदी हो जाये तो भूखा मरजाये
[illegible] परंतु स्वामी का कहना न मानेगा—इतने कट्टर—स्त्री अपने पुरुष
[illegible] छोड़ सकती है, पुरुष एक से अधिक स्त्री नहीं रख सकता
[illegible]सों का मत ईसाई और किसी का मत मुसलमान - और शेष
[illegible]दुवों की समान हैं ।

टोका - यह चौपाये अत्यंत पालते हैं - रात्रि को सब्जी इनपर
[illegible]रा देता है, पुरुष बिलकुल नग्न परंतु सिरपर अ-
[illegible] [illegible] के लिये एक अ-

मट्ठेका टुकड़ा बांधलेती हैं और पीछे एक घोड़े कीसी पूंछ लगाती हैं सम्पूर्ण सिर मुंडा हुआ और सिरपर सिंदूर व चर्बी मली हुई-कोई मत या विचार नहीं है।

दानाकेल। सिर के बाल देखे जैसे पर्वती चूहा उसपर सेंट का कांटा लगा हुआ यह व्योपारियों के समूह की रक्षा करते हैं, इन्हींसे जो कुछ मिलता है उसी पर काल क्षेप करते हैं।

दना यूरो यह मनुष्य अपने मृतको को द्वार पर ही गाड देते हैं बिना कफन के गाड़ते हैं मनुष्य बाईं ओर स्त्री दाईं ओर-

अक्का - इनका आकार छोटा होता है, बिलकुल बंदर का सा ओठ मोटे, मुंह निकला हुआ, सिर बिलकुल गोल, कान बहुत लम्बे मुंह फटा हुआ, सिर और दाढ़ी के बाल भूरे रंग के और छोटे-शिकार भली प्रकार से खेलते हैं मुर्गियां पालते हैं लिखना पढ़ना सीख सकते हैं - दयशी बादशाह उनको बंदर की भांति पालते हैं।

मौनबटूट-यह मनुष्य मर्दा हैं इनका राजा मनज़ा है जिसका घर बड़ा भारी व लकड़ी का बना है यह युद्ध के बंदी को पानी के साथ उबाल कर उसकी खाल छुरी से शकरकन्द की भांति छीलते हैं-कृषि कार्य और चौपायों से इन्हें प्रयोजन नहीं है। अतिरिक्त युद्धके और समय आहार - केला भी खाते हैं, घी के स्थान पर मनुष्यकी चर्बी को काम में लाते हैं स्त्री के सिर के बाल हैं या अकरन बहुत

रसिक, लकड़ी के काम अच्छे बनाते हैं स्त्रियां और दासों से हां कर्म्म कराते हैं युवा पुरुष ब्याह के लिये सर्दार से विनय करता, वह जोड़ा खोजकर के मिलाता है पुरुष स्त्री के घर जाकरके रहता है और स्त्रीपर प्रेम करता है बरात में गाने वाले और भांड आते हैं मूर्ति पूजक नहीं, भूत जिन्न आदिको जानते हैं कि बनों में रहते हैं और जब वायु से पत्ता खड़कता है तब समझते हैं कि प्रेत बातें करते हैं।

वोंगो । डाढ़ी मूछ बिल्कुल नहीं रखते, नमक के स्थान पर जवाखार का सेवन करते हैं तमाखू बहुत पीते और उत्पन्न करते हैं आदमी और कुत्ते के अतिरिक्त सबका मांस खाते हैं ऊपर के ओष्ठ में छेदकर के कील या छल्ला लगाते हैं शरीर में भी स्थान प्रति स्थान छेदकरके कील गाड़देते हैं, लोहे के कड़े पहिनते हैं, नीला गुदवाते हैं, स्त्री को मोल लेकर ब्याह करते हैं, तीन स्त्रियों से अधिक नहीं रखसके, घरका द्वार इतना छोटा रखते हैं कि घुटनों के बल जाना पड़ता है बड़े बुद्धिमान लोहार हैं, फावड़े, चाकू जंजीर, संडासी बहुत अच्छे बनाते हैं इनकी जातिमें फावड़ा सिक्के की नाईं तबादिले में लिया जाता है लकड़ी का काम बहुत ही उत्तम बनाते हैं गाने बजाने के बड़े रसिक हैं और बाजे अत्यंत अच्छे और अद्भुत बनाते हैं एक बाजे में से कुत्ते का भूंकना, बुलबुलों का लड़ना, भेड़ का मिमियाना सब राग निकलते हैं भूतों को पूजते हैं लाम ईश्वर कानाम समझते हैं और उससे बहुत डरते हैं मृतक को तोड़ मोड़कर छोटा पुलिंदा बनाकर ऊपरसे खाल में बंदकरके गाड़ते हैं पागल को नदी में डुबाकर और रोगी को उबलते हुए पानी में स्नान कराकर चंगा करते हैं।

बारी , स्त्री पुरुष सिरके बाल मुंड़वाते और बाज कोट पहिनते हैं चौपाये से बड़ा प्रेम करते हैं स्त्री पकड़के को बेचकर गाय मोल लेते हैं शरीर में नीला गु

पश्चरमी । दूध के मरजाने से आनन्द करते हैं चावल
देश में छोटा उत्पन्न होता है, कपड़ा सिक्के की भांति च
घोड़े पर बिना जीन व रकाब के सवार होते हैं और अपने
दांत उखाड़ डालते हैं, गाय, बिल्ली को निकट नहीं आने दे
को दास की भांति बेच सके हैं, तीन लड़के उत्पन्न कर
स्वामी के ऋण से उऋण हो जाती है फिर जहां मनभावे त
मृतक के लिये कुछ कौड़ियां राह के व्यय के लिये. और एक
व लड़की उस के मुंह पर की मक्खियां उड़ाने को गाड़ देते
चार की मदिरा पीते हैं।

दवाला । बच्चे शीघ्रही युवा होजाते हैं नौ वर्ष की अवस
ब्याह करके एकांत घर बना करके व्यापार करना आरम्भ क
हैं, लड़कियां काम में लाने या व्यौपार करने के प्रयोजन से
जाती हैं इनके यहां ढोल के तारबर्की का प्रचार है जब कोई
चार पहुंचाना होता है ढोल को मुख्य भांति से बजाते हैं फि
उस का शब्द सुनता है वह तुरन्त अपना ढोल उसी भांति
जाता है इस प्रकार थोड़े ही बिलम्ब में सम्पूर्ण देश में वह
चार पहुंच जाता है परन्तु इस ढोल के शब्दों के अर्थ को दा
अपढ़ मनुष्य नहीं समझ सका।

पंगोई - चाभियों का गुच्छा गर्दन में लटकाते हैं, जिस
देखने वाला उनको अधिक संदूकों वाला समझे

वकालई - मनुष्य मरजावे तो घर छोड़कर भाग जावें, बाप
मरने के पश्चात् बेटा उसकी सम्पूर्ण स्त्रियों का स्वामी अतिरि
अपनी मा के बनता है

क़ाईक़ाई । अर्थात् हाटेंटाट लड़का मा का नाम और लड़की
का नाम रखती है, भाषा उनकी ऐसी जैसी कोड़ा चटकानेसे आवा
होती है या घोड़े को हांकने के लिये तिक २ करते हैं, इनका कथन
कि इन्हीं अवय, एक देवता पूर्व से आया उसने सम्पूर्ण देश वि
जय किये इसी लिये घर का द्वार पूर्वकी ओर रखते हैं

करालकाफिर । सिर पर चोटी रखते हैं, अंग पर तेल मलते
स्त्रियें मुंह पर गेरू पोतती हैं, शरीर में नीला गोदवाती हैं, मृगछा

ला थोड़े सागपात पर कालक्षेप करते और शहद खाते हैं परंतु नमक से विचार करते हैं, चौपाये पालते हैं बड़े अतिथ पोषक-पथिक को गायका मांस खिलाते हैं जिसको वह आप नहीं खाते, दूध को मश्क में भरकर रखते – कई दिन के पश्चात् जब वह जम कर खट्टा होजाता तब खाते – स्त्री की कमाई खाते, सौतों में लड़ाई रहैव – तलाक की मनाही, परंतु व्यभिचारिणी को दंड, तन स्त्रियों के इतने लम्बे और ढीले कि कंधे पर डाललो – खतने कराते हैं परस्पर मेल मिलाप रखते हैं, दस से आगे गिनती नहीं जानते, भूत काल और अवस्था का वृत्तांत उनके पुरखा भी नहीं जानते, राजा को कर में चौपाये या हाथी दांत देते हैं, मत कुछभी नहीं, जादू शकुन को मानते गाना, बजाना जानते और ब्योपार करते हैं।

डमारा। न गिनती गिनसकते हैं न अवस्था बतलासकते हैं, सूरज जो प्रातःकाल निकलता और संध्या को डूबता है एक नहीं समझते, इतने मूर्ख – रोगी को घर से निकालदेते और गला घोंट कर मार डालते हैं फिर शवको सीकर गाड़ देते हैं और समाधि (क़ब्र) पर कूदते हैं ताकि रोगी बाहर न निकलने पावे चर्म (शिकारी जानवर) की घांट सब रोगों की औषधि है शरीर पर चर्बी मलते हैं राजा की लड़की प्रत्येक समय अग्नि प्रज्वलित रखती है

बांटू-एक मनुष्य कई स्त्री रखता स्त्रियों को मर्द ही बेच डालता या उसके मा बाप, स्त्रियें सब काम करती हैं मृतक को प्रथम घर में बांधकर सड़ाते हैं पश्चात् गाडते हैं। अपने दांत सो हान से रेत डालते हैं॥

मनीमा। सिर पर मिट्टी के सींग लगाते हैं, चोटी में छल्लेदार मेंधि पोंड़ु को लटकाते हैं, बालों में गेंडा डाल कर अद्भुत शकल बनाते हैं।

विनाइका। बड़े बकवादी, टटोले, स्त्री को मोल लेते हैं जब तक कि एक मनुष्य को न मार ले युवा नहीं समझा जाता।

मासी। बड़े लड़ाका, अच्छी सेना रखते हैं, या तो सब कट मरते हैं या सब को मार डालते हैं, दास नहीं बनाते, धैर्य और जाबूर से रहते हैं।

मेडेगास्कर टापू का वृत्तान्त

ईश्वर ने प्रत्येक देश के साथ एक टापू भी बनाया है
वर्ष के साथ लंका, चीन के साथ फारमूसा, यूनान के साथ
अमेरिका के संग जमेका, इसी प्रकार अफ्रीका के संग मेडेग
जो इस के पूर्व में है, प्राचीन काल से यहां हिन्दुओं का राज
जिस के चिह्न अब तक वर्तमान हैं, रावण का बेटा नरांतक
द्वीप का राजा था।

इस में जो जातियें निवास करती हैं उन के नाम शाकाला
वत्सी मशरक, सिंह नाक, तानल, ननकाई, हौवा, वत्सी लेव,

शाकालावा। यह मनुष्य प्रथम यहां के राजा थे अ
दृढ़ और अच्छे शस्त्र रखने वाले, यह लोग बड़े शक्की
बुरे चित्त के होते हैं यूरोपियों को दुख देते हैं, एक दूसरे
विश्वास नहीं करते, प्रति दिन लड़ते भिड़ते हैं इन की एक
अन्त करन मृतक के शव को लाल में लपेट कर रस्सियों से बां
हैं, कई दिन तक मदिरापान करते और बन्दूक छोड़ते हुए उस
समाधिस्थान में लेजाते हैं, यह लोग यवन और ईसाइयों से
करते हैं एक ईश्वर को पूजते हैं और जाति पांति रखते हैं।

सिंह नाक। यह लोग कृषी करते हैं और चौपाये पालते,
तिथ और मुहूर्त व शकुन इत्यादि को मानते हैं पुरुष धोती बां
और स्त्रियां लहंगा पहिनती हैं।

हौवा। यह लोग जावा से यहां आये और मलाया जाति के
राज्य के योग्य प्रथम श्रेणी के और परस्पर बड़ा प्रेम करते हैं।

वत्सीलेव। यह लोग बड़े अतिथ पूजक होते हैं, बदमाश
भी पथिक उन के घर जा कर ठहरते हैं और माल उड़ाते प्रातःका
चलते समय छिप कर उन के बाल बच्चे दास बनाने को लेजाते
संतति ऐसी आज्ञाकारी कि प्रत्येक बेटा वृद्धबाप को कंधे पर
कर चलता है।

ल्पकारी । मेडे गास्करी लोग बड़े शिल्प कार होते हैं घस्र
न्दर बनाते हैं रुई रेशम के अतिरिक्त ताड़ के पत्ते और केले की
ल का वस्त्र बुनते हैं, लकड़ी के घर बनाते हैं, देश में सड़कें अ-
न्त न्यून हैं पथिक के लिये राहचलना आफ़त है कोईसवारी नहीं
नुष्य के कंधे पर सवार होना पड़ता है।

मत - दृद्ध पुरुषों और देवताओं की मूर्तें पूजते हैं एक ईश्वर
ो मानते परन्तु आत्मा [भूत प्रेत] आदि से भी भय करते हैं,
ादू मंत्र इत्यादिक सत्य मानते हैं, पुजारी लोग मंदिरों में भावी
विचार करते हैं मूर्तों को मखमली वस्त्र पहिनाते हैं युद्ध रोग व
र्भिक्ष के समय मूर्तों की सवारी निकलती है कि दुःख को दूर
घब ईसाई मत फैलता जाता है गवर्नमेंट हौवा जाति के देशो
ा का राज्य है फरांसीसियों ने लड़ भिड़कर अपने आधीन कर
या है रानी रानावलोना महारानी है यहीं सुघड़ मेम का समान
पर्दा नहीं रखती मुकुट पहिनती है नियम यहांके किसी २ बातों
मद्भुत हैं जैसे यदि किसी के घर आग लगजावे तो उसको दण्ड
ना पड़ता है, मुर्गा चोरावे तो सिर मूंड़ा जावे, मनुष्य संख्या
व ४० लक्ष है मोरीशसद्वीप जिसको मिर्च का देश कहते हैं एक
ाटासा द्वीप इसके निकट है प्राचीन निवासी बिलकुल न थे भारत
र इत्यादि देशों से लोग यहां भेजे गये यहांरंग, रुई, तेल उत्पन्न
ोता है इसकी मनुष्य संख्या में दो तिहाई हिंदू हैं।

अमेरिका का वर्णन :

इसको नई दुनिया भी कहते हैं क्योंकि इसकी संधि
थोड़े ही दिनों में प्रगट हुई है जबसे यूरोपियन पहुंचे इस
यहांपिल्कुल जंगली मनुष्य बसते थे कहीं २ पर सभ्य राज
परन्तु विदेशियों को यहांका वृत्तांत ज्ञात न था खान समु
संसार के उस तटपर सहस्रों कोस दूर यह एक अत्यंत बड़
का भाग है जहां सोने चांदी की अनगनित खानें हैं जल व
त्यंत अच्छा और देश निवास के योग्य है प्राचीन देशी रा
बड़े प्रभावशाली थे परन्तु वह अंगरेजों के सामने स्थिर न
अब प्रत्येक स्थान में यूरोपियों का राज्य है और यूरोपियों
बस्तियां गोया फिरंगी लोग अब इस देश के प्राचीन निवा
गये हैं यह देश अब यूरोप की भांति हरा भरा होगया है
विद्वान मुजिद फिलासफर यहां हैं बड़ी दृढ़ पंचायती राज
सेना सड़क रेल पुल घर भवनगढ़ बाजार उपवन सब कुछ
लोगों को मार २ कर जंगल में घुसा दिया है जहां यह छुप
और अपने दिन काटतेहैं और यहां के कंजर हाबूड़ों की
रहते हैं किसी २ सभ्य राजाने ईसाई मत स्वीकार कर लि
और अब साहब बहादुर बनगये हैं।

अमेरिक के प्रथम तो दो भाग हैं उत्तरी और दक्षिणी
दोनों इतने बड़े हैं कि प्रत्येक में कई २ देश सम्मिलित हैं
देश यह हैं कनाडा, संयुक्त देश, मेक्सिको, यूकटान, एक्वे
पीह बिराज़िल, ग्याना, चिली, पेटागोनिया, इत्यादि, इन सबमें
पियों का बड़ा दृढ़ राज्य है वनों और पर्वतों में देशी जंगली
बिना घरके मनुष्य समूहों के संग रहते हैं जो दूसरे अनजाने
प्य को निकट नहीं आने देते और थोडी सी आहटपर धनुष
लेकर युद्ध करने को तत्पर होजाते हैं यह लोग अपने मत
रीतपर स्थिर हैं और नवीन प्रकाश में आना अच्छा नहीं सम

यूरोपियन लोग जो अमेरिका में जाकर बसे हैं उनके रंग
ऐसे पलट गये हैं कि अपने प्राचीन निवासियों से बिल्कुल नहीं

स्वच्छ चित्त, मिलनसार और मत के पक्षपाती
स के संग ही स्वाधीन चित्त भी हैं फैशन और पहिरावे
इजायद उन्हों ने निकाली हैं मत सम्बंधी बातों और फिला-
बहुत सी नवीन बातें पैदा की है प्रत्येक तरह के ईजाद
त करने में अब यह यूरोप से बढ़ गये हैं अमेरिका के
रुष प्रत्येक वर्ष करोड़ों रूपया व्यय कर के पादरियों को
ंसार के प्रत्येक देश में ईसाई मत फैलाते हैं बंगाले के
विकानंद ने वहां जाकर हिंदू मत पर व्याख्यान दिया तो
गरेज़ फिरंगी हिंदू मत में हो गये, थियूसूफिकिल सुसा
रिज़म फ्रीना सोजो और होमियो पेथिक सब की बहार
में जाकर देखो।

ों को अमेरिका सदैव से ज्ञात थी वह इसको पाताल लो-
थे क्योंकि यह ठीक हमारे पांव के नीचे है यहां हिंदुओं
गमन था बरन हिंदुओं ने बहुत दिनों तक इस देश में
के अपना मत फैलाया था कृष्णजी का पाताल लोक को
ा पाले से असुरिया देश की गद्दी छीन कर उसे पाताल

हिंदू और मुधमन के जो अमेरिका को गये वह पूर्व की
हो कर वहां पहुंचे, और प्राचीन समय में बेहरिंगस्थान
रिका एशिया से मिला हुआ था फिर समय के फेर से
बन गया परन्तु अब भी नावों के द्वारा जंगली मनुष्य दे
आते जाते हैं क्योंकि समुद्र बहुत कम चौड़ा है। १४९२
की समझ में अमेरिका को सब से प्रथम कोलम्बस ने स
में ज्ञात किया, वह भारत वर्ष की खोज में निकलाथा औ
अमेरिका पंहुच गया वहां जाकर उसने देखा कि देश
मनुष्यों का अधिकार है, सोना, चांदी अधिकता से व
मन उत्पन्न होता है तब उस ने लौट कर देश में यह बात
सुनाई और जो नये (जानवर) व पौधे उस देश से
वह सब को दिखाये, फिर क्या था तूभी चल और मैंभी चल
अपना २ घर बार और व्योपार को छोड़ कर सो
लूटने चले सहस्रों जहाज अमेरिका पंहुच गये और अच्छे
पर बंगले बना २ कर रहने लगें फिर शहर बसे न्याया
गढ़ बने, बन साफ़ हुए, पंचायती राज्य स्थिर होगा
पियों ने सेना लेजा कर वहां के देशी राजाओं को जीता,
सोना चांदी लूट लिया, और अपना घर भरा फिर जहां प
वहां खुदाई आरम्भ की और जहाज़ों में लाद कर सोना च
लगे, यूरोपियों के पंहुचने से पूर्व घोड़ा, बैल, कुत्ता और
अमेरिका में बिल्कुल नहीं थे यह लोग अपने संग लेगये,
म्पूर्ण देश में फैला दिये अमेरिका के प्राचीन निवासियों में
प्रकार की भाषायें बोली जाती थीं।

देशी आबादी - यूरोपी लोग देशियों को कुत्ते बि
भांति समझते हैं इस लिये इनकी संख्या दिन प्रति दिन
जाती है देशी भी बड़े कट्टर हैं रात को छापा मारते हैं औ
पियों को दुख पहुंचाते हैं इसलिये देशी और यूरोपियों की
बंदी है यूरोपियों की बस्ती में देशी नहीं घुसते और देशि

यूरोपीय शिकार को नहीं घुसते, तीन प्रदेश सत्तर हज़ार
…के केवल इन देशियों के निवास के लिये नियत हैं यह लोग
आनन्द पूर्वक रहते हैं लूट मार नहीं करते और सर्कार से
…व वस्त्र पाते हैं इनके छोटे २ गांव बसते हैं जिनमें पाठशाले
…लय व औषधालय भी हैं उनके जाति के ही प्रधान अपने
…शास्त्रानुसार अभियोगों का न्याय करते हैं प्रत्येक जाति के
…एक एजेंट यूरोपियनों का रहता है इनकी सीमापर सर्कारी
…में बड़ी सेनायें रहती हैं तौ भी यह लूटमार और चोरी से
हानि करते हैं।

मिसिसिपी नदी के तटपर बहुत से टीले ऐसे पाये जाते हैं जो प्रा-
…नगरों के खंडहर ज्ञात होते हैं उजाड़ में ऊंची भूमि खोदने से
…ष्यों के अस्थि पिंजर व घरों की दीवारें और पत्थरों पर कुंदे
…ए मिलते हैं

कनाडा - यह देश ३५ लाख वर्ग मील के क्षेत्रफल का उत्तरी
अमेरिका के उत्तर में है इसमें अंगरेज़ों का राज्य है चूंकि थोड़ेही
…यों से बसने का आरम्भ हुआ है इसलिये सम्पूर्ण मनुष्य संख्या
… लाख के लगभग है, ब्रिटिशकोलंबिया में सोना, चांदी और
कोयले की खानें हैं इस देश में बड़े घने बन हैं जो आजकल साफ़
किये जाते हैं।

यूनाइटेड इस्टेटिस - यह बड़ा भारी देश उत्तरी अमेरिका के
मध्य में है इसमें अंगरेज़ों का एक बड़ा भारी पुष्ट पंचायती राज्य है
प्रथम यह देश भी इंगलिस्तान के बादशाह के आधीन था परन्तु
यहां के निवासियों ने सर्कार से युद्ध करके स्वाधीनता प्राप्त की अब
यहां प्रजा अपनी ओर से राजा को चुनकर के गद्दीपर बिठाती है
[illegible] स्वाधीनता की इतनी अधिकता है कि स्त्रियें डाक्टरी
वकालत और सर्कारी मुलाज़िमत का व्यवहार करती हैं ब्याह दोनों
[illegible] की रज़ामन्दी से होता है और यह भी परीक्षार्थ हो एक
[illegible] के लिये [illegible] इस [illegible] अनुकूलता का [illegible]
[illegible] न हो तो [illegible] का [illegible] वर्ष की [illegible]

विद्या और नवाविष्कृत बातों में यहांके मनुष्य सब
में अव्वल हैं चिकागो अन्न की सबसे बड़ी मंडी है
ई० में सृष्टि प्रदर्शक प्रदर्शनी हुई थी जिस में
मनुष्य दूर देशों से गयेथे कुदरती वमसनुई व वि
की बड़ी भारी परीक्षा हुई थी इसकी आश्चर्यान्वि
त्यारियों के वर्णन करने के लिये एक पुस्तक अलग
प्रत्येक प्रांत में कुछ मौजे पाठशाला के व्यय के लिये
पाठशाला में फीस नहीं ली जाती बच्चों को पढ़ाना
है पदार्थ विज्ञान की अधिक उन्नति है और बहुत से
का आविस्कार हुआ रेल के कुलीको सामान सुपु
सौदागर सै वस्तु ले घरसे मूल्य भेजदो रेलमें हर प्र
संग चलतीं हैं पृथ्वी के भीतर व पृथ्वी से ऊपर भी
नगर में हैं।

कालीफोरनिया ।) का छोटासा देश पश्चिमी तट
पर सोने की खान बहुत, चीनी लोग यहां बहुत बसते
देशी जातों भी कोरिया वालों की सी रस्म है कि जब
होता है तो पुरुष जच्चा बन कर सोवै और स्त्री बाहर

मेक्सिको । यहां बड़ा पुराना राज्य प्राचीन समय से
ओं का था अब वह लोग ईसाई हो गये, यह लोग घर ब
बनाते और बेल बूटे के काम में भी बहुत सुचतुर हैं, उ
हास में लिखा है कि सहस्रों वर्ष हुए तब उत्तर की ओ
राजा टाल्टक यहां आया उस ने घर बनाना, आभूषण
लिखना आदि सिखाया, और मका ई आदि भी यहीं
उस देश से लाया प्रथम यहां नहवा जाति के मनुष्य बसे
अरटक जाति के राजा मोन्तीजूमाने अधिकार किया यहां
भी मिश्रवालों की समान चित्र अक्षरी है, न्यायालय उत्
यारी. गढ़, सोना चांदी, रत्न पहिनते हैं, गाना बजाना भी
ई करता था

ते हैं धर्मशास्त्र की शिक्षा बच्चों को दीजाती है पूजा करते
और व्रत रखते हैं, जन्म पत्र मिलाकर ब्याह करते हैं और पंडित
दूल्हा दुलहिन की गांठ बांधता है, घर बिलकुल हमारे से बनाते हैं
नाज की रोटी और खुरपी की फली खाते हैं सन् १५२० ई० में
स्पेन वालों ने आक्रमण किया बिचारे देशी मनुष्यों ने इनको सफेद
देवता समझकर भोजदिया, फरंगियोंने महल में घुसकर राजा
को बंदी (क़ैद) कर लिया और सैनापति व मंत्री को जीवित
जलादिया और अपना अधिकार स्थित किया।

यूकेटान इस देश के भी मनुष्य बिलकुल ऊपर की समान हैं यहां
एक बड़ी बलवान जाति मय लोगों की थी इसी के राजा मय ने
लंका टापू में जाकर सोने के घर बनाये थे उस जाति के बड़े २
भारी महल और खंडहर अब तक ऊजाड़ पड़े हैं जिन पर घास
जमगई है परंतु वहां जंगली मनुष्य रहते हैं इस लिये कोई देखने
वाला नहीं जासकता इन घरों में बहुत महीन व सुन्दर काम की
जालियां, मूर्तें और चौकी व संस्कृत भाषा के लेख खुदे हुए मिलते
हैं जिनसे यहां के ऐतिहासिक वृत्तांत ज्ञात हुए हैं यह देश अमे-
रिका के मध्य में समझिये भारतवर्ष और चीन से जो लोग गये
होंगे वह प्रथम इस देश में पहुंचे होंगे और दूसरी ओर से कोल-
म्बस भी इसी देश के निकट पहुंचा था मनुष्य यहां के बड़े सुघड़
बलवान, और सभ्य होते हैं ग्वाटेमाला में कायची जाति बड़ी बल
वान है निकारागवा, हांदूरास, कोस्टारीका, आदि इन सम्पूर्ण रा-
ज्यों में देशी राजाओं का राज्य था जो स्पेन वालों ने छीनकर
अपने अधिकार में लिया।

निवासी। मेक्सिको, यूकेटान आदि देशी लोग बड़े बलवान,
सीधे और सच्चे होते हैं अधिक हंसना और बोलना पसंद नहीं
करते उनके विचारों का प्रगट होना कठिन है, बड़े सच्चे, अच्छा
गुणी, [illegible] बोलने वाले [illegible] ([illegible]) को पसंद करने वाले,
ये सच्चे [illegible], [illegible] और धर्मशास्त्र पर च-
लने वाले [illegible] [illegible] करने में बड़े हैं। [illegible] और
साधारण [illegible] होते हैं, बड़े [illegible] और बड़े वीर हैं

-परंतु भूरे बंदरों से डरते हैं, राजा खानदानी होते हैं, और प्र
गिपतकरती है, ब्याह कम अवस्था में होता है, मा, बाप की प्रति
ष्ठा और राजा का बहुत बड़ा प्रभाव होता है नृत्य करने वाले
मयूरों का पहिनावा पहिनते हैं जादू, मंत्र आदि का प्रचार है
ई २ मनुष्य गोरे रंग के और बहुधा तांबे की समान लाल रं
होते हैं ब्याह में बरात जाती है।

ब्राज़िल - अत्यंत बड़ा देश पुर्तगाल वालों के अधिकार में
जिनका मत ईसाई है, राजा यहां का स्वाधीन और बड़ा प्रभा
शाली है राज्य प्रबंध उत्तम होने से राज्यकी दिन प्रति दिन वृ
है, इसमें अमाज़न नदी इतनी चौड़ी और इस ज़ोर से गिरती
कि उसके कारण से २०० मील तक समुद्र का पानी मीठा होज
ता है, यहां देशियों के साथ फरंगियों का सा बर्ताव होता है,
प्रकार का खान और उपज की फसल और जंगल की अधिकता

वैनी जेवला । यहां फरंगियों का पंचायती राज्य है, को
लम्बिया ग्याना, ईक्वेडोर, बोलेविया, आदि और कई राज्य फरं
गियों के हैं. चिली में चांदी सोने की अनगिनत खान हैं, जिन
कारण से चांदी सस्ती हो गई.

पीरू । यहां प्राचीन समय में एक बड़ा बलवान राज्य देशी
राजाओं का था, जिस को बेईमान स्पेन वालों ने धोखा देकर छीन
लिया, इस देश में सोना चांदी इतनी अधिकता से उत्पन्न होता था
कि यहां के राजा के महल की दीवारें, छत और फर्श सब चांदी
का था सोट और तख्ते सब सोने के होते थ इतना द्रव्य देख कर
यूरोपियों का ईमान बिगड़ा और राजा को बन्दी करके
उस के कोष को लूटा. यहां के मंदिर में सोमनाथ के मंदिर से भी
अधिक रत्न और सोना चांदी इकट्ठा यहां के निवासियों का मत
हिंदुओं का सा है, यहां क्षत्री जाति [illegible] नुष्य बसते हैं, जो अपने
को सूर्यवंशी बतलाते हैं, यह मनुष्य [illegible] वीर, और सभ्य होते हैं,
परन्तु नेक और साधारण स्वभाव [illegible] के कारण से यूरोपियों का
आखेट बन गये यह लोग सूर्य को पूजते थे किसी २ स्थान में
[illegible] मंदिरों के खंडहर पड़े हैं, जिनके निकट खोदने

शेष या अस्थि निकलती हैं, नहर और कार्यालयों के चिन्ह ते हैं, पत्थरकी सड़कें सम्पूर्ण देश में थीं और डाकखाने स्थान स्थान पर लगे थे पांच प्रदेशोंमें राज्य था, सूर्य का मंदिर ऐसा तथा कि जिसकी उपमा संसारमें नहीं मिलती, सम्पूर्ण घर पत्थर थे, जिनमें चूना बिलकुल नहीं लगा, जोड़ ऐसे काटकर मिलाये कि न हिलते हैं न भीतर सुई समा सकती है यह धाम् और का जाति के स्मारक चिन्ह अब शेष हैं।

प्ररजन्टायन । में फरंगियों का पंचायती राज्य है यहां मनु- य संख्या थोड़ी और देश उपजाऊ है, इसलिये किसी बात की मी नहीं कोई कंगाल भूखा नहीं जितना चाहो खाओ और बिगाड़ो गाल भी अपने घोड़े का साज़ चांदी का बनवाता है, फल तर कारियों की न्यूनता नहीं प्राचीन निवासी भी स्वरूपवान होते हैं यूरपके। यहां गाय बकरी आदि की बड़ी अधिकता है मांस का सत निकालकर यहांसे दूसरे देशों को भेजा जाता है, सड़कें चौपायों के गलेपर रोज़ छुरा चलता है पादरियों ने देसियों को साई बनाया, और कोई पुरुष स्त्री का ब्याह बिना सोचे समझे प संग करादिया।

पन्टीगोनिया यह अमेरिका का दक्षिणी भाग है यहां के मनु बड़े बलवान देव की संतान ५ हाथ लम्बे होते हैं, बहुत कम आब पथरीला देश है यहां समुद्र के किनारे एक डाकघर है जिसमें पोस्टमास्टर है न पोस्टमैन, यहांजो जहाजी आता है वह पत्र ठिकाना लिखकर किसी स्थान किनारेपर डालदेता है फिर ा जहाज जब यहां पहुंचता है तो मनुष्य उतरकर अपने प खोजकर लेता है, वर्षा या आंधी से पत्रके नष्ट होजाने का डर नहीं है।

टूडिलफ्यूगो। टापू के निवासी भी दूसरे देशियों के दाढ़ी बिलकुल नहीं रखते टोपी भी नहीं पहिनते, किसी के श चाल ढाल की नकल उतारने में बड़े बुद्धिमान होते हैं चकम त्थर से आग बनाते हैं उनके कुत्ते समुद्र में डुबकी लगाकर छलियां पकड़ लाते हैं।

अमेरिकाके टापुओंका वर्णन

अमेरिका ...
सदय पर्फ से : ...
में यह उजाड़ था अब यूरोपियों ने यहां बस्तियां बसाई और
रजाघर बनाये हैं।

एलास्का । अमेरिका का उत्तरी भाग भी बड़ा बर्फिस्तान
इस में और ग्रीनलैंड दोनों में स्कीमू जाति के मनुष्य रहते हैं, जि
का हम नीचे वर्णन करेंगे यहां इस अधिकता से ठंड पड़ती है
तेल व दूध जम कर ईंट के समान बन जाता है।

स्कीमू । बर्फिस्तान में रहते और कच्चा मांस खाते हैं, पु
स्त्री दोनों का एकसा पहिनावा, कोट, पायजामा बालदार स
की टोपी, और जूता भी चमड़े का हाथ पांव अत्यन्त छोटे, स्न
करने का नाम नहीं जानते, चमड़े की नावों में बैठ कर मछली
शिकार खेलते हैं, नाव इतनी हलकी कि एक हाथ पर उठालो औ
ऐसी दृढ़ कि २०० मनुष्य सवार होसकें, जिस के भीतर पानी
जासके और कभी न उलटे, वे पहियें की गाड़ी में कुत्ते जोड़ व
चलाते हैं। कुत्ते इन के भेड़िये के समान होते हैं न इन की के
जाति है न राजा, और न कभी परस्पर दंगा बखेड़ा करते हैं ए
मनुष्य प्रति दिन ५ सेर कच्चा मांस खाता है अपने पास न होत
दूसरा दे देता है, तमाखू पीते हैं कोई वस्तु बेचते हैं तो मूल्य ग्रा
हक से पूछते हैं, किसी को कोई दुख देवे तो वह अपने शत्रु के अन्याय
या वे धर्मी का एक गीत पद्य बना कर सभा मंडली में सुनाता है
फिर दूसरे पक्षवाले को उस का उत्तर पद्य में बना कर देना पड़ता
है जिस को सुन कर भाई बन्धु दंड देते हैं, पादरियों ने इन की
... इन्जील छपवाई, जिस को यह पढ़ते और गिरजे में

जाते हैं, यह लोग घर बर्फ का बनवाते हैं, जिस प्रकार यहां केवल मिट्टी की दीवार उठाते हैं उसी प्रकार यह लोग बर्फ के टुकड़ों को ऊपर की ओर चुनते जाते हैं फिर वह सम्पूर्ण बर्फ मिलकर एक पत्थर की समान जम जाती है भीतर से उस को मिहराबदार गोल रखते हैं, और ऊपर से भी गोल कांच के मिट्ट के समान होता है, बर्फ की ही मेज़, कुर्सी, जीना लोटा आदि बनाते हैं क्योंकि यहां बर्फ गलती तो है नहीं, बर्फ का घर भीतर से बड़ा उष्ण रहता है, इस का एक द्वार नीचे छोटासा होताहै जिसमें मनुष्य छाती के बल घुसता ह और कहीं हवा या धुंवां निकलने के लिये खिड़की भी नहीं होती, परन्तु इन अभागों के प्राण तो नहीं छुटते, इस के भीतर एक लेम्प दिन रात प्रज्वलित रखते हैं पानी यहां औषधिके लिये भी नहीं मिलता सहस्रों कोस तक बिना बहे हुए पानी का पता नहीं, जमे हुए पानी के पहाड़ वरन पृथ्वी पर भी पानी कोसों तक जमा हुआ, इसलिये यह पीने के लिये बर्फ को आग पर रख कर पिघलाते हैं, बर्फ पर खाल बिछा कर बैठते सोते हैं, जिस से शरीर गल न जावे। यह लोग अपने तीर की नोक लोहेया चकमक या हड्डी की लगाते हैं, वेहरिंग मुहाने के पार उतर कर साइबेरिया तक जाते हैं, बेटा अपनी मा से पूछ कर अपने पहिनने के वस्त्र किसी स्त्री को दे देता है, यह उन को पहिन कर उस की दुलहिन बन जाती है, नाचने गाने के बड़े रसिक हैं, जानवर का भेष बदल कर नकल करते हैं, सलाम करने के लिये दोनों मिलने वाले परस्पर अपनी नाक रगड़ते हैं मृतक के शव को बरफ में रखकर सुखाते हैं.

ऐल्यूत । यह लोग ऐल्यूशन टापुओं में रहते हैं, लकड़ी की टोपी पहिनते हैं घर पृथ्वी के तले [चूहे के बिलकी भांति] बनाते हैं ऊपर केवल एक द्वार सा छात होता है नीचे उतर कर देखो तो बड़े २ दालानें और कोठे बने हैं लकड़ी के स्तम्भ और सायबान पड़े हैं एक २ घरमें २५० तीनसौ मनुष्य परस्पर मिलकर रहते हैं, ऊपर चढ़ने के लिये लकड़ी की सीढ़ी लगी रहती है।

आयसलैंड । यह टापू इंगलिस्तान के उत्तर की ओर है, यहां
छः महीने का दिन और छः महीने की रात होती है रात्रि को एक
प्रकार का उज्ज्वल प्रकाश बिजली की भांति बराबर चमक कर
प्रकाश करताहै जो Aurora-Borealis कहलाताहै यहां ७०सहस्र
मनुष्य निवास करते हैं परन्तु न कोई कारागार है न सेना न पुलिस
कोई तस्कर बदमाश भी नहीं सब अपने चैन से साधारण भांति
से कालक्षेप करते हैं स्त्री पुरुष कोई अपढ़ नहीं है ।

जमेका - जिसका संस्कृत नाम क्षेमका Amaca है पश्चिमी
हिंद के टापुवों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है इसमें उशवा [अनंतमूल]
और अरंड खरबूज अधिक उत्पन्न होता है, अंगरेजी राज्य है यहां
यूरोपियों और जंगलियों का निवास है इसके निकट और टापू
क्यूबा, हेटी, भामा, बारबेडोज़ आदि हैं ।

ट्रिनेडाद - इस देश में एक राल की झील बहुत बड़ी है
कोको, कहवा और ईख की उपज है यहां भारतवर्ष से बहुत कुली
जाकर बसाये हैं जो वहां कृषि कार्य्य करते हैं, इन लोगों को भो-
जन वस्त्र के अतिरिक्त बहुत वेतन मिलता है और काम केवल ६घंटा
नित्य दिन करना पड़ता है पांच साल के उपरांत यह अपने देश
को सर्कारी व्यय से लौट सकते हैं जो मनुष्य वहां जाता है फिर
वह धनवान होकर देश को आता है और मनीआर्डर बहुत भेजता
है हिंदू लोग वहां बहुत हैं और अपने मतपर दृढ़ हैं यूरोपी लोग
कुलियों से दास का सा वर्त्ताव रखते हैं ।

अमेरिका के प्राचीन निवासी

न्य जाति के देशी लोग जो अमरिका के बनों में रहते हैं
जंगली व बिना घर के कालक्षेप करते हैं उनके स्वभाव व
य के वृत्तांत चित्त लुभाने वाले आप को सुनाते है

ई मारा - लोगों में यह बर्ताव है कि बच्चों की खोपड़ी
ो चपटी बनाते हैं लड़कपन में बहुत सा कठोर दबाव रखकर
बांधदेते हैं इससे दिमाग को कुछ हानि नहीं पहुंचती परन्तु
ार पकड़ जाता है।

तकीट - गर्मी व जाड़े के घर न्यारे २ बनाते हैं ऐसे हलके
सिरपर उठाकर लेजावें एक घरमें २० बीस मनुष्य सम्मिलित
ा हैं मछली और समुद्र की काई खाते है पेड़ की डाली को खो-
ा करके डोंगा बनाते हैं दास पालते हैं घरों में चित्र खींचते हैं
ि सर्दारों की जाति के नाम भेड़िया और कौवा हैं एक जातिके
ष्य परस्पर युद्ध और ब्याह नहीं करसके लकड़ी का कवच
ा बनाते हैं कि तीर असर न करसके, मुंहको सिंदूर से रंगते
र सिरपर बगले के पर पहिनते हैं स्त्रियें पतिव्रता होती हैं और
ष्ठा पूर्वक रहती हैं युद्ध [illegible] के निकट आतरिक्त उसकी
के कोई नहीं जाने पाता [illegible] बच्चे बन या खेत में जाकर ज-
ते हैं बच्चों को प्रातःकाल समुद्र में निहलाती हैं मृतक को जलाते
कोई मत नहीं है केवल अपने राजा और वृद्धों को पूजते हैं जादू
ा में बड़ा अभ्यास रखते हैं।

नी - परस्परमें स्त्रियें बदल लेते हैं युद्ध काल के लिये बदन

पक्षपात होते हैं सूर्य्य की पूजा करते और अग्नि हर समय प्र
ज्वलित रखते हैं बड़े बुद्धिमान और सवार होते हैं।

कीरब पांव में खड़ाऊ पहनते सम्पूर्ण अंग को लाल व काले
धारियों से रंगते हैं बच्चा उत्पन्न हो तो मनुष्य जच्चा
पड़ रिखाता है स्त्रियें उसकी सेवा करती हैं, बच्चे बहुत ही
बुद्धिमान होजाते हैं, मछलियां पकड़ते और गोह कछुवे
का तीर से शिकार करते हैं ब्याह के लिये पुरुष अपने शरीर
चाकू से घाव करके स्त्री को अपनी श्रेष्ठता दिखाता है, जानवरों
की भाषा को भली प्रकार से अनुसरण [नकल] करते हैं
धीरे धीरे चलाते हैं कि पक्षियों के झुंड में एक के उपरांत दूसरे
को चुनचुन कर मारलें दूसरे पक्षियों को ख़्याल तक न हो,
ज्योतिषी और शकुन वाले मनुष्य बड़े बुद्धिमान होते हैं
बड़ी प्रतिष्ठा होती है ग्वाना में रहते हैं।

शिवशा । बड़े सभ्य जिनके राज्य में हर प्रकार के
सड़क व घर गढ़ आदि सब ठीक; सोने के आभूषण पहिनते थे
परंतु अब यह बहुत कम रहगये हैं, कोलम्बिया में रहते हैं।

मरावक़ जाति पांति रखते हैं जाति के नाम हिंदुओं की समान
ब्याह के उपरांत मनुष्य अपना ससुराल में रहता है पर
रखते हैं मा की ओर से गोत्र की गणना होती है।

गीवारो इनके यहां ढोल को नारद [समाचार सूचक]
है धार दर की अवस्था में जब लड़का तम्बाकू पीने का
करना है, तब बड़ा गोत्र करते हैं प्रति दिन प्रातःकाल
करके आनातप नाशः करते हैं।

नीलू । पुरुष नग्न, स्त्रियें बड़ा पेशा करती हैं चोटी बांधे
कमरबन्द का निर्माण पहिनते हैं, चाकू लगाते हैं, मुख को

रू । प्रत्येक रोग की औषधि तमाखू से करते हैं, खोज
नेंऐसेचतुरकि पैर के चिह्न देख कर बतलावें कि कौन और
े जानवर यहां हो कर निकले हैं और कितनी देर हुई, थोड़ा
ा शब्द हो तो पहिचानलें, नमक नहीं खाते, ब्याह के लिये जो
ो शिकार मारकर लाता है उस स्त्री के पांव पर
ा और कुछ ईंधन ला देता है, यदि स्त्री उस के पकाने
ारम्भ करदे तो ब्याह होजाता है, घोड़े की सूरत भी नहीं जानते
को। ओठ और कान छेद करके मोटी लकड़ी लगाते

ूरोपियों के अधिकार में नहीं आये।
िया। लोग गोफन से घड़े ताक कर निशाना लगाते हैं स्त्री
े वस्त्र बुनते हैं स्त्री पुरुष दोनों घोड़े पर सवार होते हैं घर
बनाते हैं लिखे पढ़े सभ्य हैं ब्याह लड़की छीन कर होता है
र उस का मूल्य दिया जाता है लाश को गठरी बना कर गाड़ते
पुरुष के संग हथियार और स्त्री के संग खाना पकाने के बर्तन
[समाधि] में रखते हैं।

जपारू । प्रत्येक रोग की औषधि तमाखू से करते हैं, खोज लगानेमें ऐसेचतुर कि पैर के चिह्न देख कर बतलावें कि कौन और कितने जानवर यहां हो कर निकले हैं और कितनी देर हुई, थोड़ा सा भी शब्द हो तो पहिचानलें, नकम नहीं खाते, ब्याह के लिये जो मर्द जो शिकार मारकर लाता है उसे स्त्री के पांव पर डालता और कुछ ईंधन ला देता है, यदि स्त्री उस के पकाने का आरम्भ करदे तो ब्याह होजाता है, घोड़े की सूरत भी नहीं जानते

चाको । ओष्ठ और कान छेद करके मोटी लकड़ा लगाते हैं, यूरोपियों के अधिकार में नहीं आये।

पम्पा । लोग गोफन से बड़े ताक कर निशाना लगाते हैं कृषी करते घस बुनते हैं स्त्री पुरुष दोनों घोड़े पर सवार होते हैं घर पक्के बनाते हैं लिखे पढ़े सभ्य हैं ब्याह लड़की छीन कर होता है फिर उस का मूल्य दिया जाता है लाश को गठरी बना कर गाड़ते हैं पुरुष के संग हथियार और स्त्री के संग खाना पकाने के बर्तन

ही आज्ञा के नहीं बेचने पाता यह लोग बड़े पुजारी व मतके
त होते हैं सूर्य की पूजा करते और अग्नि हर समय प्रज्व
खते हैं बड़े बुद्धिमान और सवार होते हैं।

ब पांव में खड़ाऊ पहनते सम्पूर्ण अंग को लाल व काली धा
से रंगते हैं बच्चा उत्पन्न हो तो मनुष्य जच्चा बनता
दिखाता है स्त्रियें उसकी सेवा करती हैं, बच्चे बहुत ही शीघ्र
मान होजाते हैं, मछलियां पकड़ते और गोह कछुये आदि
र से शिकार करते हैं ब्याह के लिये पुरुष अपने शरीर में
से घाव करके स्त्री को अपनी श्रेष्ठता दिखाता है, जानवरों
पा की भली प्रकार से अनुसरण [नकल] करते हैं तीर
ीरे चलाते हैं कि पक्षियों के झुंड में एक के उपरांत दूसरे
नचुन कर मारलें दूसरे पक्षियों को ज्ञात तक न हो, इनमें
यों और शकुन वाले मनुष्य बड़े बुद्धिमान होते हैं इनकी
ग्रतिष्ठा होती है ग्याना में रहते हैं।

न न दो नों,चोरी करने में न शरमावेगा, नृत्य करने व गानेके बड़े
नी-ताश के ऐसे खेलाड़ी कि १ वर्ष में तीन हजार मन ताश
कर फाड़ डालते हैं सर्दी के दिनों में बर्फ के लुढ़काऊ गाड़ मैं
ा करते है उपाधि (लकब) वहां प्रत्येक मनुष्य रखता है जो
भी वंश परम्परा से होता है ऐसे सैकड़ों कोचवान या कुली
ूर जो नवाब या राजकुमार कहलाते हैं—

हार—गेहूं-प्याज-चर्बी-दही आदि अधिक खाते हैं एक प्रकार
ाज जिसको राई कहते हैं बहुत उत्पन्न होता है मछलियाँ तेल
पकर खाते हैं बर्फ को बेहद (सीमासे अधिक) काम में लाते
ा पुरुष सब तमाखू पीते है-चाय भी बहुत काम में लाते हैं
की ईंटें बनी हुईं चीन से आती है कोरम (एक भांति की
ा) के बड़े अभ्यासी हैं बिना इसके इनका एक क्षण मात्र भी
न नहीं होता, पानी के स्थान म इसी को पीते हैं-स्नान करना
र स्वच्छ करना यह समय को व्यर्थ नष्ट करना जानते हैं-रात्रि
ोने समय वस्त्र बिलकुल नहीं उतारते. सप्ताह में एक बार
वार की शाम को स्नान करते हैं जिससे इतवार को पवित्र
ा पड़े—वह भी पानी से नहीं स्नान करते वरन भाफसे
े हैं-एक बहुत बड़ा पत्थर अग्नि पर गर्म करके फिर उसपर
ी डालते हैं जिस स सम्पूर्ण कमरे में भाफ भरजाती है फिर
ा करने वाला उस में नग्न लोटता है जिससे उसको बहुत
ना आता है उसके उपरांत स्नान कराने वाले नौकर उस को
में उछालते हैं परन्तु इससे उसको कुछ हानि नहीं पहुंचती।

वंशप्रबन्ध—सर्कारी मालगुजारी या महसूल सम्पूर्ण गांव
सर होता है, किसी मनुष्य से वसूल नहीं किया जाता, जिस
में जितने निवासी हों उतनाही अधिक महसूल लियाजाता
ृथ्वी चाहे न्यून हो चाहे अधिक-गांवक सम्पूर्ण निवासियों के
रजिस्टर में लिख होते हैं, और कुल पृथ्वी सम्पूर्ण निवासियों
बराबर से बांट दी जाती है, मृत्यु व उत्पत्ति से प्रत्येक
के भाग की पृथ्वी प्रतिवर्ष घटती बढ़ती रहती है चाहे
र एक [illegible] रजिस्टर में नहीं [illegible]

को समान करदेना पड़ता है, कारण कि पृथ्वी भी गांवमें मर्द समानहीं मिलती है यदि कुटुम्ब का स्वामी मरजावे तो उसकी रांड के लिये पृथ्वी नियत की जाती है, यदि रांड को पृथ्वी स मिले और वह रोकर विनय करे तो दया करके अधिक पृथ्वी दे है प्रत्येक छुट्टी के दिन में ऐसे प्रबन्ध के लिये गांव वालों की पंचायत हुआ करती है जिसमें स्त्रियें भी सम्मिलित होती हैं-हर कुटुम्ब में वृद्ध मनुष्य की आज्ञा मानी जाती है, और वह की कहलाता है इसी भांति प्रत्येक गांव में एक चौधरी होता है, की पुरुष हो चाहे स्त्री,परन्तु उसके अधिकार कुछ अधिक नहीं होते की बाधाबद्ध है प्रत्येक बात की उसके ज़िम्मे होती है कोई मनुष्य पृथ्वी को इच्छा पूर्वक नहीं बोसकता-क्रमानुसार प्रत्येक कि बोनी पड़ती है घर यहां बहुधा एक ढंग के बनाते हैं एक घर कुटुम्बके सम्पूर्ण मनुष्य मिलकर रहते हैं और एकही स्थान खाते पकाते हैं बहुत अच्छा प्रबंध है।

और घोड़ा भी इशारे से काम करता है-ऊंट, भेड़, और बैल भी उत्पन्न होते हैं, परन्तु कुछ अधिक काम नहीं आते यहां तो बर्फ़का अधिक व्यौहार है जब मैदान में कोसों तक बर्फ़ जमा होता है, तो व्यसनी (शौकीन) लोग चिकना जूता पहिनकर एक पांव से उसके ऊपर फिसलकर चलते हैं इसी भांति थोड़ी देर में बहुत दूर निकल जाते हैं।

बर्फ़ इतनी चिकनी होती है, कि किसी समय दो घरोंके मध्य ढलवां बर्फ़ का तह जम जावे तो एक मनुष्य एक बालाखाना (छत के ऊपर का घर) से बर्फ़ पर फिसल कर दूसरे घरके बालाखान तक बिना श्रम छलांग कर पहुंच सकता है, भेड़िये इस देश में बहुत अधिक होते हैं और राह में पथिकों को बहुत घेरते हैं,

मत— यहां के मनुष्य ग्रीक चर्च के ईसाई हैं.रोमन, कैथलिक
ोगों को नौकरी नहीं मिलती–जो कोई अपना मत छोड़ दे उसके
चे व जागीर छीनली जाती है, मुसलमानों के संग बड़ा पक्ष होता
, यहूदियों को सम्पूर्ण राज्य में से बाहर निकाल दिया, लोग तीर्थ
ाश को बहुत जाया करते हैं गिरजाघर में कोई बेंच या कुरसी
ठने को नहीं होती सब बराबर खड़े रहते हैं सेंटपीटर्सबर्ग नगर
जधानी है जो महाराज बड़े पीटर ने बसाई थी उसमें मुसलमानों
ी मसजिद् अत्युत्तम बनी है। मास्को नगर के एक मन्दिर में एक
टा इतना बड़ा रक्खा है कि जिसके भीतर एक अच्छा कमरा
सकता है।

ासिद्ध स्थान—नजनी नवागोरू का मेला अत्यन्त बड़ा होता है
तरखान गस्ट्रजान मछली के शिकार के लिये प्रसिद्ध है यह का-
पयन सागर के तटपर है ऐसी मछली दूर जाकर सौ २ रुपये को
कती है, सरकेशिया की स्त्री बड़ी स्वरूपवान् होती हैं जार्जिया
स्त्रियें जो काफ़ पहाड़ के नीचे रहती हैं पारस्तान की परी कह-
ती हैं, दक्षिणीरूम में बुलबुल ऐसी अच्छी होती हैं कि एक
ड़िया सौ डेढ़ सौ रुपये को बिकती हैं।

ाकू—नगर कास्पियन के तट पर है,वहांकी सम्पूर्ण पृथ्वी मिट्टी
तेलसे भरी है, जहां थोड़ासा भी खोदो,कि भीतर से तेल उबल
र बाहर फव्वारे की समान निकलता है, जहां पृथ्वी में छिद्र
उसी स्थान पर दियासलाई सी लौ निकलती है, जैसी कां-
के निकट ज्वालामुखी में है, बाकू से बेतूम नगर ६०० मील है
दोनों के मध्य इतना लम्बा एक नल लगा है उसमें होकर मिट्टी
तेल बाकू से बेतूम पहुंच जाताहै फिर यहां से जहाजों में भर
सम्पूर्ण संसार में जाताहै–बाकू के लोग कभी घरों दिया नहीं
ाते और न रोटी पकाने के लिये चूल्हा गर्म करते हैं सब काम
ईश्वरीय अग्निसे लेतेहैं,नगर के बाहर एक स्थान पर बहुत बड़ी
ाग भट्टी के समान जलती है उसके आस पास ४ कोसके घेरे में
मंदिर सफेद पत्थर का बनाहै उसमें अग्निपूजक पुजारी और
साधु भी [illegible] हैं इस मंदिर में बहुत चढ़ावा आताहै,यह

ले रामचक्र घुमाते हैं, रंग इनका पीला होता है, ताश खेलते हैं भारी सवार हैं ओष्टियाक—अपने तीर की नोक पर गोल मेंढ़ लगाते हैं जिससे शरीर में घाव होने से उसकी खाल खराब न बहुधा समूर का आखेट करते हैं काला रीछ इस देश में बड़ा बना होता है उसीको यह ईश्वर समझते हैं उसी की शपथ खा हैं, वरीयट—इन मनुष्योंका मत तिब्बत के लामाका बुध मतहै तमाखू या शराब बिलकुल नहीं पीते, अत्यंत स्वरूपवान होते हैं, गले में मो तियों की माला, और कानों में कुंडल पहिनते हैं तलवार बांधते हैं याकूत—यह लोग गहनों के बड़े रसिया होते हैं घोड़े का मांसखाते हैं, एक मनुष्य दस १५ सेर मांस प्रतिदिवस खाता है घोड़ीका दूध पीते हैं, दूध की शराब पीते हैं स्त्रियें तमाखू पीती हैं।

टंगूसेन—एक दिन से अधिक किसी स्थानपर नहीं ठहरते, बोझ ढोने, सवारी, और दूध आदि का सब काम रेंडियर से लेते हैं प्रथ श्रेणीके ईमानदार, यदि कोई इनकी जातिवाला चोरी करे या डाका डाले या दूसरे का माल धोखे से लेवे तो उसके चूतड़ों पर दि करके बाहर निकाल देते हैं बड़े बेफिक्र सप्ताह भर के भोजन व सामग्री एक दिन में व्यय करडालें, फिर चाहे ६ दिनतक भूखे मरें, शिकार मारकर लावें और कोई पथिक मिलजावे तो उसीको देदें कि ले यह तेरी भाग्य का है, हम और मारलेंगे, अपना भोजन पास हो सिवाइ खाने और सोने के कोई काम नहीं करते

सामन—यह लोग भूत प्रेत को दूर करने वाले और जादूगर होते हैं, प्रेत से रोगी को अच्छा करना, छिपीहुई बातें बताना, और अचम्भित करामातें दिखाना, उनका व्यापार है, यह सम्पूर्ण साइबीरिया में फैले हैं, गल्याक—केवल मछलियों खाते हैं नावों में सवार होते हैं लड़का उत्पन्न होने के समय स्त्री को घर बाहर निकाल देते हैं, मृतक की समाधि पर छप्पर छाते हैं स्थानी [illegible] की प्रथम अच्छी भांति [illegible] जादू मंत्र का बहुत प्रचार है [illegible] में मछली की खाल [illegible] इसलिये यह लो मो [illegible]

[illegible] पर दस दस कुरते ओढ़कर सवार

है करगीज़—यह लोग तातार में रहते हैं, नाक इनकी बिलकुल
हुई, केवल नथुने निकले हुए-पृथ्वी के भीतर तहखाने में रहते
[illegible]री जाति के बच्चे चुराकर गुलामी में बेचते हैं, भाई अपनी
को भी बेचकर पीछा छुड़ाता है, हर भांति के जानवर पालते
[illegible] पर सवार होते और घोड़ी का दूध पीते हैं मत इनका कुछ
[illegible]मान और कुछ मूर्त्तिपूजक है, प्रत्येक वस्तु का मूल्य यहां कुछ
[illegible]नीजाती है।

[illegible]—बहुधा मुसल्मान मतके हैं ब्याह के लिये प्रथम स्त्री पुरुष
पसंद करलेते हैं फिर अपने मा बाप को सूचित करते हैं
[illegible]स्त्री जाकर मामिला ठहराती और मेहर की तादाद स्थिर
है पुरुष स्त्री को अच्छी वस्तुएं भेट करता है, बरात में
[illegible]ना, घोड़ दौड़ आदि कौतुक होते हैं स्त्रियें भी सम्मिलित
नाचती कूदती हैं, बच्चे भी शोर करते हैं लड़कों को घोड़ पर
[illegible]ना और लड़कियों को गृहकार्य्य के प्रबन्ध लड़क पन से
[illegible] जाते हैं।

[illegible]रिंकात—रूस राज्य के दक्षिण में कुछ झीलें अत्यंत
[illegible]न संसार में सबसे बड़ी है इसलिये उनको समुद्र
पुकारते हैं—इन का पानी भी नमकीन है, कास्पियन सागर
[illegible]ल लम्बा और २५० मील चौड़ा है, अरल सागर २५०
[illegible]म्बा और ७० मील चौड़ा है हद सिकंदरी—काफ पहाड़
[illegible]यां बंद करने को सिकन्दर ने बनाई थी जिससे हूण
[illegible]न पर आक्रमण न करसकें, साइबेरिया के लोग गर्मी की
[illegible]पने कुत्तों को बनों में छोड़देते हैं कि आप अपना भोजन ढूंढ़
[illegible] जाड़े की ऋतु के आरम्भ में फिर अपने २ घर लियों
[illegible]जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं।

रूम देशका वर्णन

[illegible]श में रूम इटली देश का नाम है जिसकी राजधानी रोम
[illegible]र्मियों का, जो प्रसिद्ध राज्य था वह इतना बड़ा था कि

फगानिस्तान से उसकी सीमा मिलती थी जब मुसलमानों
दशिया याचक को विजय किया कि जो उससमय एक प्रदेश
गर का था, तो उन्हों ने अभिमान से कहा कि हम ने रूम विज
किया, उसका न मरूम पड़गया, इससमय हम इसी मुसलमा
रूम का वर्णन करते हैं जो आज कल एक बड़ा राज्य है, और
र हमारे मुसलमान भाइयों की आंख लगी है, यह तुर्कों का रा
इस लिये टर्की कहलाता है, पूर्व में यह भी इतना ब
, कि यूनान, मिश्र एलजीरिया अरब और बहुत से टापू इ
धिकार में थ, परंतु यूरोपियों के पड़ोस होने से यहां ईसाई
मलमानों में प्रति दिन झगड़े हुआ करते हैं और इस राज्य
हुत सा भाग यूरोपियों के अधिकार में चलागया है, रूसियों
मीया के युद्धमें भलीभांति अपने चित्तकी उन्मत्तता निकाली
र अंगरेजों ने बीच बिचाव किया अब यूनानियों ने लड़ाई
रदी, क्रीट में बलवा हुआ और तुर्कों को बड़ी कठिनता
ई तो शाहंशाह जर्मन ने इनका संग देकर झगड़ा न बढ़न दि
योजन यह कि एक तो मत की विरुद्धता से और दू
नवान व अच्छे स्थान पर देश है, इसलिये यूरप के सम्पूर्ण
ज्यों का दांत इस पर है–रूस चाहता है कि वह उस को गड़
बैठे, परन्तु अंगरेज कब इस को सहन कर सकते हैं जर्म
हता है कि वही उसपर अधिकारी हो अंगरेज चाहते हैं कि य
हमारे राज्य में आज वे तो क्या अच्छा काम बने कि मिश्र
रतवर्ष की राह साफ रहे परन्तु उस को स्वीकार नहीं करत
द्धांत यह है कि इसी भांति यह राज्य प्रति समय भय में है
छ दिनों का पाहुना ज्ञात होता है कदाचित यूरोपी लोग परस्प
को बांट लेवेंगे।

र्क–लोग जिनका यहां राज्य है, बड़े वीर लड़नेवाले हैं एक स
उन्होंने सम्पूर्ण यूरोप में खलबली मचादी थी, चीन भी उन्हों
य किया, भारत वर्ष में भी इनके कुटुम्ब के मुग़ल बादशा
नाहि [illegible]–अफ़ग़ानिस्तान, ईरान रूम मिश्र अरब आदि सब उ
ते [illegible] हलाकू और तैमूर आदि तुर्क

जिन्होंने कई देश नष्ट किये, लक्षों मनुष्यों को मारा, काटा, नगर
ये, उस समय इनका रोकनेवाला कोई न था, उन में एक बड़ी
ी अच्छाई थी, कि जिस देशको विजय करके अपना अधिकार
किया उस देशका मत भी स्वीकार करलिया, जब उन्होंने चीन
न को विजय किया तो बुद्ध मतको स्वीकार किया, जब मुस-
नोंके सम्पूर्ण देश विजय किये और बुगदाद देश में अब्बासिया
अधिकार तोड़ा, ईरान के बड़े नगर लूट लिये, और स्थान प्रति
न लक्षों मनुष्यों को कत्ल किया, तब यह ज्ञात होता था, कि
मुसल्मानों का नाम व चिह्न संसार से मिट जावेगा, परंतु इन्हीं
ने मुसलमानी मत स्वीकार कर फिर उसकी बात बढ़ाई।—
पियों से कई बड़े युद्ध हुए जिसमें सम्पूर्ण यूरप के शाहशाहों
ाग लिया, और बैतुल मुकद्दस को तुर्कों से छीनना चाहा
तुर्क लोगों ने सबके सन्मुख युद्ध किया, और अपने देश
अधिकारी रहे, अब रूम राज्य में यह दशा है कि प्रजा तो प्रति
न में ईसाई मत की है और राजा व कर्मचारी गण व सभा का
लमानी मत है।

म—रूममें इतने देश या प्रदेश संयुक्त हैं रूमी, एशियाकोचक,
र, आरमेनिया, कुरदस्तान आदि-इनमें शाम सबसे अधिक प्रसिद्ध
जितने राज्य पलट इस देश में हुए हैं संसार के किसी दूसरे
श में नहीं हुए—प्रथम असुर राजाओं का राज्य रहा फिर ईरान
ों का अधिकार हुआ मिश्रवालों ने विजय किया, फिर सिकंदर
म के समय में यूनानियों का झंडा गड़ा, फिर मुसलमानों का
कार हुआ अब तुर्कों का राज्य है, फिर मत व ऐतिहासिक
ार से भी यह देश संसार में अत्यन्त प्रतिष्ठित है हज़रत
मान भी इसी स्थान के बादशाह थे और हज़रत दाऊद
हज़रत ईसा की उत्पत्ति और सम्पूर्ण लीलाओं का स्थान
यही देश है ईसाई लोग इसको तीर्थ कहते हैं यह इसका
न ... मुसलमानों का इश—जहाक व जम-
स देश में हुए थे यहूदियों की उत्प-
नूफान भी इसी ओर आया था। और

अराराट पहाड़ जिस पर नूह की नाव ठहरी थी अब तक यहां है बाबुल का प्राचीन राज्य और अग्नि पूजक पार्सियों कार नामि सबकी पवित्र भूमि भी यही है हिंदू लोग इ आसुर्य कहते थ और राजावलि म हरिणाकुश आदि धेनु के प्रसिद्ध बलवान राजा इसी स्थान पर हुए थे अंगरेज़ Assyria कहते हैं, (संक्षेप से हमारी पुस्तक हिंदुस्तान देखो) अद्भुत वस्तुएं-इस में लूत सागर नामी एक झील भग ५० मील क लम्बी है इसका पानी खारी है-इसमें कोई जीव जीवित नहीं रहता, मछली कछुवे, मेंढक इस में कोई नहीं का पानी इतना बुरा है कि उसके निकट कोई तक घास भी नहीं जमता-उसके आस पास जो पहाड़ियां हैं वह बिलकुल खड़ी हैं, पेड़ या हरियाली वहां नहीं होती-इबुरम नाम एक नदी है जिसका पानी बरस भरमें एकबार अवश्यही बिलकुल रक्त (लाल) होजाता है-जिसको वहांके मनुष्य वर्णन करते हैं कि प्रतिष्ठित ईसाई का जंगली सूअर ने बध किया था उसे रक्त नियमित समय पर नदी में आया करता है, रोड्स टापू में पीतल की मूर्ति ७० हाथ ऊंची खड़ी थी जिसके पांव के बीच होकर जहाज पाल उड़ाये चले जाते थे परन्तु यह मूर्ति वर्तमान नहीं है।

बालबक-नगर में बाल देवता का सूर्य का मंदिर अत्यन्त उ पड़ा है उसके सफेद पत्थरों के खंभों की ऊंचाई देखकर हैरान होजाती है एक पत्थर नीचे पड़ा है। यह ७० फुट लम्बा १२ फुट चौड़ा है इतनाही मोटा है अत्यन्तसाफ कटा हुआ नहीं मालूम यह पत्थर किस भांति से खानसे ढकेल कर लाये गये होंगे ... वाले मनुष्य थे या देव थे इस का संस्कृत नाम हरि पु ... इस को सन् ७४८ ई० में दमिश्क के खलीफाने नष्ट कि ...

...-स्थान में एक सोता गर्म जलका बहता है।

...न नगरों के खंडहर-निनेवा और बाबुल के खंडहर आदि जो मिट्टी में दबे पड़े थे फरांसीसियों ने बहुत से ... निकाले हैं अत्यन्त स्वच्छ पक्के महल और घर पृथ्वी

चे निकाले हैं, इन के भीतर बहुत से आभूषण, सुख के सामान र कई प्राप्त हुए हैं जिनसे उस समय के ऐतिहासिक समाचारों का पता लगता है इसके विषय में बड़ी खोज मेजर रालिन्सन और बड़े साहब ने की है, पामरा नगर जिसको हजरत सुलेमान ने बनाया था अब उस के खंडहर कोसों तक सफेद पत्थर के ऊंचे मन ताड़ के बन की समान खड़े हैं—बाबुल नगर में एक स्तम्भ ० गज ऊंचा था यह नगर ६० मील के घेर में बसा था १०० गज ऊंचा सके आस पास कोट था, राजा का बाग इसमें इतना ऊंचा टकर बनाया कि सम्पूर्ण नगर के घरों की छतें इससे नीची थीं ाज महल ७॥ मील के घेरे में ३ दीवारों के भीतर थे इस नगर का रान के बादशाह खुसरो ने नष्ट किया।

प्रसिद्ध स्थान—बसरा का गुलाब का इत्र प्रसिद्ध है—उसका ोदा प्रसिद्ध है बग़दाद नगर को मंसूर खां बादशाह ने बसाया था, अब्बासिया के राज्य की राजधानी रहा सन् १२५८ ई० में चंगेज़ खां के पोते हलाकू ने ८ लाख मनुष्य उसमें मारे—और खलीफा को भी न छोड़ा, कुस्तुन्तुनियां जो आजकल राजधानी है यूरोपी, र्की में समुद्र के किनारे सुंदर व मनोहर नगर है इसकी वायु हुत अत्यन्त उत्तम है, इस नगर में रंडियां बिलकुल नहीं होतीं तुर्क लोग सब अंगरेज़ी पहनावा और लाल टोपी पहनते हैं—[illegible] नमाज़ पढ़ने हैं बैतुलहम—ईसाइयों का तीर्थ स्थान है नज़ीरथ में हज़रत ईसा उत्पन्न हुए थे, पिस्ता, अंगूर इस देश में बहुत होते हैं।

संसार के अन्य देशों का वर्णन।

इन देशों का हम संक्षेप से वर्णन करते हैं क्योंकि हम दूसरी पुस्तक में इनका पूरी तौरपर वर्णन करेंगे. यदि सब का वर्णन इसमें करते तो इस पुस्तक का आकार बहुत बढ़ जाता और छपने में भी अधिक विलम्ब होता—पाठकों के अनुरोध से ण भाग पर इसको इसीजगह समाप्त करते हैं इस पुस्तक में बहुधा प्राचीन समय के बड़े राज्यों का वर्णन हुआ है जिनके रीति व्यवहार, स्वभाव और प्रबन्ध पूर्वी कहलाते हैं. अब दूसरी पुस्तक में

नए प्रकाशित, मध्य यूरोपीय राज्यों का वर्णन करेंगे जिनके ढंग पश्चिमी और स्वभाव में स्वाधीनता है, भारत वर्ष का वर्णन दशा व जातियों सहित व प्रदेशों का वर्णन भी दूसरी पुस्तक में करेंगे. कारण कि उस में ही देने बड़े लेख लिखने का स्थान है दूसरे छोटे देशों का वर्णन इस पुस्तक में कर देंगे।

अरब—यह देश मरुस्थल है, बहुत कम बसा हुआ. प्रति स्थान में बालूका मैदान-खजूरों के झुंड और कांटेदार बबूल के पहाड़, और टीले मृगतृष्णा और जंगल, लूयहां अधिक चलती है-गर्म वायु से शरीर झुलस जाता है मनुष्य यहां के काले, मत मुसलमानी है.बद्दू लोग जो डाकू होते हैं बनों में तम्बूतान रहते हैं यहां न सड़क है न सराय न राह सौदागरों और यात्रियों के यूथ परस्पर मिलकर ऊंटों पर गमन करते हैं. जिस बद्दू न लूट लें, पानी यहां कोसों नहीं मिलता, न हरियाली, घास दृष्टि में आती है छुहारा अधिक उत्पन्न होता है मूसा पैग का तूर पहाड़ यहीं है कहते हैं कि सनार के निकट गेल मां जाति के ४० सहस्र मनुष्य रहते हैं जिनके बंदर की सी होती है, मनुष्य भक्षी है-मुसलमानों का तीर्थ स्थान मक्का मदी इसी देश में है. मक्का एक बड़ा भारी पवित्र मकान है, उसमें काला पत्थर शालिग्राम का चांदी से मढ़ा हुआ रक्खा है मुस मान इस को हज्र अस्वद (जिसके [illegible]

[illegible] मा देते हैं (अर्थात् चुम्बन [illegible]

[illegible] में प्रसिद्ध हैं और बड़े मूल्य [illegible]

[illegible] के वंशको दोसहस्र वर्षतक [illegible]

[illegible] सवारी के काम में बहुत आता है, ऊंटपर चढ़ते हैं और उस [illegible] का वस्त्र व डेरा बनाते हैं उसका दूध पीते हैं और उसी [illegible] खाते हैं, शुतुरमुर्ग जानवर यहां बहुत उत्पन्न होता है [illegible] माया करती हैं उनकाघर अरबमें है यहांके मनुष्य इनको [illegible] [illegible] खाते हैं मकतर टापूके निवासी १० पन्द्रह टोपी [illegible] [illegible] कोई नहीं पहिनता, अर्थात्‌ [illegible] [illegible] अंग्रेजी किला है [illegible]

हरपर जहां देशहरा भरा है वहां तुर्कों का राज्य है शेष देश म-
रुस्थल है।

ईरान देश—इसीको फारस कहते हैं ईरानका घोड़ा बहुतबड़ा
ता है और एक दिन में ६० सत्तर कोस चलता है यहां गोरखर बहुत
ता है एक स्थान पर एक गुफामें मोमियाई पत्थरों से टपका क-
ी है, जो बादशाह की आज्ञासे सिपाहियों के घाव अच्छा करने
ो इकट्ठा कीजाती है बादाम इसी देश की मेवा है गाड़ी वहां नहीं
वो स्त्रियें ऊंटपर पर्दा लगाकर सवार होती हैं पूर्वे में यहां पा-
ी लोग अग्निपूजक मतके थे अब सब लोग मुसलमान हैं और
या मत रखने हैं सूफी अर्थात् वेदांती भी हैं भाषा यहां फारसी
लीजाती है पहनावा यहांका लाल टोपी,जाकट,लम्बा कुरता,और
गा व पायजामा है स्त्रियें घूंघट निकालकर या बुरका(एकप्रकारका
पड़ा जिससे सिरसे पैरतक ढंकजाते हैं) ओढ़कर निकलती हैं अ-
हान नगर जो पूर्व्वमें राजधानी था इसकी मनुष्य संख्या२ लाख है
ज़ार पटाहुआ शहर के मध्यमें नहर और हौज काले पत्थरसे बने
र आठ बादशाही बाग जुदी २ फसलों के लगे हुए. उनमें से एक
४० चालीस फिट ऊंचे स्तम्भों का एक शीशमहल बनाहै. उसमें
ी बिरंगे फूलों की परछाईं बड़ा आनन्द दिखाती है, अमीर तैमूर
इसको लूटा और डेढ़लाख मनुष्यों की कतल किया और उनके
ोपड़ों कोटपर टांगा–जाहेनसाहब ने उसको २४ मीलके घेरे में
ा उससमय इसमें मनुष्य संख्या १० लाखथी ७५० मसजिदें
०० सराय और २५० स्नानागार थे ५० पाठशालायें थीं. वर्तमान
ालमें तेहरान राजधानी है Persipolis अर्थात् जमशेद की
ी प्राचीननगर अब खंडहर पड़ा है, इसके सफेद पत्थर के थम
ले स्वच्छ खम्भे. उनपर चित्र और पारसीभाषा के लेख लिखे-
िराज में शेखसादी की समाधि है इसदेश को सन् ८३६ में पार-
ियों से मुसल्मानों ने छीनाहारे हुए पारसीलोग कुछ तो मुसल्-
ान होगए और कुछ भारत- वर्षमें आकर बसे। पारसियोंका मत
ुल हिंदुओं कासाथा बहुत से देवता दोनोंमें संयुक्त थे संस्कृत
ी पुस्तकों में पारसियों का और शाहनामे में हिंदुओं का बहुत
र्न है परन्तु वह पलट जानेके कारण से समझ में नहीं आता

(देखो हमारी पुस्तक पारसियों के इतिहास में) पारसीलोग सूर्य को पूजते थे (जो हिंदुओं की गायत्री और हवनके समान है) और बादशाह प्रतिवर्ष चौपायों की रक्षाके लिये दिसया ओवों का बड़े अपने सम्पूर्ण कटकको साथ लेकर करता था।

तूरान—जिसको तुर्किस्तान कहतेहैं और जिसका बहुत बड़ाभा रूसने तोड़कर अपने राज्य में मिला लिया है उसमें प्र से मंगोलियन जातिके तुर्क रहते थे जिनका ईरान के आर्यों सदैव युद्ध होता रहा—बलख ज़रदश्त पैग़म्बर के उत्पन्न होने स्थान इसी देशमें है समरकन्द जिसका संस्कृत नाम सुमेर खंड तैमूर की राजधानी थी बदख़शां पहाड़ जिसमें लाल उत्पन्न हो है इसी देशमें है इसको हिंदू लोग सुमेरु कहते हैं.बुख़ारा यह न ६ मीलके घेरे में बसा है इसमें ३६५ मसजिदें हैं इसमें पाठश बहुत है जहां भारतवर्ष तक के विद्यार्थी पढ़ने जाते हैं ख़ीवामें मुसलमान खान का अधिकार है. नगर रक्षककोट (शहरपनाह) मिला हुआ एक गढ़ (क़िले) की समान एक स्तम्भ बहुत

के सभी लोग पहाड़ी फिरके निवास करते हैं—रुस्तम
पहलवान इसी के सूबे सीस्तान में उत्पन्न हुआ था शहतूत
यहां इस अधिकता से उत्पन्न होता है कि कंगाल मनुष्य उसकी
रोटी बनाकर खाते हैं—अंगूर, अनार, सेब, खूबानी आदि जैसा
उत्तम मेवा इस देश में होता है, और कहीं नहीं होता नदियों में
घड़ियाल बिलकुल नहीं और मछलियां भी थोड़ी होती हैं, मरुस्थ
में रेग माही बहुत होती है हिरात के निकट हींग का बन है।

सुराब (मृगतृष्णा) से इस देश में अनजान मनुष्य को
बड़ा भ्रम होता है-कोसों तक रेत का मैदान झील की समान ज्ञात
होता है, बरन पानी की भांति उस में पेड़ों की छाया भी दृष्टि आती
है, काबुल से ४० मील उत्तर ४०० फुट ऊंची एक पहाड़ी है वह
५० गज ऊंचा और १०० गज चौड़ा बालू का ढेर पड़ा है
जब उस पर कोई मनुष्य चढ़ता है या वायु वेग से चलती
है तो उस में नगाड़े और नफीरी का शब्द उत्पन्न होता है, हिंदू
कुश की घाटियों में बहुतसे प्राचीन घरों के चिह्न पाये जाते हैं और
बामियां में एक पहाड़ी सड़क बौध के समय की हाल में मिली है
एक स्थान में २ मूरतें पत्थर की छटी हुई वस्त्र पहिने हुए १८० फुट
ऊंची हैं इन के निकट बहुतसी गुफा पहाड़ में काटकर बनाई हैं—
यहां प्राचीन सिक्के (मुद्रा) संस्कृत भाषा के मिलते हैं बिलूचि-
स्तान में कराची से १० मंजिल के अंतर पर हिंगलाज देवीका मंदिर
हिंगलनदीके तटपर है—काफिरस्तानके मनुष्य जिनको अफगान स्याह
पोश कहकरपुकारतेहैं हिंदू मत रखते हैं और संस्कृतकी समान
बोलतेहैं-यह लोग मुसलमानका मारना बड़ा धर्म समझते हैं
उनसे युद्ध करते हैं यहलोग गोरे रंग और लंबे डील डौलके
और बड़े दृढ़ व वीर होते हैं काला वस्त्र पहिनने और गले
में अंग्रेजों का सा कालर लगाते हैं दो वर्ष हुए कि अमीर
ने इनको जीता और मुसलमानी मत फैलाया।

अंगलिस्तान—यह फरंगिस्तान के पश्चिम में एक टापू है यहां
के निवासी प्रथम श्रेणी के बुद्धिमान् सभ्य और उत्तम प्रबन्ध कर्त्ता
संसार के बहुत से देशोंमें इनका राज्य है भारत वर्षमें भी इन्हीं

अधिकार है, निवासियों का रंग गोरा कोट पतलून पहिनते हैं, ...ीन चित्त मौन धारण हरेक कार्य्य में तत्पर सचाई व ... अधिक रखते हैं-मत ईसाई हैं अपने को आर्य्य वंश ...ाते हैं-छुरी, कांटे से मेज़पर भोजन करते हैं-हुक्काके स्थानपर ... पीते हैं-इनकी स्त्रियें पर्दा में नहीं रहतीं।

...न-यहां के मनुष्य संसार में सबसे बड़े बुद्धिमान, नवावि... करनेवाले, व प्रबंधकर्ता हैं-पंचायती राज्य है-इच्छानुसारकार्य ... व बनावट (नज़ाकत) व प्रदर्शनी भी इसदेश पर समाप्त है ...नगर प्रथम श्रेणीका सुंदर व प्रतिष्ठित नगर है जिसमें अद्भुतालय ...न में आश्चर्य प्रद वस्तुयें होवें) पुस्तकालय और न्यायालय ...तिरिक्त एक वैकुंठबाग़ भी बना है जिस में प्रत्येक भांति के ... पक्षी चित्त मोहित करने वाले यथोचित स्थानों पर इकट्ठे ...र संसार की स्वरूपवाती स्त्रियां भी यहां इकट्ठी होतीं ...पव्ययी की अपेक्षा अंगरेजों के विरुद्ध व्यर्थ व्ययी व अधिक ...ा करते हैं, जादू, भूत और टोटके को मानते हैं।

...न-एक समय में यहां के मनुष्य ऐसे साहसी और वीर थे ...होंने अमेरिका को ज्ञात किया और सम्पूर्ण देश में अपना ...र जमा या जहाजों में भर २ कर सोना लाये-एक समय में ...ों का राज्य बड़ धूमधाम से यहां हुआ जिस के चिन्ह ... बड़े २ महलों के खंडरों में मिलते हैं यहां के मनुष्य पु... वालों से बिल्कुल नहीं मिलते जो उनके पड़ोसी हैं इसका ... नाम अंदलस है।

...ाल-जिस भांति स्पेन वालों ने अमेरिका का खोज किया, ...ांति इन्होंने भारतवर्ष का खोज किया और अफ़रीका का ... भी विजय किया एक समय सम्पूर्ण पूर्वी समुद्रों में इन ... पाल उड़ाये फिरते थे-यहां के मनुष्य बड़ी शीघ्र बोलने वाले ... ...यों के साथ यहां बड़ी कृपा की जाती है और दंड भी ... जाता है।

...यही देश असल रूस है एक समय में यहां ऐसा बलवान

राज्य था कि जिस का चारों खूंट में राज्य था परन्तु अब अवनति की दशा में है ईसायों के मत का बादशाह पोप इसी स्थान पर रहता है।

जर्मनी—इसका पुराना नाम एलीमान है यहां के मनुष्य बड़े वीर और विद्वान होते हैं सैनिक प्रबन्ध जैसा यहां अच्छा है कहीं नहीं इसमें बहुत से प्रदेश हैं यहां के मनुष्य आर्य्य वंश में हैं इस देश में संस्कृत की शिक्षा का बहुत प्रचार है गाने का यहां प्रत्येक मनुष्य को चाव है।

हालैंड—यहांके मनुष्य डच कहलाते हैं यह जहाजी व्योपारी हैं पूर्वी हिंद के टापूओं में बहुधा स्थानों में इनका राज्य है-देश कुछ नीची भूमि में है इस लिये निवासियों ने समुद्र में बंद बांधकर भी-तर का पानी बाहर निकाल दिया इस भांत बहुतसी नवीन भूमि उत्पन्न करली और समुद्र की बाढ़ का डर दूर कर दिया।

स्विटज़र लैंड—बहुत छोटा पहाड़ी देश है घड़ी बनानेके यहा बहुत प्रसिद्ध कार्य्यालय है-पूर्व [illegible] झीलों में घर बनाकर रहा करते थे यहां पर ए[illegible] है जो किसी की नौकर [illegible]

अफगानिस्तान, भारतवर्ष, मिश्र इसके अधिकार में था, अबएक छोटा राज्य समझिये, हिन्दूओं की कुछ जातें महाभारत के उपरान्त यहांसे जाकर वहां बसे उन्हों ने उस उजाड़ देशको बसाया, नदी, पहाड़ और नगरों के नाम रक्खे राज्यके प्रबन्धक नियम बहुतअच्छे बनाये इन्हींके वंशमें फिर अफलातून, अरस्तु-सुकरातसे फिलासफर और सिकन्दर से विजयी बादशाह हुए पुराने यूनानियों का मत व रीति व्यौहार बड़ाईके योग्य थे और यह अत्यन्त स्वाधीन चित्त के थे, (हमारी पुस्तक यूनानदेश में देखो)

दुनियांकीसैरकी आर२मुख्य बातें।

जो बातें पीछे ज्ञात हुई यह भी आपके आनंद प्राप्त के हेतु हम लिखते हैं॥

TRIBUNE LAHORE १मार्च सन् १८९७ई०में छपा कि सन्१८९० ई० में एम.डी पालि न जाई साहब ने अनामके पास पूर्वी हिंद के टापू में एक पूछवाले मनुष्यों की जाति देखी जो मूर्ख कहलाते हैंयह बंदर की भांति पेड़ पर चढ़जाते हैं गढ़ों में झोंपड़ा बनाकर रहते हैं धनुष बाण से अहेर करते, मृतक को जलाते और तांबे के आभूषण व माला पहिनते हैं॥

PIONEER १७अगस्तसन् १८९७ई०

---

* यूरोप में एक जाति कजड़ रहती है जो अपने को रूमानी कहते हैं, यह लोग चटाई बनाना, हाथ देखना, आदि व्यौपार करते हैं इनका रीति, व्यौहार आदि सबहिंदुओं के से हैं भाषा भी हिन्दी बोलते हैं हिन्दू देवताओं को पूजते हैं और अपने को नीची जाति का हिन्दूबतलाते हैं-बड़े भारी ईमानदारहोते हैं, ब्रह्मचारी और दृढ़ हैं मृतक को जलाते हैं और जिस वस्तु को मृतक पुरुष पसन्द करतेथे, उसको फिर कभीनहीं खाते-प्रत्येक देश में थोड़े बहुत पायेजाते हैं परन्तु टर्की और ईरानमें बहुत अधिकपाये हैं मिश्र में भी यहलोग बहुत हैं-यूरोपी लोग इनके संग अच्छा

ज़िला मगडलेना मेक्सिको देश में एक समाधि में ऐसे लेख लिखे हुए मिले हैं जो दो सहस्र वर्ष के पुराने हैं चीनी भाषा में हैं इस से सिद्ध हुआ कि चीनी लोग सहस्रों वर्ष पहिले से अमरिका में आया करते थे चीनियों की पुस्तक में लिखा है कि बादशाह ने १८ पार्टियां मेक्सिको देश में भेजी थीं छापा, बारूद आदि सब पहल से चीन में वर्तमान थे कोई वस्तु अबतक ऐसी प्रकाशित नहीं हुई जो चीन में पहिले से न थी ॥

REVIEW OF REVIEWS समाचार सितम्बर सन् १९१० में एक लेख फरांसीसी डाक्टर लीप्लोंजन का लिखा है जिन्हों ने यूकटान देश के मक्षमल व चचनइजा नगरों के खंडरों का खोज किया और मय जाति की पुस्तक तरयानू का उल्था किया वहां कृष्ण पूजा दाखील की कथा और नाग वंश का खोज लगाया उन्होंने उस में यह लिखा पाया कि अफ्रीका और अमरिका के मध्य एक देश था इस में ४० लाख निवासी थे आज ११ सहस्र वर्ष हुए तब एक दिन तूफान के आने से वह सदैव के लिये डूबगया-यही कथा मिश्रवालों ने सोलन हकीम से वर्णन की थी और अफलातून ने अपनी लेखमाला अटलांटिस इसी के ऊपर लिखी थी जो अबतक मिलती है विद्वानों ने मिलान किया तो यूनानी वर्णों (इबर, इवंजन)

तिब्बतके

स्कीमो

चीनी कैदी

ဘုရား ၊ သခင်ချစ်သား ၊ တော်တို့ ကြည့်လေ ။
သူ့အပေါင်းတို့ဘုန်းမှတ်မီးခြင်းသို့မရောက်အော
ညဉ်ထာဝရအသက်ရှင်ခြင်းကိုရစေခြင်းငှါဘု
ရား၊ သခင်သည်ပိမ္ဗွတပါးတည်းသောသား
တော်ကိုစွန့်တော်မူသည်တိုင်အောင်လောကီသ